हैन्स एण्डरसन की
श्रेष्ठ कहानियाँ

परियों की कहानी लोक-कथाओं की एक महत्त्वपूर्ण किस्म है। लोक-कथायें अनादिकाल से मनुष्य की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को उत्तराधिकार रूप में मिलती रही हैं। नये वातावरण और नई जमीन पर उनमें परिवर्तन और विकास होता रहा है। इस सांस्कृतिक सम्पदा की सुरक्षा प्रायः मौखिक आदान-प्रदान के रूप में ही होती रही है। साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के प्रेमी अनुसंधित्सु जनों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य होता है कि विश्व की समस्त लोक-कथाओं के अन्तस्तल में शैली-शिल्प, वर्णन, सौन्दर्य-विधान, कथा-अभिप्राय और कथानकों की एक अद्भुत समानता झलकती है। इस सादृश्य से जहाँ लोक-कथाओं का अध्येता आश्चर्य-चकित होता है वहीं इन कहानियों मे पायी जानेवाली विभिन्नताये देश-काल और संस्कृतियों के अन्तर को भी स्पष्ट कर देती हैं। आदिम युगीन मानव संस्कृति से आधुनिक सभ्यता तक के विकास-चिह्नों को भी हम यहाँ अच्छी तरह पहचान सकते हैं।

योरोपीय परी-कथाओं के संकलन का कार्य बहुत पहले आरंभ हो गया था। स्ट्रापारोला (Straparola) के संकलन Le Piacevoli Notti मे जो १५५० ई० में प्रस्तुत किया गया तथा सत्रहवीं शताब्दी में संगृहीत बसिले (Basile) के संकलन (N. M. Penzer : The Pentamerone of Basile) में इस प्रकार की गई कहानियाँ सम्मिलित हैं किन्तु इन्होंने इन कथाओं को इस प्रकार पुर्नलिखित कर दिया है कि इन्हें पहचानना भी कठिन हो जाता है। १८वी शताब्दी तक के दूसरे संकलनों में भी पुनर्लेखन का यही दोष विद्यमान है। कथानक के अलावा इन पुर्नलिखित कहानियों में ऐसा कुछ भी नही है जिसे लोक-कथाओं के अनुसंधायक शोध का विषय बना सकें। १८१२ ई० में ग्रिम-बन्धु ने संसार प्रसिद्ध लोक-कथा-संग्रह 'हाउसहोल्ड टेल्स' प्रकाशित कराया। यह पहला प्रयत्न था जिसमें लोक-कथाओं को उनके मूल रूप मे प्रस्तुत किया गया। उन्होने बड़ी जागरूकता के साथ कई देशों में बिखरी हुई जन-कथाओं को लोगों से मौखिक रूप मे सुन कर

ज्यों का त्यों उतारने का प्रयत्न किया। विशेषतः ऐसे देशों से जहाँ आज भी जन-कथाओं को कहने-सुनने की प्राचीन परिपाटी प्रचलित है। लोक कथाओं पर दूसरा महत्वपूर्ण कार्य हैन्स ऐण्डरसन ने किया।

डेनिस कवि हैन्स क्रिश्चियन ऐण्डरसन (१८०५–१८७५) ने लोक कथाओं को एक साहित्यिक महत्त्व प्रदान किया। हैन्स एक जूता बनानेवाले के पुत्र थे। और उनका बचपन बहुत सुख मे नही बीता। एक ही कमरे में उनके पूरे परिवार के लोग रहते थे। वे बचपन से ही अत्यन्त प्रतिभाशाली और कल्पनाप्रिय व्यक्ति थे। १८१६ ई० में उनके पिता की मृत्यु हुई तो वे बिल्कुल असहाय हो गए। उन्हे ओपेरा गीतकार बनने का चाव था, जिसके लिए वे १८१६ ई०में कोपेनहेगन पहुँचे। वहाँ लोगों ने उन्हें पागल समझा और उनका मजाक उड़ाया। क्रिस्ताफ वीसे और सिबोनी जैसे संगीतकारों ने उन्हे अपना दोस्त बनाया। उसी समय वे कवि फ्रेडरिक गुल्डवर्ग के सम्पर्क में आये जिनकी प्रेरणा से उन्हे रायल थियेटर में नृत्य के विद्यार्थी के रूप मे जगह दी गई। बाद मे उनके आलस्य और प्रमाद से कवि फ्रेडरिक उदासीन रहने लगे। थियेटर के संचालक जोनास कालिन ने उन्हे अपना मित्र बनाया और यह मित्रता जिन्दगी भर निभाते रहे। किंग फ्रेडरिक छठें ने बहुत से अपरिचित और असहाय विद्यार्थियों को शिक्षा दिलाने का प्रवन्ध किया था। हैन्स को भी एक प्रारंभिक पाठशाला मे भेजा गया। शाला जाने के पहले उन्होंने अपनी प्रथम पुस्तक 'दि गोस्ट ऐट पैलनाटोक्स ग्रेव' प्रकाशित कराई। हैन्स ने बहुत सी पुस्तकें लिखी। कविताओं के लिए भी उनकी कम ख्याति नही हुई, पर उनकी कीर्ति के मूल स्तभं तो लोक कथाओं के संग्रह ही हैं। १८४७ ई० में हैन्स ने इंगलैण्ड की यात्रा की वहाँ उन्हें बड़ा सम्मान मिला। यहाँ तक कि चार्ल्स डिकेन्स लौटते समय उन्हें "रामस्गेट पीर" तक पहुँचाने आए। उन्होंने १८२२–१८७२ के बीच लोक-कथाओं की कई पुस्तकें प्रकाशित कीं।

परियों की कथायें केवल मनोरंजन और कल्पना-प्रियता की तृप्ति के लिए ही महत्त्वपूर्ण नही हैं, बल्कि इनके भीतर विभिन्न देशों के मनुष्यों की सभ्यता और संस्कृति के बहुत से विस्मृत तत्त्व भी छिपे हुए है। इन कहानियों की समानतायें एक अद्भुत तथ्य की ओर संकेत करती है। योरोप और एशिया के एक बहुत बड़े भू-भाग में फैले हुए जन-समूह में प्रचलित इन कहानियों में इतना अद्भुत साम्य

किस बात की ओर सकेत करता है ? ग्रिम बन्धुओं का कहना है कि ये कथायें योरोपीय कबीलों की संयुक्त निधियाँ हैं, जिस प्रकार उन्होंने भारत-योरोपीय भाषाओं में बहुत-सी समानतायें खोज निकाली, उसी प्रकार इन कहानियों की पृष्ठ-भूमि का भी उन्होंने अध्ययन किया। वे इन्हे प्राचीन पौराणिक कथाओं की टूटी शृंखला मानते हैं। थेडोर बेनफी (१८५९) जैसे विद्वानों की तो धारणा है कि इन सभी कथाओं की जन्मभूमि भारत ही है। ग्रिम की इन कहानियों में भी बहुत-सी ऐसी है जो भारतीय परी-कथाओं से साम्य रखती है। नाम और वेश-भूषा को बदल दिया जाए तो इनमे कई कहानियाँ बिल्कुल भारतीय प्रतीत होने लगेंगी।

पता नहीं इन कथाओं में मनुष्य-चित्त के कितने रूपों का प्रतिफलन है। कभी वह अति मानवीय, दैवी चमत्कारो से भयातुर हो उठता है, कभी उनके प्रति कुतूहल और जिज्ञासा से ताकता रह जाता है। प्रकृति के अदृश्य व्यापार उसके जीवन में असंतुलन उत्पन्न कर देते हैं। उसका सामान्य जीवन, मासूम प्रेम, दुर्बल व्यक्तित्व, दीन परिवार इनके धक्कों से चूर-चूर हो जाता है। पर परी-कथाओं में इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य निरन्तर आगे बढ़ता गया है, वह सभी प्रकार की बाधाओं को तोड़ कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुआ है। जीत अन्याय और अनाचार की नहीं, सत्य और सदाचार की ही हुई है। जब समाज के क्रूर बन्धन मनुष्य को मनुष्य की दृष्टि में ही कदर्थ और अस्पृश्य बना देते हैं तो प्रकृति उन्हें सहारा देती है। वह उन्हें नये उत्साह और नई प्रेरणा से पुनः संघर्ष-क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित करती है। हम देखते हैं कि इन कहानियों में अत्यन्त मनोरंजन-पूर्ण ढंग से जीवन के महत् अनुभव बड़ी सफाई से उपस्थित कर दिये गए है। इन कहानियों में सृष्टि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श बन कर आई है। पशु-पक्षी, वृक्ष-लतादि सत्य के साक्षी हैं। मनुष्य लोभ-मोह का शिकार हो कर सत्य छिपा सकता है, पर हमारे ये मूक सहचर सत्य की साक्षी देने में कभी चुप नहीं रहते। मनुष्य इन बेबसों की हत्या कर देता है, पर इनका मृत शरीर सत्य की साक्षी में खड़ा रहता है। इन कहानियों मे भौतिक जगत् मे बुद्धि, विवेक, चतुराई, वाक्पाटव, व्यावहारिकता आदि का महत्त्व स्वीकार किया गया है जबकि आध्यात्मिक स्तर पर करुणा, ममता, सत्य, प्रेम, सदाचार आदि की स्तुति की गई हे। ये कहानियाँ इस तरह मीठी दवाओं की तरह हैं जो हमारे जीवन को नया आरोग्य प्रदान करती है।

अनुवादक डॉ० विष्णुस्वरूप बधाई के पात्र है जिन्होने इन संसार प्रसिद्ध कहानियो को हिन्दी में अनूदित करके बाल-साहित्य का गौरव बढ़ाया है। अनुवाद की भाषा अत्यन्त सहज, सरल और प्रवाहपूर्ण है। इन कथाओं में जगह-जगह जन-कविता के टुकड़े भी आ जाते है, इनका अनुवाद कठिन होता है, पर डा० विष्णुस्वरूप ने ऐसे स्थलों को भी अच्छी तरह निभाया है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस संग्रह का हिन्दी में आदर होगा।

हिन्दी विभाग
हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
२५ नवम्बर, १९५९

(डा०) शिवप्रसाद सिंह

पृ० सं०
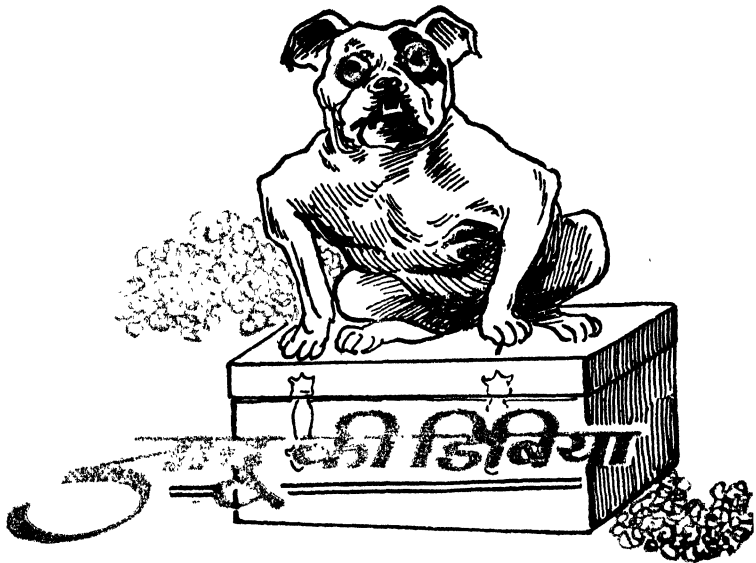
एक बार की बात है कि एक सिपाही सड़क पर मार्च करता चला जा रहा था। उसके कन्धे पर थैला और कमर में तलवार लटक रही थी। बहुत दूर की लड़ाई से लौट कर वह अपने घर जा रहा था। वह लम्बे-लम्बे डग धरता चला जा रहा था कि उसे एक जादूगरनी मिली जो बहुत ही बदसूरत और डरावनी थी।

सिपाही को देखते ही जादूगरनी बोल उठी, 'रुको भाई, यह तलवार तो तुम्हारी बहुत अच्छी है, थैला भी कैसा बड़ा है; जाओ, मैं कहती हूँ कि इस थैले में भरने के लिए तुम्हें बहुत-सा धन मिलेगा।'

सिपाही ने जादूगरनी को धन्यवाद दिया। जादूगरनी ने सड़क के किनारे के पेड़ की ओर इशारा करके कहा, 'उस

पुराने पेड़ को देखो । भीतर से वह खोखला है । तुम इसके ऊपर चढ़ जाओ । एक गहरा छेद दिखाई देगा । उसमें से पेड़ के तने के भीतर पहुँच जाओगे ! मैं तुम्हें एक रस्सी से बाँध दूँगी, ताकि जब तुम भीतर से पुकारो तो मैं तुम्हें खींच लूँ ।

सिपाही ने पूछा, 'पेड़ के भीतर जाकर मैं करूँगा क्या ?'

जादूगरनी बोली, 'वाह ! धन मिलने की बात मैंने तुमसे कही न, वह तुम्हें वहाँ मिल जायेगा । सुनो, सीधे जमीन में पहुँच जाने पर तुम्हें एक बड़ा-सा कमरा मिलेगा,

उसमें सैकड़ों दीपक जल रहे होंगे । उस कमरे में तुम्हें तीन दरवाजे मिलेंगे । वहीं उनकी चाभियाँ लटकी होंगी, जिनके सहारे तुम उन्हें खोल सकोगे । पहला दरवाजा खोलने पर तुम्हें एक कमरे के बीचोबीच एक बड़ा-सा सन्दूक रखा मिलेगा । उस सन्दूक पर एक बड़ा भारी कुत्ता बैठा होगा, उसकी आँखें प्यालों जैसी बड़ी-बड़ी होंगी । तुम उससे डरना मत । मैं तुम्हें अपना यह नीली धारी का लबादा दे दूँगी । इसे तुम वहाँ जमीन पर बिछा देना । कुत्ते को उसी पर बैठा देना । फिर सन्दूक खोल कर जितने चाहो उतने पैसे उसमें से निकाल लेना । चाँदी के सिक्कों के लिए तुम्हें दूसरे कमरे में जाना होगा । वहाँ जो कुत्ता मिलेगा उसकी आँखें चक्की के पाटों जैसी बड़ी-बड़ी होंगी । इस बात की परवाह तुम मत करना । कुत्ते को मेरे लबादे पर बैठा कर चाहे जितने चाँदी के सिक्के ले लेना । सोने के सिक्कों के लिए तुम्हें तीसरे कमरे में जाना होगा । वहाँ के कुत्ते की आँखें गुम्बरों जैसी बड़ी-बड़ी होगी । वह होगा तो बड़ा डरावना, लेकिन तुम उससे मत डरना । उसे भी मेरे लबादे पर बैठा दोगे तो वह तुम्हें कष्ट न देगा । फिर तुम चाहे जितने सोने के सिक्के ले लेना ।'

सिपाही ने कहा, 'अच्छा, बुढ़िया जादूगरनी ! यह सब तो ठीक है, लेकिन मुझे बदले में तुम्हारे लिए क्या करना होगा?'

जादूगरनी ने कहा, 'कुछ नहीं, मेरी दादी अपनी जादू की डिबिया वहाँ भूल आई थी। मेरे लिये तुम वही ला देना।'

सिपाही बोला, 'तो लो, मैं जाता हूँ, रस्सी से बाँध दो मुझे।'

जादूगरनी ने उसे रस्सी से बाँध कर अपनी नीली धारी का लबादा दे दिया। सिपाही पेड़ पर चढ़ गया और तने में से होकर नीचे के बड़े कमरे में पहुँच गया। वहाँ, जैसा कि जादूगरनी ने बताया था, सैकड़ों दीपक जल रहे थे।

पहला दरवाजा खोलते ही उसे वह कुत्ता दिखाई दिया जिसकी आँखें प्यालों की तरह बड़ी-बड़ी थीं, और जो उस की ओर घूर रहा था।

'बड़े अच्छे हो तुम दोस्त', कह कर सिपाही ने कुत्ते को जादूगरनी के लबादे पर बैठा दिया और सन्दूक में से पैसे निकाल कर अपनी जेबों में भर लिये। फिर उसने सन्दूक का ताला लगा कर कुत्ते को उसी पर बैठा दिया।

इसके बाद वह दूसरे कमरे में गया। वहाँ उसे वह कुत्ता दिखाई दिया जिसकी आँखें चक्की के पाटों की तरह बड़ी-बड़ी थीं। सिपाही उससे बोला, 'इस तरह घूर कर मेरी ओर मत देखो, नहीं तो तुम्हारी आँखें थक जायेंगी।' फिर उसे जादूगरनी के लबादे पर बैठा कर सिपाही ने सन्दूक

खोला । चाँदी के सिक्कों को देखते ही उसने अपने पास के ताँबे के सिक्के फेंक दिये, और जेबों में तथा थैले में रुपहले सिक्के भर लिये ।

तब वह तीसरे कमरे में पहुँचा । वहाँ जो कुत्ता था वह सचमुच बड़ा डरावना था । उसकी आँखें गुम्बदों की तरह बड़ी-बड़ी तो थीं ही, वे पहियों की तरह घूम भी रही थीं । सिपाही ने वैसा जानवर पहले कभी नहीं देखा था । एक बार उसने उसकी ओर गौर से देखा, फिर उसे जादूगरनी

के लबादे पर बैठा दिया। इसके बाद उसने सन्दूक खोल डाला। उसके भीतर सोने के सिक्कों को देख कर उसने सोचा कि इनसे तो मैं दुनिया की हर बढ़िया चीज खरीद सकता हूँ। उसने चाँदी के सिक्के वहीं फेंक दिये और सोने के सिक्कों से अपनी जेबें ही नहीं, टोपी, थैला और जूते तक भर लिये, यहाँ तक कि बोझ के मारे उसे चलना भी दूभर हो गया। अन्त को उसने यह सोच कर सन्तोष किया कि अब मेरे पास काफी धन हो गया है। कुत्ते को फिर सन्दूक के ऊपर बैठा कर उसने दरवाजा बन्द कर दिया, और पेड़ के भीतर से चिल्लाया, 'ओ जादूगरनी! मुझे ऊपर खींच लो।'

जादूगरनी ने पूछा, 'जादू की डिबिया ले आये हो?'

सिपाही को थोड़ी ग्लानि हुई। उसने कहा, 'अरे! मैं तो भूल गया।'

वह लौट कर गया और जादू की डिबिया ले आया।

जादूगरनी ने उसे पेड़ में से ऊपर खींच लिया। फिर वह पेड़ पर से उतर कर सड़क पर आ गया। उसकी जेबें, थैला, जूते और टोपी तक में सोने के सिक्के भरे थे।

सिपाही ने जादूगरनी से पूछा, 'इस जादू की डिबिया का क्या करोगी?'

जादूगरनी ने जवाब दिया, 'इससे तुम्हें क्या मतलब? धन मिल गया तुम्हें, अब डिबिया मुझे दे दो।'

'सिपाही बोल उठा, 'बेकार बात मत करो, मैं पूछता हूँ कि इस तरह की डिबिया का तुम क्या करोगी ?' फिर क्या था, उन दोनों में जादू की डिबिया के लिए लड़ाई छिड़ गई। सिपाही ने तलवार खींच ली और जादूगरनी का सिर धड़ से अलग कर दिया। इसके बाद उसने सारा धन नीली धारी के लबादे में बाँध लिया और जादू की डिबिया को जेब में रख लिया। धन से भरे लबादे को झोले की तरह कंधे पर लटका कर वह शहर की ओर चल दिया।

जिस शहर में वह पहुँचा, वह बड़ा शानदार था। सबसे बढ़िया सराय के सबसे अच्छे कमरे में वह ठहर गया, और उसने अच्छे से अच्छा खाना मँगाया। अब वह सचमुच धनी हो गया था। उसके जूते साफ करनेवाले नौकर ने भी सोचा कि ऐसे रईस आदमी के पास इन पुराने जूतों में सचमुच ही कोई बड़ी खूबी होगी। अगले दिन उसने बढ़िया कपड़े भी खरीद लिये और शहर में जो भी उम्दा से उम्दा जूते मिल सकते थे, उन्हें ले आया। नौकरों की बात-चीत को वह ध्यान से सुन रहा था। वे लोग शहर में होनेवाली तमाम बातों का जिक्र कर रहे थे, जिनमें सुन्दर राजकुमारी की बात भी थी।

सिपाही ने पूछा, 'उस राजकुमारी को कैसे देखा जा सकता है ?' नौकरों ने बताया, 'देखा तो उसे जा ही नहीं

सकता । वह लोहे के एक बड़े से मजबूत किले में रहती है, जो चारों तरफ से ऊँची-ऊँची दीवारों से घिरा हुआ है । सिर्फ राजा ही उसमें आ जा सकता है । बात यह है कि किसी ने भविष्यवाणी की है कि राजकुमारी का विवाह एक साधारण सिपाही के साथ होगा । राजा को इस बात का ख्याल तक पसन्द नहीं है ।'

सिपाही ने सोचा, राजकुमारी को किस तरह देखा जाये । कोई रास्ता ही नजर न आता था । वह बहुत इधर-उधर घूमा-फिरा, बहुत से मित्र बनाये और उन सब पर

बहुत धन व्यय किया। अन्त में उसके पास सिर्फ दो सिक्के बच रहे। उसे सराय के बढ़िया कमरे छोड़ देने पड़े। अब वह शहर के गरीब लोगों के मुहल्ले में एक कच्चे मकान का हिस्सा लेकर रहने लगा। वहाँ उसे सब काम अपने हाथों करना पड़ता, दोस्तों ने मुँह मोड़ लिया।

एक रात को उसके पास जलाने को मोमबत्ती तक न थी। उसे ध्यान आया कि जादू की डिबिया में मोमबत्ती का एक टुकड़ा है। मोमबत्ती जलाने के लिए डिबिया में चकमक पत्थर भी रखा था। जैसे ही उसने मोमबत्ती जलाने के लिए चकमक पत्थर को रगड़ा, उसके सामने वह कुत्ता दरवाजा खोल कर आ खड़ा हुआ जिसकी आँखें प्यालों की तरह बड़ी-बड़ी थीं, और जो पेड़ के नीचे जाने पर उसे दिखाई दिया था।

कुत्ते ने पूछा, 'क्या हुक्म है, मेरे मालिक ?'

सिपाही ने सोचा, यह जादू की डिबिया तो बहुत अच्छी है, इसे साथ रखने से तो मैं जो भी इच्छा करूँगा, वही पूरी हो जाएगी ।' फिर वह कुत्ते से बोला, 'मेरे लिए कुछ धन ले आओ ।' कुत्ता गया और पलक मारते ही सोने के सिक्कों से भरी थैली को मुँह में दबाये लौट आया ।

सिपाही को उस जगह की डिबिया का असर मालूम हो गया । जब वह एक बार चकमक को रगड़ता तो ताँबे के सिक्कों की रखवाली करनेवाला कुत्ता हाजिर हो जाता, दो बार रगड़ने पर चाँदी के सिक्कों की रखवाली करनेवाला कुत्ता आ जाता और तीन बार रगड़ने पर सोने के सिक्कों की रखवाली करने वाला कुत्ता आ खड़ा होता ।

सिपाही फिर सराय के बढ़िया कमरों में चला गया, फिर उसने नये कपड़े पहनने शुरू कर दिये, और फिर दोस्तों के साथ उसकी चहल-पहल शुरू हो गई । तो भी उसे यह ध्यान बना रहा कि राजकुमारी को, जिसके बारे में सब लोग कहते हैं कि बहुत ही सुन्दर है, कैसे देखा जाये !

एकबार उसने जादू की डिबिया लेकर चकमक को रगड़ा । पलक मारते ही प्यालों की-सी आँखोंवाला कुत्ता आ खड़ा हुआ । सिपाही ने उससे कहा–'रात तो जरूर ज्यादा हो गई है, तो भी मैं राजकुमारी को क्षण भर के लिए

देखना चाहता हूँ।' कुत्ता चला गया। जरा देर बाद ही वह लौट आया, सोई हुई राजकुमारी उसकी पीठ पर थी। राजकुमारी इतनी सुन्दर और आकर्षक थी कि देखते ही सिपाही को उससे प्रेम हो गया। कुत्ता उसे लौटा कर ले ही जानेवाला था कि सिपाही ने राजकुमारी को आहिस्ता से चूम लिया।

सुबह को राजकुमारी ने राजा और रानी को बताया कि रात स्वप्न में उसने अपने आप को एक कुत्ते की पीठ पर देखा। सिपाही के पास जाने की बात भी उसने बताई।

रानी को बड़ा क्रोध आया। अगली रात को उसने एक बाँदी को यह देखने के लिए तैनात कर दिया कि वह सिर्फ स्वप्न ही होता है या कुछ और।

अगली रात को भी सिपाही ने राजकुमारी को देखने की इच्छा की, और कुत्ता पहली बार की तरह ही उसे ले आया। बाँदी उसके पीछे-पीछे गई। जिस दरवाजे में कुत्ता घुसा उस पर बाँदी एक निशान बना कर चली आई।

कुत्ता भी कम चालाक न था। मकान के दरवाजे पर निशान देख कर उसने शहर के सभी दरवाजों पर उस तरह के निशान बना दिये। सुबह को बाँदी सही दरवाजे का पता न लगा सकी, क्योंकि सभी दरवाजों पर एक-से निशान थे।

बाँदी ने लौट कर रानी को अचरज की यह बात बताई। रानी बड़ी चतुर थी। उसने कैंची ले कर, सुनहरी धागा रखने की अपनी रेशमी झोली का एक कोना काट लिया। उसमें आटा भर कर रानी ने उसे राजकुमारी की पीठ से बाँध दिया, ताकि राजकुमारी जाये तो थोड़ा-थोड़ा आटा बिखरता जाए।

रात को कुत्ता फिर राजकुमारी को सिपाही के पास ले गया। सिपाही का राजकुमारी से गहरा प्रेम हो गया

था। वह सोचता था, 'काश मैं राजकुमार होता और राजकुमारी मुझे मिल जाती।' 'इस बार किले से लेकर सिपाही के दरवाजे तक आटे की जो पतली धार बिखरती आई थी, कुत्ते का ध्यान उस पर नहीं गया। सुबह को राजा और रानी आटे की लकीर के सहारे सिपाही के दरवाजे तक पहुँच गये और उन्होंने सिपाही को जेल भिजवा दिया। अगले दिन उसे फाँसी का हुक्म दे दिया गया। सिपाही की जादू की डिबिया कमरे में ही छूट गई थी।

अगले दिन सुबह होते ही, सिपाही ने जेल की जाली में से देखा कि शहर भर के लोग उसे फाँसी पर चढ़ता देखने को दौड़े आ रहे हैं, नगाड़े बज रहे हैं और सिपाही लोग तैनात किये जा रहे हैं।

एक चमार का लड़का इतनी तेजी से भागा जा रहा था कि उसका चप्पल उड़ कर जेल के अहाते की दीवार से आ लगा। सिपाही ने उसे पुकार कर कहा, 'इतनी जल्दी क्या है भाई, मेरे पहुँचने से पहले फाँसी थोड़े ही शुरू हुई जा रही है। तुम दौड़ कर जाओ और जहाँ मैं रहता था, वहाँ से मेरी जादू की डिबिया ला दो। इसके बदले मैं तुम्हें सोने का एक सिक्का दूँगा। जाओ, जल्दी करो।'

चमार का लड़का दौड़ कर जादू की डिबिया ले आया। उसी समय सिपाही को फाँसी के लिए ले जाया गया। फाँसी

के तख्ते पर पैर रखते ही सिपाही ने प्रार्थना की कि मेरी एक छोटी-सी बात मान ली जाए। सभी वहाँ जमा थे, राजा, रानी, न्यायकर्ता और दरबारी लोग भी थे। राजा ने उसकी बात स्वीकार कर ली। सिपाही ने आखिरी बार पाइप जला कर पीने की आज्ञा चाही। आज्ञा मिल जाने पर उसने जादू की डिबिया के चकमक को एक, दो और तीन बार रगड़ा। उसी समय तीनों कुत्ते वहाँ आ खड़े हुए।

सिपाही ने कुत्तों से कहा, 'फाँसी से मुझे बचाओ!' कुत्ते न्यायकर्ताओं और दरबारियों पर झपट पड़े और उन्हें हवा में उछाल फेंका। राजा और रानी की ओर भी वे झपटे, लेकिन उन्होंने जोर से कहा, 'अरे भाई सिपाही! अपने कुत्तों पर काबू करो। तुम राजकुमार बना दिये जाओगे और राजकुमारी से तुम्हारी शादी भी हो जायेगी।'

तमाम आदमी कह उठे, 'वाह, वाह!' मानो सिपाही को फाँसी पर लटकता देख कर भी उन्हें उतनी खुशी न हुई होती। सिपाही ने फिर चकमक रगड़ा और तीनों कुत्ते गायब हो गये। सिपाही से शादी कर देने के लिए राजकुमारी को लोहे के किले में से ले आया गया।

सुनसान किले में से बाहर आ कर राजकुमारी बहुत खुश हुई। एक हफ्ते तक शाही विवाह की खुशियाँ मनाई जाती रहीं। तीनों कुत्ते दूर बैठ कर राजमहल के कुत्तों पर

काबू किये रहे। कुछ दिनों बाद सिपाही राजकुमारी को लेकर अपने देश चला गया। ***

ग्यारह हंस

दूर देश में एक राजा था। उसके ग्यारह लड़के और एक लड़की थी। लड़की का नाम लीला था, वह बहुत सुन्दर थी। ग्यारहों राजकुमार जब स्कूल जाते, तो उनमें से हर एक की कमर में तलवार लटकी रहती और सीने पर सितारा लगा रहता। सोने की बनी मेजों पर वे हीरे की बनी कलमों से लिखते। बिना किताबों के भी वे पढ़ लेते, राजकुमार जो ठहरे। उनकी बहिन लीला के पास बैठने के लिए शीशे का एक स्टूल था। उसकी तस्वीरों की किताब आधे राज्य के मूल्य के बराबर थी। इस तरह वे बच्चे सचमुच सौभाग्यशाली थे। लेकिन अफसोस ! वे हमेशा ऐसे न रह सके।

राजा ने दूसरा विवाह कर लिया। नई रानी का बर्ताव इन बच्चों के साथ निर्दयता का था। विवाह के बाद उत्सव के पहले ही दिन से उसका ऐसा बर्ताव शुरू हो गया। उत्सव

के भोज में इन बच्चों को मिठाइयाँ और पूरियाँ नहीं दी गयीं। रानी ने उन्हें थाली भर रेत देकर बहका दिया कि यही बहुत अच्छी खाने की चीज है।

शादी के हफ्ते भर बाद ही रानी ने बेचारी लीला को देहात के किसानों के सुपुर्द करके कहा कि अब तुम्हीं लोग इसका पालन-पोषण करो। राजकुमारों के बारे में भी वह राजा से ऐसी मनगढ़न्त शिकायतें करने लगी कि राजा का मन उनकी ओर से फिर गया। दुष्ट रानी जैसा चाहती थी, वैसा तो न कर सकी; तो भी उसने राजकुमारों से कहा, 'तुम लोग चुपचाप पक्षी बन कर यहाँ से भाग जाओ।'

राजकुमार उसी क्षण ग्यारह सफेद हंस बन गये और विचित्र प्रकार का स्वर करते हुए महल के बगीचे से होकर जंगल को उड़ गये।

सुबह तड़के ही, वे किसान की उस झोपड़ी पर पहुँचे, जहाँ बेचारी लीला सो रही थी। अपनी चमकीली गर्दनों को फैला कर और परों को फड़फड़ा कर वे झोपड़ी की छाजन के चक्कर काटते रहे। लेकिन न उन्हें किसी ने देखा और न उनकी आवाज सुनी। इसलिए वे आकाश में ऊपर उड़ कर एक जंगल में पहुँच गये। वह जंगल सीधा समुद्र के किनारे तक फैला हुआ था। समुद्र को भी पार करके वे खुली दुनिया में विचरण करने लगे।

किसान की झोपड़ी में पड़ी बेचारी लीला के पास खाने के लिए सिर्फ हरी-हरी पत्तियाँ थीं और कोई खिलौना तक न था। किसी पत्ती में छेद करके वह जब उसमें से सूरज की ओर देखती तो उसे लगता मानो अपने भाइयों की आँखें देख रही हो, और जब सूरज की किरणों की गरमाहट उसे अपने गालों पर मालूम होती, तो उसे लगता कि उसके भाई उसे चूम कर प्यार कर रहे हों।

लीला के लिए सभी दिन एक से नीरस थे। झोपड़ी के सामने के गुलाब के पौधे जब हवा में झूम उठते तो लीला उनसे धीरे से कहती थी, 'तुमसे अधिक सुन्दर कौन होगा!' लेकिन गुलाब के फूल मानो सिर हिला कर उत्तर देते—'लीला!' जब किसान की स्त्री बैठ कर धर्म-पुस्तक का पाठ करती होती तो, हवा उसके पन्नों को फड़फड़ा कर पूछती—'तुमसे अधिक पवित्र कौन है?' पुस्तक उत्तर देती, 'लीला!' गुलाब के फूलों का और धर्म-पुस्तक का कहना सचमुच सही था।

जब लीला बढ़ कर पन्द्रह साल की हो गई, तो उसे महल में वापस बुला लिया गया। लेकिन उसकी अपार सुन्दरता को देख कर रानी उससे और भी घृणा करने लगी। चाहती तो वह यही थी कि उसके भाइयों की तरह लीला को भी पक्षी बना दे, लेकिन उसकी हिम्मत न

पड़ीं, क्योंकि राजा अब अपनी इकलौती लड़की को देखना चाहता था ।

अगले दिन रानी जब स्नानगृह में गई, तो उसने तीन मेंढकों को चूम कर उनमें से एक से कहा, 'लीला के सिर पर बैठ कर उसे भी अपनी तरह सुस्त और निकम्मी बना दो ।' दूसरे से वह बोली, 'तुम उसके माथे पर बैठ कर, उसे अपनी तरह कुरूप बना दो, ताकि राजा उसे पहचान भी न सके ।' तीसरे से उसने कहा, 'तुम लीला के कन्धे पर जा बैठो, और उसके मन को इतना पापी बना दो कि वह खुद बेचैन हो उठे ।' इसके बाद उसने मेंढकों को साफ पानी में डाल दिया ।

पानी एकदम मैला हो गया । तब उसने लीला को बुलवाया, और उससे कहा कि कपड़े उतार कर नहा लो । लीला जैसे ही पानी में गई, एक मेंढक उछल कर उसके बालों पर जा बैठा, दूसरा उसके माथे पर और तीसरा उसके कन्धे पर । लीला का ध्यान उनकी ओर नहीं गया । लेकिन जब वह पानी में से निकली तो देखा कि पानी पर तीन पोस्ते तैर रहे हैं ।

वे मेंढक असल में गुलाब के फूल थे । एक जादूगरनी ने चूम कर उन्हें जहरीला बना दिया था । तो भी लीला के सिर और छाती पर बैठ कर वे अपना असर न कर सके, क्योंकि उतनी पवित्र आत्मा पर जादू का बुरा प्रभाव नहीं होता । रानी ने जब यह देखा, तो उसने लीला के शरीर पर किसी ऐसे फल का रस मल दिया, जिससे उसका शरीर काला पड़ गया । लीला के बालों में भी उसने एक ऐसा लेप लगा दिया, जिससे वे चिपचिपे और उलझे हुए हो गये । अब बेचारी लीला के पहले के रूप को कोई पहचान भी न सकता था ।

राजा जब लीला को देखने आया तो कह उठा, 'यह नहीं हो सकती मेरी बेटी !'

अपने ग्यारहों भाइयों को महल में न देख कर लीला रोने लगी, और वहाँ से चुपके से निकल भागी । दिन भर

खेत और मैदानों में घूम कर वह घने जंगल में पहुँच गई। उसका मन बड़ा दुःखी था। वह समझ नहीं पा रही थी कि कहाँ जाय। अपने भाइयों को देखने की उसकी प्रबल इच्छा थी। उसने उन्हें खोज निकालने का पक्का इरादा कर लिया।

वह जंगल में ज्यादा दूर पहुँच भी न पाई थी कि रात घिर आई, अँधेरे में वह मार्ग भूल गई। इसलिए एक जगह मुलायम जमीन पर, बड़े से पेड़ से पीठ टिका कर वह पड़ रही।

जंगल शान्त था। हवा शीतल और मन्द थी। चारों ओर हरी-हरी घास में अनगिनत जुगनू टिमटिमा रहे थे। लीला ने अपने सिर के ऊपर की डाल को छुआ, तो सितारों की तरह बहुत से जुगनू उसके ऊपर आ गिरे। रात भर उसे अपने भाइयों का ही सपना आता रहा। सपने में उसे लगा कि वे सब बच्चे बने हुए साथ-साथ खेल रहे हैं, हीरों की बनी कलमों से सोने की बनी मेजों पर लिख रहे हैं, और तस्वीर की उस किताब की ओर देख रहे हैं जो आधे राज्य के मूल्य के बराबर है। लेकिन अब वे पहले की तरह मेज पर चील-पकौड़े नहीं बना रहे हैं; बल्कि अपनी यात्राओं और साहसिक कार्यों के बारे में लिख रहे हैं। तस्वीरों की किताब की हर चीज भी अब जीवित हो उठी है। उसके पृष्ठों पर

से उठ कर आदमी—लीला और उसके भाइयों से बातचीत कर रहे हैं और चिड़ियाँ सफों पर ही बैठी गा रही हैं। जब वह सफा उलटती है तो हर कोई फिर अपनी-अपनी जगह जा बैठता है।

लीला के जागने से पहले ही धूप चढ़ आई थी। घनी पत्तियों के कारण वह देख न सकी, लेकिन जब पेड़ों के ऊपर धूप छा गई तो ऐसा लगा मानो सुनहरी ओढ़नी फहरा रही हो। हवा में सुगन्ध थी और चिड़ियाँ लीला के कन्धों पर फुर्र-फुर्र कर रही थीं। कई झरनों के निर्मल जल की कलकल सुनाई दे रही थी। जहाँ सब झरने गिर रहे थे, वहाँ का पानी इतना साफ था कि उसके नीचे पड़ी छोटी सी कंकड़ी भी साफ दिखाई देती थी।

घनी झाड़ियों के बीच हिरनों के आने-जाने से एक पगडण्डी बन गई थी। उसी पर से होकर लीला पानी की ओर बढ़ी। पानी चमचमा रहा था। पेड़ों की डालियों और पत्तियों की परछाईं जल में ऐसी जान पड़ती थी, मानो उनका चित्र खींचा गया हो।

लीला ने जब अपने मुँह की परछाईं पानी में देखी तो उसे धक्का-सा लगा। वह बहुत ही भद्दी और कुरूप जान पड़ रही थी। लेकिन जब उसने हाथों को पानी में डुबा कर अपना मुँह धोया तो उसका रूप फिर चमक उठा। कपड़े

उतार कर वह पानी में पैठ गई। अब तो दुनिया में उसकी सुन्दरता का मुकाबला करनेवाली कोई राजकुमारी न थी।

जल में से निकल कर उसने कपड़े पहने, और अपने लम्बे बालों का जूड़ा बाँधा। जगमगाते झरने के पानी को चुल्लुओं में लेकर उसने अपनी प्यास बुझाई, और जंगल में आगे बढ़ गई। उसे फिर अपने भाइयों की याद हो आई। उसे विश्वास हो आया कि ईश्वर उसकी सहायता अवश्य करेगा।

सचमुच ईश्वर की कृपा ही थी कि वहाँ जंगल में भूखों के लिए सेबों से लदे पेड़ खड़े थे; ऐसे ही एक पेड़ के नीचे ईश्वर ने उसे ले जा कर खड़ा किया। उस पेड़ की छाया में भोजन करके वह जंगल के धुंधलके में आगे बढ़ गई।

जंगल में और आगे जाने पर सुनसान निर्जन आया। पक्षी तक वहाँ न थे। जमीन पर पड़ी पीली पत्तियाँ उसके चलने से खड़खड़ा रही थीं। घने पेड़ों के कारण चारों ओर अँधेरा था। उदास होकर वह वहीं पड़ कर सो रही।

सोते-सोते उसे लगा कि ऊपर की डालियों में से ईश्वर के भेजे देवदूत उसके पास उतर आये हैं। सुबह सो कर उठने पर उसे निश्चय न हो सका कि रात में वह केवल सपना था या सचमुच देवदूत रक्षा करने आ पहुँचे थे।

आगे बढ़ने पर उसे एक बुढ़िया दिखाई दी, जो एक टोकरी में बेर लिये जा रही थी। बुढ़िया ने थोड़े से बेर लीला को दिये। लीला ने पूछा कि उसने जंगल में कहीं ग्यारह राजकुमारों को तो नहीं देखा है।

बुढ़िया ने कहा, 'राजकुमार तो नहीं देखे। हाँ, कल ग्यारह हंस मुझे दिखाई दिये थे, उनमें से हर एक के सिर पर सोने का मुकुट था। पास ही एक नदी है, वे उसमें तैर रहे थे।

बुढ़िया लीला को एक चट्टान पर ले गई। चट्टान के नीचे ही नदी बह रही थी। दोनों किनारों के पेड़ों की शाखें

आपस में मिल कर नदी पर छाया किये थीं। जहाँ शाखें नहीं मिल सकीं थीं, वहाँ मिट्टी में से निकल कर पेड़ों की जड़ें नदी पर छा गई थीं।

बुढ़िया से विदा लेकर लीला नीचे उतर कर नदी के किनारे-किनारे चलने लगी, यहाँ तक कि वह उस जगह पहुँच गई जहाँ नदी समुद्र में मिलती थी। लीला की आँखों के आगे जगमगाता हुआ समुद्र फैला था। लेकिन वहाँ कोई नाव न थी। वह आगे कैसे बढ़े?

किनारे पर अनगिनत पत्थर के टुकड़े थे, जो कि लहरों के टकराते रहने से गोल और चिकने हो गये थे। कड़े से कड़े पत्थर भी सुडौल बन गये थे, हालाँकि जिस समुद्र ने उन्हें सुडौल बनाया था वह लीला के सुन्दर हाथों से भी अधिक कोमल था।

लीला ने सोचा, बराबर उमड़ते रहने से ही यह समुद्र इन कठोर पत्थरों को छील-तराश कर सुन्दर बना देता है। फिर वह बोल उठी, 'ओ सुन्दर लहरो! तुमसे मैंने पाठ सीख लिया। मैं भी बराबर कोशिश करती रहूँगी और निश्चय है कि एक न एक दिन मैं अपने भाइयों के पास पहुँच जाऊँगी।'

तभी उसने देखा कि समुद्र के पास की गीली धरती पर हंसों के ग्यारह बड़े-बड़े पंख पड़े हैं, उन पर पानी की बूँदें हैं। उसे यह पता न चल सका कि ये बूँदें आँसुओं की हैं या

ओस की। उसने उन परों को बटोर लिया। समुद्र के किनारे का अकेलापन उसे अखरा नहीं, क्योंकि समुद्र बराबर रूप बदल रहा था।

समुद्र के ऊपर से काले बादल गुजरते तो मानो समुद्र कहता, 'देखो मैं भी काला हो सकता हूँ। हवा के झकोरों से लहरों पर फुहार उठती। धीमी हवा और लाल-लाल बादलों से समुद्र गुलाबी हो उठता। समुद्र चाहे जितना भी शान्त हो, जल की सतह के नीचे एक ऐसी हल्की ध्वनि बराबर होती रहती मानो कोई सोया हुआ बालक साँसें ले रहा हो।

सूर्यास्त के समय लीला को ग्यारह सफेद हंस दिखाई दिये। उनमें से हरएक के सिर पर सुनहरा ताज था। समुद्र पर से धरती की ओर वे पाँत बाँध कर उड़ रहे थे, जान पड़ता था मानो रुपहला फीता लहरा रहा हो। लीला चट्टान के ऊपर की एक झाड़ी की ओट में हो गई। हंस उस के पास ही उतर आये। सूरज डूब जाने पर हंस गायब हो गये, उनकी जगह ग्यारह सुन्दर राजकुमार प्रकट हुए। ये लीला के भाई ही थे, जिन्हें वह अब तक खोजती रही थी।

लीला खुशी से चीख उठी। हालाँकि अब वे राजकुमार बड़ी अवस्था के हो गये थे, और इससे उनका रूप-रंग भी कुछ बदला-सा जान पड़ता था, तो भी लीला ने जान लिया

कि ये मेरे भाई ही हैं। वह उनके नाम पुकारती हुई उनकी ओर दौड़ पड़ी। राजकुमारों को भी अपनी बहिन से मिल कर बड़ी खुशी हुई। उन्होंने देखा कि लीला भी अब खूब बड़ी और सुन्दर हो गई है। सब के सब भाई मारे खुशी के हँसने और चिल्लाने लगे। दुष्ट सौतेली माँ की करतूतें उन्होंने लीला को बताई। सब से बड़ा भाई बोला, 'जब तक धूप रहती है, तब तक या तो हम उड़ते रहते हैं या तैरते रहते हैं। सूरज डूब जाने पर हम मनुष्य-शरीर धारण कर लेते हैं। इसीलिए शाम को हमें धरती पर उतर आना पड़ता है, क्योंकि अगर तब भी उड़ते रहें तो मनुष्य रूप में आ जाने पर गिर पड़ें। यह हम लोगों का निवास-स्थान नहीं है। समुद्र के उस पार

ऐसी ही सुन्दर एक जगह है। लेकिन वह बहुत दूर है। वहाँ पहुँचने के लिए गहरे समुद्र के ऊपर उड़ कर जाना होता हैं। बीच में ही अगर रात हो जाये तो रुकने के लिए कोई टापू नहीं है। समुद्र के दोनों किनारों के बीच केवल एक छोटी-सी चट्टान है, वह इतनी तंग है कि उस पर ठहरें तो एक-दूसरे से खूब सट कर रहना पड़ता है। अगर हम वहाँ मनुष्य-रूप में आकर सो जाएँ तो समुद्र की झाग हमारे ऊपर उछल आती है। तो भी वह जगह हमारे लिए काम की है; क्योंकि उसके न रहने पर तो हम अपने निवास-स्थान को पहुँच ही न पाएँ।'

बड़ा भाई आगे बोला, 'पिता के घर हम साल में केवल एक बार आ सकते हैं। यहाँ तक आने में दो दिन बराबर उड़ान भरनी पड़ती है और यहाँ हम सिर्फ ग्यारह दिन रह सकते हैं। यहाँ हम उस जंगल में उड़ते रहते हैं, जहाँ से पिता का महल दिखाई देता है। यहाँ आने पर हर चीज वैसी ही जान पड़ती है जैसी कि हमारे बचपन में थी... और अब तो प्यारी बहिन, तुम भी यहीं हो। अब यहाँ हम सिर्फ दो दिन और रह सकते हैं। उसके बाद हमें उस स्थान के लिए उड़ जाना होगा, जो सुन्दर तो बहुत है, लेकिन हमारा मूल निवास-स्थान नहीं है। तुम्हें हम अपने साथ कैसे ले जाएँ! कोई नाव तो है नहीं।'

लीला ने पूछा, 'तुम लोगों को जादू से छुटकारा दिलाने का कोई उपाय नहीं है क्या ?' वे लोग इसी तरह रात भर बातचीत करते रहे, थोड़ी ही देर के लिए सोए।

लीला जब जागी तो उसने ऊपर की ओर हंसों की फड़फड़ाहट सुनी। अब उसके भाई फिर हंस बन गये थे और उड़ते हुए मँडरा रहे थे।

अन्त को वे उड़ चले। बस, सब से छोटा भाई रह गया। वह लीला की गोद में सिर रख कर बैठ गया, लीला उसके बड़े-बड़े सफेद परों को सहलाती रही। सारा दिन उन्होंने इसी तरह बिता दिया। रात होने को आई तो दूसरे हंस लौट आए, और जैसे ही सूरज डूबा उन सब ने मनुष्य का रूप धारण कर लिया।

उनमें से एक, लीला से बोला, 'कल हम चले जाएँगे, और साल भर तक नहीं लौट पाएँगे। लेकिन हम तुम्हें यहाँ कैसे छोड़ जाएँ ? क्या हमारे साथ चलने का साहस करोगी ? हम लोगों के पँखों में तो इतनी ताकत है कि उनके सहारे तुम्हें ले चलें।'

लीला ने उनके साथ जाना स्वीकार कर लिया। इसलिए रात भर वे लोग सरपत को बुन कर एक मजबूत-सी चटाई बनाने में लगे रहे। लीला उस चटाई पर लेट रही। सूरज निकलते ही सब भाई फिर हंस बन गये और अपनी

चोंचों में दबा कर चटाई को ऊपर ले उड़े, लीला अभी उस पर सो ही रही थी। बहिन को सूरज की गरमी से बचाने के लिए, उनमें से एक हंस उसके ऊपर उड़ कर अपने चौड़े पंखों से छाया करता जा रहा था।

लीला की आँख खुली, तो वे धरती से बहुत दूर पहुँच चुके थे। विशाल समुद्र के ऊपर हवा में यात्रा करते हुए लीला को बड़ा अजीब-सा जान पड़ा, मानो वह स्वप्न देख रही हो। उसके पास ही बेरों का एक गुच्छा और थोड़े-से सेब रखे थे। सबसे छोटे भाई ने उन्हें वहाँ रख दिया था। अब वही छोटा भाई हंस बन कर उसके ऊपर छाया करता चल रहा था।

वे सब बहुत ऊँचे पर उड़ रहे थे। समुद्र पर जो जहाज उन्हें सबसे पहले दिखाई दिया, वह मछली जैसा लगता था। पीछे की ओर एक पहाड़ के समान विशाल बादल था, उस पर लीला और उसके भाइयों की बड़ी-बड़ी परछाइयाँ पड़ रही थीं। वह एक अपूर्व अद्भुत दृश्य था। लेकिन जब सूरज आकाश में ऊपर चढ़ आया, तो बादल पीछे छूट गया और वह दृश्य ओझल हो गया।

वे हंस दिन भर लगातार उड़ते रहे। इस बार वे पहले से कहीं कम वेग से उड़ रहे थे, क्योंकि वे अपनी बहिन को लिए जा रहे थे। जब शाम होने को आई तो एक तूफान

उठता-सा जान पड़ा। लीला डूबते हुए सूरज की ओर बेचैनी से देखने लगी। तंग चट्टान अभी दिखाई नहीं दे रही थी। उसे लग रहा था कि अब उसके भाइयों को उड़ने में कठिनाई होने लगी है। उसे चिन्ता इस बात की थी कि सूरज डूबने से पहले अगर वे लोग चट्टान पर नहीं पहुँच जाते, तो वे रास्ते में ही मनुष्य-रूप में आ जाएँगे और समुद्र में गिर कर डूब जाएँगे। वह सोच रही थी कि यदि ऐसा हुआ तो इसमें अपराध मेरा ही होगा। वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगी। विशाल बादल पास आते जा रहे थे, हवा के तेज झोंके तूफान आने की सूचना दे रहे थे। लगता था जैसे बादल एक बहुत लम्बी-चौड़ी लहर के ऊपर टिके हों। वह लहर तेजी से बढ़ी आ रही थी। बिजली लगातार कौंध रही थी।

सूरज क्षितिज पर जा पहुँचा। लीला का हृदय तेजी से धड़कने लगा। तभी हंस इतने वेग से नीचे की ओर उतरने लगे कि लीला को जान पड़ा मानो वह गिर जायगी। इसके बाद वे मँडराने लगे। अन्त को लीला की दृष्टि तंग चट्टान पर पड़ी। चट्टान क्या थी, मानो कोई बड़ी-सी मछली पानी में से अपना सिर उठाए हो!

जैसे ही लीला के पैरों ने उस चट्टान को छुआ, सूरज इस तरह ओझल हो गया, जैसे जलते हुए कागज पर की

ग्राखिरी चिनगारी। लीला के भाई उसके चारों ग्रोर ग्रापस में बाँहें सटा कर खड़े हो गये। वहाँ सिर्फ इतनी जगह थी कि वे पास-पास हो कर खड़े रह सकें। चट्टान से समुद्र बराबर टकरा रहा था, झाग उछल कर इन लोगों पर भी ग्रा रहे थे। लगातार बिजली की कौंध से ग्राकाश दिप रहा था ग्रौर बराबर घनी गड़गड़ाहट हो रही थी। लीला ग्रौर उसके भाई एक-दूसरे को कस कर पकड़े खड़े थे। ईश्वर की प्रार्थना में एक भजन गा कर, उन्होंने साहस बटोरा।

सुबह को हवा शान्त हुई। पौ फटने पर लीला ग्रौर उसके भाई चट्टान पर से उठे। लहरें ग्रब भी ऊँची उड़ रही थीं। धुंध में से समुद्र श्यामल दीख रहा था, उस पर सफेद झाग उठ रहे थे। लगता था, हजारों हंस पानी पर तैर रहे हों। बाद को दिन में लीला की नजर दूर की पहाड़ी श्रेणियों पर गई। श्रेणियों के बीच में झरने बह रहे थे। उन सब के बीच कोई मील भर लम्बा एक महल था, जिसमें ग्रनेक तरह के वृक्ष ग्रौर चक्की के पाटों के बराबर बड़े-बड़े फूल थे।

लीला ने ग्रपने भाइयों से पूछा कि क्या हमें उसी जगह जाना है ?' उसके भाइयों ने कहा, 'नहीं, वह तो एक ग्रप्सरा का महल है, कोई मनुष्य उसमें जा ही नहीं सकता।' लीला

की नजर अभी उधर जमी ही थी, कि पहाड़, पेड़, महल आदि सब गायब हो गये, और उनकी जगह दिखाई दिये ऊँचे-ऊँचे कलशोंवाले बारह मन्दिर। उसे जान पड़ा, मानो कहीं से संगीत की ध्वनि आ रही हो, किन्तु वह केवल समुद्र की कलकल थी। जिस प्रदेश को उन्हें जाना था, उसके दिखाई देने से पहले, लीला को बहुत-सी अजीब-अजीब चीजें दिखाई दीं। नीले-नीले पर्वत, देवदार के वन, नगर और महल, ये सब उसकी आँखों के आगे आये। सूर्यास्त से पहले लीला एक गुफा के सामने बैठी थी, जिसके चारों ओर इतनी घनी लताएँ छाई थीं, मानो चमकदार कालीन हो!

सबसे छोटा भाई जब लीला को उसके सोने के कमरे में ले जा रहा था, तो बोला, 'देखें, रात को तुम्हें क्या-क्या सपने आते हैं।' लीला ने उत्तर दिया, 'मुझे तो यही सपना आयेगा कि इस जादू से तुम्हें कैसे छुटकारा मिले।' और यही विचार उसके मन में छाया रहा। उसने सहायता के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। रात को सपने में भी वह प्रार्थना करती रही। सोते-सोते उसे लगा कि वह अप्सरा के महल की ओर ही हवा में उड़ी जा रही है। उसे लगा कि अप्सरा उसके पास आई। सुन्दरी होने पर भी वह अप्सरा बहुत कुछ उसी बुढ़िया की तरह थी, जिसने जंगल में उसे बेर दिये थे और सुनहरे मुकुटवाले हंसों के विषय में बताया था।

अप्सरा उससे बोली, 'तुझमें चाहे बड़ा धैर्य और साहस हो, तो भी तू अपने भाइयों को जादू से नहीं छुड़ा सकती। समुद्र का जल तुम्हारे सुन्दर हाथों से भी अधिक कोमल है, तो भी वह कड़े से कड़े पत्थरों को

मनचाहा रूप दे सकता है। लेकिन तुम्हारी तरह दुःख का अनुभव उसे नहीं होता, क्योंकि दुःख और शोक का अनुभव करनेवाला हृदय ही उसके पास नहीं है। मेरे हाथ में जो नागफनी के काँटे हैं, इनकी ओर देखो। जिस गुफा में तुम सो रही हो, उसमें ऐसे बहुत से हैं।

तुम्हारे काम वे ही आ सकते हैं, जो या तो इस गुफा में हों या श्मशान में ! हाथ में चुभने की परवाह न करके तुम इन्हें तोड़ लेना। फिर उन्हें अपने पैरों से तब तक कुचलती रहना जब तक वे सूत बनाने के काबिल न हो जाएँ। उस सूत से तुम लम्बी-लम्बी बाहोंवाले ग्यारह कुरते बुन लेना। उन कुरतों को जब तुम ग्यारहों हंसों पर डाल दोगी तो जादू खत्म हो जायगा। लेकिन याद रहे कि चाहे इस काम में वर्षों ही क्यों न लग जाएँ, पूरा होने तक तुम्हारे मुँह से एक शब्द भी न निकले; क्योंकि उस बीच तुम्हारे मुँह का जरा-सा भी शब्द तुम्हारे भाइयों की छाती में खंजर की तरह जा लगेगा। तुम्हारे मौन रहने पर ही उनका जीवन निर्भर होगा।'

इसके बाद उस अप्सरा ने लीला के हाथ को नागफनी का वह काँटा छुआ दिया। वह लीला के हाथ को चिनगारी जैसा लगा। लीला जाग पड़ी।

अब भोर हो गई थी। सपने में देखा नागफनी का काँटा लीला की बगल में रखा था। ईश्वर का धन्यवाद करके, उसने अपना काम शुरू कर दिया। अपने कोमल हाथों से उसने नागफनी के काँटों को तोड़ लिया। इससे उसके हाथों में फफोले पड़ गये। इस तकलीफ को उसने खुशी से सह लिया। उसे विश्वास था कि इसी से वह अपने

भाइयों को जादू से छुड़ा सकेगी। फिर वह अपने नंगे पाँवों से उन काँटों को कुचलने लगी और उससे थोड़ा-सा सूत तैयार कर लिया।

शाम को जब उसके भाई लौटे, तो उसका मौन देख कर डर गये। उन्होंने सोचा कि हो न हो, उसी दुष्ट सौतेली माँ का यह नया जादू है। लेकिन लीला के हाथों के फफोले देख कर वे समझ गये कि हमारी बहिन हमारी भलाई के लिए क्या कर रही है। सबसे छोटा भाई उन फफोलों को देख कर रोने लगा; लेकिन जब उसके आँसू फफोलों पर पड़े तो फफोले गायब हो गए। लीला का दर्द भी जाता रहा।

रात भर लीला अपने काम में जुटी रही। जब तक अपने भाइयों को जादू से छुड़ा न ले, तब तक उसे चैन कहाँ! अगले दिन वह वहाँ अकेली रह गई, क्योंकि हँस उड़ गए थे। लेकिन समय जाता उसे जान ही न पड़ा। एक कुरता तैयार हो गया। अब वह दूसरा तैयार करने में लगी।

पहाड़ियों में से किसी शिकारी का बिगुल सुनाई दिया। लीला डर गई। बिगुल की आवाज जैसे-जैसे पास आती गई, शिकारी कुत्तों का भौंकना भी सुनाई देने लगा। अन्त में डर के मारे, नागफनी के काँटों को बटोर कर वह गुफा में ले गई और उनके ऊपर बैठ गई।

एक बड़ा-सा शिकारी कुत्ता झाड़ियों के बीच से निकला, उसके पीछे दो और थे। सभी जोर-जोर से भौंक रहे थे। वे इधर-उधर दौड़ने लगे। इसके तुरन्त बाद ही शिकारी आ कर गुफा के सामने खड़े हो गये। उन सब में जो सबसे ज्यादा सुन्दर था, वह उस देश का राजा था। वह लीला के पास जा पहुँचा। लीला से अधिक सुन्दरी स्त्री उसने कभी न देखी थी।

राजा बोल उठा, 'ओ सुन्दरी, तुम यहाँ कैसे आईं ?' लीला ने सिर्फ अपना सिर हिला दिया, वह बोलती कैसे ! बोलने से तो उसके भाइयों की जान पर आ बनती। उसने अपने हाथों को भी आँचल में छिपा लिया ताकि राजा घावों को न देख सके।

राजा ने कहा, 'चलो मेरे साथ, तुम्हें यहाँ नहीं छोड़ा जा सकता। जैसी तुम सुन्दर हो, यदि तुम वैसी ही भली भी हुईं, तो मैं तुम्हें रेशम और मखमल के कपड़े पहनवा कर तुम्हारे सिर पर सुनहरी ताज रखवाऊँगा और तुम्हें अपने महल में रखूँगा।'

इतना कह कर राजा ने लीला को उठा कर अपने घोड़े पर बैठा लिया। लीला बेचारी हाथ-पैर छटपटा कर रोने लगी। राजा बोला, 'मैं तुम्हारे भले के लिए ही ऐसा कर रहा हूँ।' इसके बाद वह उसे घोड़े पर लेकर पहाड़ों और

घाटियों में से हो कर चल दिया। दूसरे शिकारी उसके पीछे-पीछे चले।

शाम होते-होते राजधानी आ पहुँची। राजा लीला को महल में ले गया। वहाँ संगमरमर के फौवारे थे और दीवारों तथा छतों पर सुन्दर-सुन्दर चित्र बने थे।

लीला ने उस शान-शौकत की ओर आँख उठा कर भी न देखा। वह चुपचाप रोती-सिसकती रही। बाँदियों ने उसे राजसी कपड़े पहनाये, उसके बालों में मोती गूँथे और हाथ के फफोलों की मरहम-पट्टी की।

पूरी तरह साज-सिंगार हो जाने पर लीला का सौन्दर्य ऐसा निखर आया कि राजमहल के सभी आदमियों के सिर उसके आगे झुक गये। राजा ने उसे अपनी दुलहिन बनाने का निर्णय कर लिया, यद्यपि राजपुरोहित का सिर शंका

से हिलता रहा। उसका कहना था कि जंगल की यह सुन्दरी जरूर कोई चुड़ैल है, जिसने राजा को सम्मोहित कर लिया है।

लेकिन राजा ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। इसके विपरीत, संगीत आदि की धूमधाम के बीच शानदार दावत दी गई और दुलहिन के चारों ओर नाच-गाने का समाँ बँध गया।

लीला को सुगंधित पुष्पोंवाले उद्यानों में और महल के सुन्दर कमरों में घुमाया गया, लेकिन न उसके होंठों पर हँसी आई और न उसकी आँखों में चमक ही।

सोने के कमरे के पास ही एक ऐसा कमरा था, जिसमें चारों ओर कीमती परदे लटके थे, उसे बहुत कुछ उस गुफा का-सा रूप दिया गया था, जिसमें लीला पहले रहती थी। नागफनी से उसने जो सूत वहाँ तैयार किया था, वह भी इस कमरे में कालीन पर रखा था और उसका बनाया हुआ कुरता भी दीवार पर टँगा था।

राजा ने लीला से कहा, 'इसे देख कर तुम अपनी उसी गुफा की कल्पना कर सकती हो और वहाँ जो काम तुम कर रही थीं, वही काम यहाँ भी हो सकता है। महल की तड़क-भड़क के बीच, शायद इस कमरे में तुम्हें उसी गुफा का-सा आनन्द मिल सके।'

लीला ने जब देखा कि मेरे लिए जो सबसे जरूरी चीज है, वह मिल गई, तो उसके गालों पर लाली दौड़ आई और राजा की ओर देख कर वह मुसकरा दी। उसे विश्वास हो गया कि मैं अब भी अपने भाइयों को जादू से छुड़ा सकूँगी। उसने राजा का हाथ चूम लिया, राजा ने उसे छाती से लगा लिया। राजा ने आज्ञा दे दी कि जंगल की गूँगी सुन्दरी के साथ मेरे विवाह की घोषणा कर दी जाए।

पुरोहित ने फिर शंका उठाई, लेकिन राजा पर इसका कोई असर न हुआ। विवाह सम्पन्न हुआ और पुरोहित को ही रानी के सिर पर मुकुट रखना पड़ा। क्रोध में आ कर उसने मुकुट को लीला के माथे पर इतना नीचे तक खींच दिया कि उसे दर्द होने लगा; लेकिन अपने भाइयों के लिए उसके मन में इतना अधिक दर्द था कि उसने इस दर्द पर कोई ध्यान न दिया। वह बिल्कुल गूँगी बनी रही, क्योंकि उसके एक भी शब्द से उसके भाइयों की मृत्यु हो जाती। लेकिन सुन्दर और दयालु राजा के प्रति प्यार से उसकी आँखें चमक उठीं। राजा ने उसकी प्रसन्नता के लिए क्या कुछ नहीं किया था! इसलिए दिन-दिन राजा के प्रति उसका प्रेम बढ़ता गया।

काश, वह अपने मन के दुःख की बात राजा से कह पाती! जब तक उसका काम पूरा न हो जाय, वह चुप

रहने को लाचार थी। अपने काम के लिए वह रात में चुपके से गुफा के से उस छोटे कमरे में चली जाती। इस तरह एक-एक करके उसने सातवाँ कुरता तैयार कर लिया। लेकिन अब उसका सूत खत्म हो गया।

अप्सरा ने उसे बताया था कि उसके काम की नागफनी श्मशान में भी होती है, उसे अपने हाथ से ही तोड़ कर लाना चाहिए। लेकिन यह कैसे हो ?

उसने सोचा, 'भाइयों के लिए मेरे दिल में जितना दर्द है, उसकी अपेक्षा मेरी उँगलियों का दर्द तो कुछ भी नहीं है। मैं जरूर श्मशान जाऊँगी और ईश्वर मेरी रक्षा करेगा।

एक उजेली रात में, मन में डरते-डरते वह चुपके से बाग की ओर गई और वहाँ से सुनसान रास्ते से होकर श्मशान पहुँच गई।

एक हड्डियों के ढाँचे के पास कुछ चुड़ैलें बैठी थीं। लीला को उनके पास ही से होकर जाना पड़ा, चुड़ैलों ने अपनी डरावनी आँखों से उसकी ओर देखा। लेकिन लीला ने ईश्वर को याद करके, नागफनी के पौधे उखाड़ लिए और उन्हें लेकर महल को लौट आई। इस बीच उस पर सिर्फ एक आदमी की नजर पड़ी और वह था पुरोहित! जब सब लोग सोते थे तो वह जागता रहता था। अब तो उसे विश्वास हो गया कि रानी के मामले में जरूर कुछ गड़बड़

है। हो न हो, यह चुड़ैल है, इसने राजा और उसकी प्रजा

को अपने जादू से मोहित कर दिया है।

पूजा के समय, उसने राजा को बता दिया कि मैंने ऐसा देखा है, और मेरे मन में इस बात का डर है। लेकिन जब वह अपनी बात कह रहा था तो वहाँ रखी देवताओं की मूर्तियाँ सिर हिलाने लगीं, मानो कह रही हों, 'यह अन्याय है, लाला निर्दोष है।' लेकिन पुरोहित ने इसका अर्थ यह लगाया कि, यह उसकी बात के सच्चा होने का प्रमाण है, देवताओं की मूर्तियाँ रानी की दुष्टता के लिए सिर हिला रही हैं।

राजा की आँखों से आँसू बह चले। मन में सन्देह लेकर वह लौटा और रात में सोने का बहाना करके लेटा रहा। उसने देखा, लीला रोज रात को उठ कर चली जाती है।

उसके जाने और लौट कर आने तक, राजा छिप कर उसका पीछा करता रहा।

लीला ने भी देखा कि उसके प्रति राजा की दृष्टि बराबर शंका से भरती जा रही है, लेकिन वह इसका कारण न जान सकी। उसे दुःख तो बहुत हुआ, लेकिन अपने भाइयों के लिए वह क्या नहीं कर सकती थी!

उसके मोतियों-से आँसू ढुरक कर मखमली तकिये पर गिरने लगे। लेकिन उसके दुःख का किसे पता था? लोग तो उसके सौभाग्य से ईर्ष्या ही करते थे।

अब उसका काम लगभग समाप्त हो चला। सिर्फ एक कुरता कम रह गया। लेकिन सूत की फिर कमी पड़ गई और नागफनी भी चुक गई थी। बस एक बार और उसे श्मशान जाना था। सुनसान रास्ते और चुड़ैलों से उसे डर लग रहा था, लेकिन ईश्वर पर उसका विश्वास था और उसका इरादा पक्का था।

जब लीला मैदान को चली तो, राजा और पुरोहित दोनों ने उसका पीछा किया। श्मशान के पास पहुँच कर उन्होंने देखा कि लीला अचानक उनकी आँखों से ओझल हो गई है, और हड्डियों के ढाँचे के पास बैठी चुड़ैलें उन्हें दिखाई दीं। राजा उदास होकर लौट पड़ा। उसे विश्वास हो गया कि उसकी रानी उन चुड़ैलों में से ही कोई है।

राजा कह उठा, 'अब प्रजा ही न्याय करेगी रानी का।' प्रजा ने विचार करके उसे जला डालने का दण्ड दिया।

सुन्दर महल में से ले जा कर लीला को जेल की अंधेरी कोठरी में डाल दिया गया। रेशम और मखमल की जगह अब उसे उसी के लाए हुए नागफनी के काँटे दिए गए। ओढ़ने और बिछाने के लिये उसे वे कुरते दे दिए गए जो उसने बुन कर तैयार किए थे। लेकिन लीला को इससे ज्यादा कीमती और क्या चीज मिल सकती थी? ईश्वर का धन्यवाद करके वह फिर अपने काम में जुट गई।

बच्चे जेल के आगे लीला के बारे में भद्दे-भद्दे गीत गाने लगे। प्यार और शान्ति का एक भी शब्द उसे किसी से न मिला।

शाम के समय, लीला ने जेल की खिड़की के पास एक हंस के पंखों की फड़फड़ाहट सुनी। वह लीला का सबसे छोटा भाई था। उसे देख कर लीला खुशी से चीख पड़ी। उसका काम पूरा हो चुका था, इसी की उसे खुशी थी, हालाँकि वह रात उसके जीवन के लिए अन्तिम थी।

आखिरी समय में लीला के पास रहने के लिए पुरोहित आया। लीला ने उसकी तरफ से मुँह फेर लिया। उसने आँखों और हाथों के इशारों से उससे लौट जाने की प्रार्थना की। उस रात उसे अपना काम पूरी तरह खत्म कर लेना

था, जिससे कि उसका तमाम कष्ट और रातों का जगना सफल हो जाये।

क्रोध में बड़बड़ाता हुआ पुरोहित चला गया। लीला जानती थी कि मैं पूरी तरह निर्दोष हूँ। वह अपने काम में लगी रही।

एक छोटी-सी चुहिया लीला के काम में उसकी मदद करती रही। वह नागफनी को लीला के पास तक घसीट-घसीट कर ले आती। जेल की खिड़की के बाहर एक सुरीली चिड़िया बड़े मीठे स्वर में गाती रही, ताकि लीला की हिम्मत बनी रहे।

सूरज निकलने से पहले के झुटपुटे में, लीला के ग्यारहों भाई राजमहल के फाटक पर जा पहुँचे, और उन्होंने राजा के दर्शन की प्रार्थना की।

लेकिन उनसे कह दिया गया कि राजा साहब सो रहे हैं, और उन्हें जगाने का साहस कौन कर सकता है।

पहले तो उन्होंने द्वारपालों से प्रार्थना की, फिर उन्हें धमकी दी। अन्त में राजा को पता चला कि क्या मामला है। ठीक उसी समय सूरज निकल आया। ग्यारहों भाई अदृश्य हो गए। उनकी जगह ग्यारह हंस वहाँ दिखाई दिये। वे उड़ गये।

शहर भर के लोग चुड़ैल का जलाया जाना देखने के लिए जमा हुए। लीला को एक घोड़ा-गाड़ी में जेल से लाया गया। उसे एक भद्दा-सा टाट का टुकड़ा उढ़ा दिया गया था। सुन्दर लम्बे बाल उसके कन्धे पर बिखरे थे। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, होंठ धीरे-धीरे हिल रहे थे। उँगलियाँ उसकी अब भी सूत को बुन रही थीं। मौत को जाते समय भी उसने अपना काम नहीं छोड़ा था। दसों कुरते उसके पास रखे थे, ग्यारहवें को वह पूरा कर रही थी।

उपद्रवी भीड़ लीला का अपमान करने लगी। लोग कहते—'देखो, देखो! चुड़ैल, अब भी अपना इन्द्रजाल लिए बैठी है। छीन लो उससे यह, और धज्जियाँ उड़ा कर फेंक दो।' कुरते छीनने के लिए वे उसके चारों ओर आ जमा हुए। लेकिन उसी समय उड़ते हुए ग्यारह हंस उसकी गाड़ी

पर आ पहुँचे। वे लीला को चारों ओर से घेर कर अपने पंख फड़फड़ाने लगे।

भीड़ डर कर अलग हो गई। कुछ लोग कह उठे, 'स्वर्ग से संकेत आया है, यह रानी निर्दोष है।' लेकिन यह बात जोर से कहने का साहस किसी को न हुआ।

जल्लाद ने लीला का हाथ आ पकड़ा। लीला ने झट-पट कुरतों को हंसों पर फेंक दिया। हंसों की जगह ग्यारह

सुन्दर राजकुमार प्रकट हो गए। उनमें से सबसे छोटे राज-कुमार के केवल एक बाँह थी, दूसरी बाँह की जगह एक पंख था, क्योंकि उसके कुरते में एक बाँह की कमी रह गई थी।

लीला एकाएक कह उठी, 'अब मैं बोल सकती हूँ, मैं निर्दोष हूँ।'

वहाँ खड़े लोगों ने यह सब होते देखा तो लीला के आगे आदर से उनके माथे झुक गए। लेकिन लीला अपने भाइयों की बाँहों में अचेत पड़ी थी। भय, शंका और शोक से उसकी शक्ति जाती रही थी।

सबसे बड़े भाई ने कहा, 'सचमुच लीला निर्दोष है।' और उसने अद्भुत वृत्तान्त कह सुनाया। जब वह बोल रहा था तो, गुलाब के लाखों फूलों की खुशबू चारों ओर बिखर गई। जिस चिता पर रख कर लीला जलाई जाने वाली थी, उसकी हर एक लकड़ी में से लाल गुलाब की टहनियाँ फूट उठीं। तमाम गुलाबों के बीच चमचमाता एक सफेद फूल भी खिल उठा। उसकी चमक सितारे की तरह थी। राजा ने उसे तोड़ कर लीला के ऊपर रख दिया।

इस पर लीला की मूर्च्छा जाती रही। अब उसके मन में प्रसन्नता और शान्ति छाई थी। मन्दिरों के घड़ियाल अपने आप बज उठे। राजा, रानी और ग्यारहों राजकुमार धूमधाम से महल में आए। चारों ओर से आकर पक्षियों

ने ऐसा शानदार जलूस बना लिया, जिसे देख कर सब मुग्ध हो उठे।

महल में लौटने पर लीला ने अपने सबसे छोटे भाई के कुरते की दूसरी बाँह भी तैयार कर ली। इस तरह उसे भी दोनों बाँह हो गईं। ग्यारहों भाइयों ने शपथ ले ली कि अब हम अपने पिता के देश कभी नहीं लौटेंगे, और अपनी प्यारी बहिन के पास ही रहेंगे, उसी ने हमारे ऊपर किए गए जादू से, इतनी मेहनत करके हमें छुड़ाया है।

इसके बाद वे लोग हमेशा आनन्दपूर्वक रहे।

छोटा कालू और बड़ा कालू

एक गाँव में एक ही नाम के दो आदमी रहते थे। एक के पास चार घोड़े थे, दूसरे के पास सिर्फ एक घोड़ा था। दोनों के नामों में फर्क करने के लिए पड़ोसी लोग चार घोड़ों के मालिक को 'बड़ा कालू' और एक घोड़े के मालिक को 'छोटा कालू' कहने लगे थे।

हफ्ते भर बेचारे छोटे कालू को बड़े कालू का खेत जोतना पड़ता, और अपना घोड़ा भी उसे मँगनी दे देना पड़ता। बदले में बड़ा कालू सिर्फ एक दिन को अपने चारों घोड़े उसे मँगनी देता।

पाँचों घोड़ों को एक साथ पाकर छोटा कालू खुशी से फूल उठता। वह पाँचों से अपना खेत जोतता, और समझता, एक दिन के लिए ही सही, पाँचों घोड़े तो मेरे हो गए हैं।

ऐसे एक दिन जब छोटा कालू अपना खेत जोत रहा था, नदी में स्नान को जाते हुए लोगों ने देख कर उसे 'नमस्ते'

की। छोटा कालू खुशी से कह उठा, 'देखो न, कैसे अच्छे पाँच घोड़े हैं मेरे !'

पास से ही बड़ा कालू चिल्लाया, 'ऐसा क्यों कहता है रे ! एक ही घोड़ा तो है तेरा।'

जब फिर कुछ लोग स्नान करने को जाते दिखे, तो छोटा कालू उनसे भी कह उठा, 'कैसे भले पाँच घोड़े हैं मेरे।' इतनी देर में वह भूल गया था कि ऐसा कहने को मुझसे मना किया गया है।

बड़ा कालू क्रोध में भर कर बोल उठा, 'मैंने तो तुझे चुप रहने को कहा था। अगर अब ऐसा कहा तो मैं तेरे घोड़े का सिर उतार लूँगा और पाँचों घोड़ों की तेरी शेखी धरी रह जाएगी।'

छोटे कालू ने वायदा किया, 'अच्छा, अब कभी ऐसा नहीं कहूँगा।' यह बात कही भी उसने दिल से। लेकिन जरा देर बाद ही कुछ और लोग उधर से गुजरे और उन्होंने छोटे कालू को 'नमस्ते' की। छोटा कालू अपनी खुशी को न रोक सका—पाँच-पाँच सुन्दर घोड़ों से एक साथ अपना खेत जोत रहा था वह। घोड़ों को आगे हाँकता हुआ वह कह उठा, 'देखो, देखो, मेरे पाँच बढ़िया घोड़े।'

बड़े कालू ने क्रोध में भर कर कहा, 'ठहर, अभी अकल ठीक करता हूँ तेरी।' और उसने एक बड़ा-सा पत्थर उठा

कर एक घोड़े के सिर पर जोर से दे मारा। बेचारा घोड़ा वहीं ठौर हो गया।'

'हाय, अब तो कोई भी घोड़ा मेरा नहीं रहा' कह कर छोटा कालू आँसू बहाने लगा।

जी ठिकाने होने पर, छोटा कालू अपने मरे हुए घोड़े की चमड़ी उतारने में लग गया। चमड़ी को अच्छी तरह धूप में सुखा कर उसने उसे एक बोरे में भर लिया और बोरे को पीठ पर लाद लिया। फिर चमड़ी को बेंचने के लिए वह पास के शहर में ले गया।

शहर दूर था, रास्ता एक घने जँगल में से था। जोर की आँधी आ गई। मूसलाधार वर्षा होने लगी और तेज हवा के झोंकों में पेड़ झूमने लगे। हड़बड़ी में बेचारा छोटा कालू रास्ता भूल बैठा। इसी बीच रात हो आई, सब ओर अँधेरा छा गया। अब न तो वह घर लौट सकता था और न शहर ही जा सकता था। थोड़ी दूर पर उसे एक किसान का घर दिखाई दिया। दरवाजे बन्द होने पर भी उनकी दरारों में से आती रोशनी उसे दिखाई दी।

उसने सोचा, शायद यहीं मुझे भोजन मिल जाय। दरवाजे पर पहुँच कर उसने दस्तक दी। किसान की स्त्री बाहर आई। लेकिन वह क्या चाहता है, यह जान कर उसने कह दिया कि कहीं और जाओ, इस घर में जगह नहीं मिल

सकती, मेरा मालिक घर पर नहीं है, उसके न रहने पर मैं किसी पराये आदमी को घर में नहीं रख सकती।'

छोटा कालू बोला, 'तब तो इस आँधी-पानी में मुझे बाहर ही कहीं पड़े रहना होगा।' किसान की स्त्री ने धड़ से किवाड़ बन्द कर लिए।

पास ही भूसे की कोठरी थी। उसके और मकान के बीच में एक छोटी-सी झोपड़ी थी।

झोपड़ी को देख कर छोटे कालू ने सोचा, इसी में अड्डा जमाऊँ। यहाँ तो बड़े मजे में रात कट जायेगी। वह उसी में जा डटा। इस झोपड़ी और किसान के घर के बीच में एक दरवाजा था। उसके किवाड़ ऊपर की तरफ से ठीक सटे हुए न थे। उन्हीं के बीच से छोटे कालू को, किसान के घर में क्या हो रहा है, यह सब दिखाई देने लगा।

वहाँ बढ़िया-बढ़िया भोजन तथा मिठाइयाँ रखी थीं। किसान की पत्नी और गाँव का पुजारी उन चीजों के पास बैठे थे। उन दोनों के अलावा वहाँ और कोई नहीं था। दोनों एक-दूसरे का आदर करके भोजन खा-खिला रहे थे।

छोटे कालू ने सोचा,'यह सब अपने आप ही खाये जा रहे हैं, यह तो बहुत बुरी बात है। थोड़ा-सा मुझे क्यों नहीं देते।' वह उचक कर और किवाड़ से बिल्कुल सट कर देखने लगा।

उसी समय पास आते घोड़े की टापें सुनाई दीं। किसान घर लौट रहा था। वह बड़ा दयालु था। लेकिन पुजारी की सूरत तक देखना उसे पसन्द न था, वह उसे देखकर पागल हो उठता था।

गाँव का पुजारी किसान की स्त्री का चचेरा भाई था। बचपन में वे दोनों साथ खेले थे। उस दिन, यह समझ कर कि किसान शाम तक नहीं लौटेगा, पुजारी अपनी बहिन से मिलने आ गया था, और बहिन घर के सबसे बढ़िया भोजनों से स्वागत कर रही थी। वे लोग निश्चिन्त बैठे भोजन कर रहे थे। घोड़े की टापें सुन कर दोनों चौंक पड़े। किसान की पत्नी ने पुजारी से कहा, 'कोने में रखे इस बड़े से सन्दूक में छिप जाओ।' पुजारी ने वैसा ही किया, उसे तो किसी तरह अपनी जान बचानी थी।

किसान की पत्नी ने भोजन की चीजों को जल्दी-जल्दी चूल्हे के पीछे छिपा दिया। किसान उन चीजों को देख लेता तो जरूर पूछता कि वह दावत किसके लिए सजाई गई है।'

चीजों को हटा देख कर छोटा कालू कह उठा, 'आह, आह!'

किसान ने उसकी आवाज सुन कर पूछा, 'कोई है क्या उधर?' फिर उचक कर किवाड़ों में से देखा तो छोटे कालू

से बोला, 'वहाँ क्यों पड़े हो, भाई ! यहाँ घर में हमारे पास आ जाओ न !'

छोटे कालू ने कहा, 'मैं आँधी-पानी में रास्ता भटक गया हूँ, क्या रात भर के लिए आप मुझे शरण देंगे ?'

दयालु किसान ने उत्तर दिया, 'जरूर - जरूर ! आ जाओ, भोजन करो ।' अब तो किसान की स्त्री ने भी उसका खूब स्वागत किया । उसके लिए आसन बिछा कर दलिये से भरा एक बड़ा

प्याला उसके आगे लाकर रख दिया। किसान ने तो पेट भर खाया, लेकिन छोटे कालू से न खाया गया, उसे तो चूल्हे के पीछे रखे स्वादिष्ट भोजन और मिठाई का ध्यान बना था। उसने बैल की खाल के बोरे को पास ही रख लिया था। जब ज्वार के दलिये से उसका जी ऊब उठा, तो उसने चुपके से बोरे पर एक हाथ दे मारा। खाल चटचटा उठी।

छोटा कालू ऐसा भाव बना कर बोला, मानो बोरे से बात कर रहा हो, 'ठीक है, ठीक है।' उसने फिर बोरे को दबा दिया, खाल पहले से भी जोर से चटचटा उठी।

किसान ने पूछा, 'क्या है तुम्हारे बोरे में ?'

छोटा कालू बोला, 'उसमें एक ओझा है। वह कह रहा है कि हम लोग दलिया ही क्यों खाये जा रहे हैं, जब कि इस मकान के मालिक ने हमारे लिए स्वादिष्ट भोजनों और मिठाइयों का इन्तजाम कर दिया है, वे चीजें चूल्हे के पीछे रखी हैं।'

'ओझा !' किसान ने अचरज से कहा, और यह देखने के लिए कि उसकी बात सही है, या नहीं उसने चूल्हे के पास जा कर देखा। वहाँ सचमुच वे सब चीजें थीं। ओझा की बात सच्ची थी।

किसान की स्त्री को कुछ भी कहने की हिम्मत न पड़ी। उसने भी अपने पति की तरह ही अचरज प्रकट किया।

चूल्हे के पीछे से भोजन की तमाम चीजें लाकर उसने उन दोनों के आगे रख दीं। किसान और छोटा कालू उन चीजों को शौक से खाने लगे।

छोटे कालू ने बोरे को एक बार फिर दबा दिया। खाल फिर चटचटा उठी।

किसान ने पूछा, 'अब क्या कह रहा है, तुम्हारा ओझा?'

छोटा कालू बोला, 'वह कह रहा है कि उसने हमारे पीने के लिए शर्बत की तीन बोतलों का भी इन्तजाम किया है, वे भी वहीं चूल्हे के पीछे कोने में रखी हैं।'

किसान की स्त्री को विवश हो कर छिपाई हुई शर्बत की बोतलें भी निकाल लानी पड़ीं। शर्बत को गिलास में उड़ेल कर किसान सोचने लगा कि ऐसा ओझा पास रहे तो क्या कहने!

अन्त में न रहा गया, तो किसान कह उठा, 'आप का ओझा तो बहुत अच्छा है। काश, मैं भी उसे देख पाता। क्या वह देखने देगा मुझे?'

छोटे कालू ने जवाब दिया, 'क्यों नहीं। मैं जो कुछ भी कहूँ, ओझा हर बात के लिए तैयार है।' फिर उसने बोरे से पूछा, क्यों, करोगे न?' और बोरे को थपथपा दिया। 'इसके बाद वह किसान से बोला, 'सुनते हो न, वह कह रहा है—'हाँ।' लेकिन मैं आपको बता दूँ कि वह देखने

में सुन्दर नहीं है। आप शायद उसे इसीलिए देखना पसन्द भी न करें।'

किसान ने कहा, 'कोई डर नहीं। कैसा दिखाई देगा वह ?'

छोटा कालू बोला, 'पुजारी जैसा लगता है वह।'

'पुजारी !' कह कर किसान चौंका, और बोला, 'यह तो बड़ी अजीब बात है। पुजारी की शकल देखने से तो मुझे घृणा है। लेकिन वह सचमुच का पुजारी थोड़े ही है, है तो तुम्हारा ओझा ही। दिखाओ, देखूँगा मैं, लेकिन मेरे बहुत पास तक उसे मत आने देना।'

छोटे कालू ने कहा, 'मैं अपने ओझा को आपकी बात बता दूँगा।' और फिर बोरे को थपथपा कर उसके पास अपना कान लगा दिया।

किसान ने पूछा, 'क्या कह रहा है वह ?'

छोटे कालू ने कहा, 'वह कह रहा है कि मैं उस कोने-वाले सन्दूक में जा बैठता हूँ। बस, उसका ढक्कन उठा कर देख लेना, लेकिन फिर फौरन ही बन्द कर देना।'

सन्दूक के पास जाकर किसान ने कहा, 'ढक्कन जरा भारी है, आप इसे उठाने में मेरी मदद कीजिए।' इसी सन्दूक में किसान की पत्नी ने पुजारी को छिपाया था। पुजारी उसमें गुड़ीमुड़ी हो कर बैठा था। इस डर से कि

कहीं भेद न खुल जाय, वह ठीक से साँस भी नहीं ले रहा था।

धीरे से ढक्कन उठा कर किसान ने सन्दूक में झाँका, और बोला, 'अरे, यह तो ठीक गाँव के पुजारी की तरह है। कैसा डरावना लग रहा है।' फिर वह आकर अपनी जगह पर बैठ गया और मन के भय को भुलाने के लिए शर्बत पीने लगा। थोड़ी देर बाद उसमें फिर साहस आ गया। किसान और उसका मेहमान, दोनों ही को नींद नहीं लग रही थी, इसलिए वे रात भर बैठे बातचीत करते रहे।

किसान ने पूछा, 'पहले कभी तुमने अपने ओझा को देखा था?'

छोटे कालू ने जवाब दिया, 'नहीं, इससे पहले मैंने कभी उससे कहा ही नहीं कि तुम मुझे अपनी शकल दिखा दो। वह जानता है कि उसकी शकल अच्छी नहीं है, इसलिए वह किसी के सामने खुद आना नहीं चाहता। बस, वह मुझसे बोलता है, और मैं उसकी बात का जवाब दे देता हूँ। यही काफी है।'

किसान ने कहा, 'और क्या!' फिर वह जरा रुक कर बोला, 'मैं तुम्हारे ओझा को खरीद लेना चाहता हूँ। क्या तुम बेचोगे? क्या कीमत लोगे? उसके बदले में मैं तुम्हें एक पीपा भर रुपए तक दे सकता हूँ।'

छोटे कालू ने जवाब दिया, 'अरे, यह क्या कहते हो ? ऐसे अच्छे सेवक को मैं कैसे दे डालूँ ? उसके वजन से दस गुने सोने के सिक्के हों, तब कहीं उसकी कीमत होगी।'

किसान बोला, 'सोने के सिक्के तो मैं तुम्हें नहीं दे सकता। लेकिन उसे मैं लेना जरूर चाहता हूँ। बस, वह मुझे अपनी भद्दी शकल न दिखाए।'

छोटे कालू ने कहा, 'इससे मत डरो। तुमने मुझे रात भर के लिए बढ़िया भोजन दिया है। ऐसे दयालु आदमी का कहना मैं कैसे टाल दूँ। एक पीपा भर रुपयों में ही मैं अपना ओझा तुम्हारे हाथ बेचता हूँ। लेकिन पीपा ऊपर तक भरा होना चाहिए।'

किसान ने कहा, 'वह तो होगा ही। और उधर रखा वह सन्दूक भी तुम ले जाना। मैं चाहता हूँ कि अब वह मेरे घर में न रहे, क्योंकि उसके रहने पर मुझे उसके अन्दर देखे पुजारी की शक्ल याद आती रहेगी।'

इस तरह सौदा हो गया। छोटे कालू ने घोड़े की खाल का बोरा किसान के हवाले कर दिया, और उसके बदले में पीपा भर रुपए ले लिए। साथ ही किसान ने एक छोटा-सा ठेला भी उसे दे दिया, ताकि उस पर रख कर वह रुपयों का पीपा और सन्दूक ले जाय।

छोटा कालू ठेला ले कर चल दिया। सन्दूक में पुजारी अब भी छिपा हुआ था।

रास्ते में एक नदी पड़ी। उसकी धार इतनी तेज थी कि तैर कर उसे पार नहीं किया जा सकता था। इसलिए उस पर एक पुल बना दिया गया था। पुल के ऊपर जा कर छोटा कालू आधे रास्ते पर रुक गया, और सन्दूक के अन्दर का आदमी भी सुन ले, इस तरह जोर से बोल कर कहने लगा, 'इस पुराने सड़े-गले सन्दूक का मैं क्या करूँ? यह तो ऐसा भारी है, जैसे इसमें पत्थर भरे हों। इसे खींचते-खींचते तो मैं थक गया। नदी में फेंके देता हूँ इसे, तैरता-तैरता मेरे घर तक पहुँच जायगा, और न भी पहुँचे तो मुझे कोई चिन्ता नहीं।' यह कह कर उसने सन्दूक को इस तरह उठाया जैसे उसे पानी में धकेल ही देगा।

सन्दूक के भीतर से पुजारी पुकार उठा, 'अरे! अरे! ऐसा न करो भाई, मुझे निकल आने दो पहले।'

छोटा कालू बोल उठा, 'एं! सन्दूक पर जादू कर दिया है किसी ने। तब तो जितनी जल्दी इसे फेंक दूँ, उतना ही अच्छा।'

पुजारी चिल्लाया, 'नहीं भाई, नहीं! निकल आने दो मुझे। मैं तुम्हें एक पीपा भर रुपए और दूँगा।'
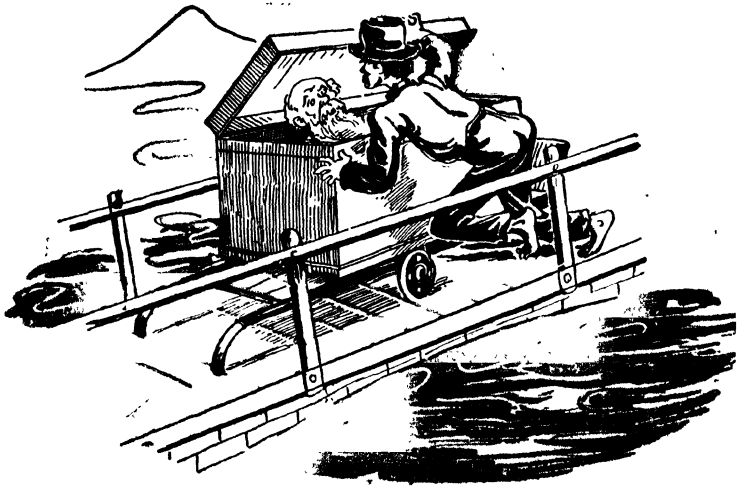
छोटे कालू ने कहा, 'यह बात बिल्कुल दूसरी है ।' और उसने सन्दूक रख कर उसका ढक्कन खोल दिया । पुजारी बाहर निकला, उसकी जान बची । खाली सन्दूक को ठोकर से पानी में गिरा कर वह छोटे कालू को अपने घर ले गया और पीपा भर रुपए दे कर अपना वायदा पूरा किया ।

अब तो छोटे कालू के पास ठेला भर रुपए हो गए । घर पहुँच कर उसने जमीन पर सारे रुपयों का ढेर लगा दिया, और बोला, 'घोड़े की खाल की अच्छी कीमत मिल गई मुझे । जब बड़े कालू को पता चलेगा कि घोड़े की खाल

की बदौलत मैं रईस हो गया हूँ तो वह बड़ा हैरान होगा।' एक लड़के को भेज कर उसने बड़े कालू के घर से तराजू मँगवाया ।

बड़े कालू ने सोचा, 'क्या तोलेगा छोटा कालू ?' फिर उसने तराजू देने से पहले, बड़ी होशियारी से एक पलड़े के नीचे थोड़ी-सी मोम लगा दी, ताकि उससे जो भी तोला जाय, उसमें से थोड़ा-सा तराजू में चिपक आये ।' जब तराजू उसके पास वापस पहुँचा तो उसकी पेंदी में तीन रुपए चिपके हुए थे ।

बड़े कालू को अचरज हुआ । उसी समय छोटे कालू के पास जा कर वह बोला, 'इतना धन कहाँ से पा गये ?'

उत्तर मिला, 'कल जो मैंने घोड़े की खाल बेंची थी, उसी के बदले में मिला है यह धन ।'

बड़ा कालू कह उठा, 'इतनी कीमत होती है घोड़े की खाल की ! मैंने तो यह सोचा भी न था ।'

तेजी से घर पहुँच कर उसने एक कुल्हाड़ी उठाई और अपने चारों घोड़ों को मार डाला । इसके बाद उनकी खालें उतार कर वह शहर में ले गया । सड़कों पर घूम-घूम कर वह पुकारने लगा, 'खालें लो, खाल !' चमार लोगों ने उससे खालों की कीमत पूछी ।

बड़े कालू ने जवाब दिया, 'प्रति खाल की कीमत है, एक पीपा रुपए ।'

चमारों ने कहा, 'पागल हुए हो, रुपयों की गिनती पीपों से होती है कहीं ?'

'खालें लो, नई खालें !' बड़ा कालू इसी तरह पुकारता फिरा । जो भी उससे खालों की कीमत पूछता, वह कह उठता, 'एक पीपा भर रुपए ।'

भीड़ में से एक आदमी गुस्सा कर के बोला, 'अरे दुष्ट, हमें ठगना चाहता है ?'

भीड़ के और आदमी भी बड़े कालू को चिढ़ाने के लिए कह उठे, 'खालें लो, नई खालें ।' फिर उन सब ने कहा, 'भाग जा शहर से बाहर, नहीं तो सब खालें छीन ली जायँगी ।'

इस तरह बड़े कालू को खदेड़ कर शहर से बाहर कर दिया गया । घर पहुँचा तो वह क्रोध में भरा हुआ था, बड़-बड़ा कर कहने लगा—'उस नीच छोटे कालू से बदला लूँगा ।'

रात होते ही वह छोटे कालू की झोपड़ी में पहुँच गया, और देखते ही छोटे कालू को पकड़ कर जल्दी से एक बोरे में ठूँस लिया । बोला, 'अब मैं तुझे ले जाकर डुबा दूँगा, तभी तेरा झूठ बोलना छूटेगा ।' इसके बाद वह छोटे कालू से भरा बोरा ले चला ।

नदी का किनारा बहुत दूर था, और छोटे कालू का वजन कुछ कम न था। रास्ते में एक मन्दिर पड़ा। जो लोग दर्शन करने जा रहे थे, उनमें से बड़े कालू को एक अपना परिचित दिखाई दिया। वह उससे बात करना चाहता था। इसलिए उसने बोरे को सड़क के किनारे छुपा कर रख दिया और सोचा, सभी लोग मन्दिर में हैं, इसे कौन देखेगा? वह मन्दिर की ड्योढ़ी पर चला गया।

बोरे के बँधे हुए मुँह को ढीला करने के लिए, छोटा कालू भीतर ही भीतर अँगड़ाई लेने और कराहने लगा।

उसी समय उधर से एक मवेशियों का सौदागर गुजरा, जो कि बूढ़ा था। उसके हाथ में लाठी थी, वह थक गया था। मवेशियों के एक बहुत बड़े झुण्ड को वह हाँक रहा था, लेकिन झुण्ड उससे सँभलता न था। एक चौपाए ने बोरे को धक्का मार कर लुढ़का दिया। बेचारा छोटा कालू चीख पड़ा, 'अरे-अरे! निकालो मुझे इस बोरे में से।'

बूढ़े आदमी ने झुक कर बोरे का मुँह खोला और कह उठा, 'वाह, इस बोरे में तो एक आदमी है।' गाय से चोट तो नहीं लगी तुम्हें?'

छोटा कालू उछल कर एक ओर जा खड़ा हुआ। फिर उसने सड़क के किनारे से एक पुराने सूखे पेड़ का तना उखाड़ लिया, उसे बोरे में भर कर बोरे का मुह बाँध दिया, और

उसे ठीक उसी हालत में रख दिया जैसा कि बड़ा कालू छोड़ कर गया था।

बूढ़े आदमी ने कहा, 'भाई, इन चौपायों को हाँक कर मेरे घर तक पहुँचा दो तो बहुत अच्छा हो। मैं बहुत थक गया हूँ, कुछ देर मन्दिर में रुकना चाहता हूँ।'

छोटे कालू ने बूढ़े के हाथ से चाबुक ले ली, और बोला— 'मैं जरूर तुम्हारी सहायता करूँगा, क्योंकि तुमने मेरी

सहायता की है ।' इसके बाद वह चौपायों को हाँक कर ले चला ।

कुछ देर बाद बड़ा कालू लौट कर आया । उसने बोरे को उठा कर अपने कन्धे पर रख लिया, और सोचने लगा, 'अब यह उतना भारी नहीं लग रहा है, कुछ देर आराम कर लेना अच्छा ही रहा ।' नदी के पास पहुँच कर उसने बोरे को पानी में फेंक दिया, और बोला, 'अब आप मुझे धोखा नहीं दे पाएँगे, छोटे कालू महाशय ।' इसके बाद वह घर चल दिया । एक जगह पर जहाँ कई रास्ते मिलते थे, उसने देखा कि छोटा कालू तो चौपायों का झुण्ड हाँके लिए जा रहा है ।

बड़ा कालू चिल्ला उठा, 'अरे, तू है, छोटा कालू ! मैंने तो तुझे पानी में डुबा दिया था ।'

छोटे कालू ने जवाब दिया, 'हाँ, मैं जानता हूँ कि तुमने मुझे डुबाने के लिए ही कुछ देर पहले पानी में फेंका था ।'

बड़े कालू ने ललचाई दृष्टि से चौपायों की ओर देखा और अचरज से पूछा, 'तो ये बढ़िया से चौपाए तुम्हें कहाँ मिल गये ?'

छोटा कालू बोला, 'अरे भाई ये समुद्री चौपाए हैं । तुमने मुझे डुबाने की जो कोशिश की थी, उसके लिए मैं तुम्हारा एहसान मानता हूँ, क्योंकि उसी कारण मैं अब

पहले से भी अधिक धनी हो गया हूँ। जब बोरे में था, तब तो मैं बहुत डर रहा था। जब तुमने पुल पर से मुझे ठण्ढे पानी में फेंक दिया तो मेरे कान में अजीब तरह की आवाजें आने लगीं। तुरन्त ही मैं तल में पहुँच गया, लेकिन चिकनी मुलायम घास पर गिरने के कारण मुझे चोट नहीं आई। झटपट किसी ने बोरे को खोल डाला। मैंने देखा, एक सुन्दर स्त्री सामने खड़ी है। वह बिल्कुल सफेद कपड़े पहने थी, और उसके भींगे बालों पर हरी माला लिपटी थी। मेरा हाथ पकड़ कर वह बोली, 'तुम्हीं छोटे कालू हो न ? यहाँ तुम्हारे कुछ चौपाए हैं, आगे सड़क पर एक बड़ा झुण्ड और चर रहा है। वह भी मैं तुम्हीं को देती हूँ। तभी मैं समझ पाया कि नदी, समुद्र में रहनेवाले लोगों के लिए एक चौड़े रास्ते के समान है, उसी से हो कर वे धरती के भीतरी भागों में आते-जाते हैं। नदी का तल बहुत ही सुन्दर होता है। वहाँ हरी-हरी घास फैली होती है, बड़े-बड़े फूल खिले होते हैं, और मछलियाँ तो वहाँ मेरे चारों तरफ इस तरह उछल-कूद रही थीं, जैसे ऊपर हवा में चिड़ियाँ इधर-उधर उड़ती फिरती हैं। वहाँ मुझे समुद्र में रहने वाले बहुत से प्राणी दिखाई दिए, जो जगमगाते कपड़े पहने थे। वहाँ चारों ओर से घिरे हुए चरागाह थे, उनमें बढ़िया चौपायों के झुण्ड चर रहे थे।'

बड़ा कालू कह उठा, 'नदी के तल में सब कुछ इतना अच्छा था तो तुम वहाँ से इतनी जल्दी क्यों चले आये ? मैं तो कभी न आता ।'

छोटे कालू ने जवाब दिया, 'अरे भाई, यह तो मेरी चालाकी है । मैंने तुम्हें बताया न कि जलपरी ने मुझसे कहा था, एक मील दूर पर मेरे लिए चौपायों का एक और झुण्ड है । उसका मतलब नदी के रास्ते के एक मील से था । नदी कई जगह घूम फिर कर आगे गई है, इसलिए मैंने सोचा अगर जमीन के रास्ते से वहाँ पहुँचूँ तो आधे मील की बचत हो जायेगी । इसलिए, मैं वहीं जा रहा हूँ । थोड़ी देर में ही मुझे चौपायों का दूसरा झुण्ड मिल जायेगा ।'

बड़ा कालू बोला, 'तुम सचमुच बड़े भाग्यशाली हो । मैं भी नदी के तल में पहुँच जाऊँ, तो क्या इस तरह के कुछ चौपाए मुझे भी मिल सकते हैं ?'

छोटे कालू ने जवाब दिया, 'मैं क्या जानूँ ?'

इस पर बड़ा कालू बोला, 'अच्छा, तो तमाम बढ़िया चौपाए तुम अपने ही पास रखना चाहते हो । अब या तो नदी के पास ले जा कर मुझे वहाँ डुबा दो, या फिर मैं अपने इस बड़े चाकू से तुम्हें मार डालूँगा ।'

छोटा कालू बोला, 'ऐसी जल्दी मत करो भाई ! मैं तुम्हें बोरे में भर कर तो नदी तक ले नहीं जा सकता, क्योंकि

तुम बहुत भारी हो। हां, अगर तुम वहां तक चल कर अपने आप बोरे में बैठ जाओ, तो तुम्हारी खुशी के लिए मैं बोरे को उठा कर नदी में फेंक दूँगा।'

बड़े कालू ने कहा, 'ठीक है; लेकिन याद रखो, अगर नदी के तल में पहुँच कर मुझे चौपाए नहीं मिले तो लौटने पर मैं तुम्हें मार डालूँगा।' छोटे कालू ने इस बात का विरोध नहीं किया।

वे दोनों नदी की ओर साथ-साथ बढ़े। प्यासे चौपायों ने जब पानी देखा तो वे एक-दूसरे से होड़ कर के तेजी से पानी की ओर बढ़े।

छोटा कालू कह उठा, 'देखो, ये मेरे चौपाए नदी के तल में फिर पहुँच जाने को कितने उत्सुक हैं।'

बड़े कालू ने कहा, 'हाँ, ठीक है। लेकिन नदी के तल तक पहुँचने में पहले मेरी मदद करो।'

एक चौपाए की पीठ पर झूल की तरह एक बोरा पड़ा था। उसी को ले कर बड़ा कालू उसमें बैठ गया, और बोला, 'मेरे साथ इसमें एक बड़ा-सा पत्थर भी रख दो; ऐसा न हो कि मैं तल तक पहुँचने से रह जाऊँ।'

छोटे कालू ने वैसा ही किया, और बोरे का मुँह बाँध कर नदी में फेंक दिया।

'छप्प' से वह नदी में डूब गया।

अपने चौपायों के झुण्ड को गाँव की ओर हाँकता हुआ छोटा कालू मन ही मन कह उठा, 'समुद्री चौपाए जरूर मिलेंगे बच्चू को!'

बादशाह के अदृश्य कपड़े
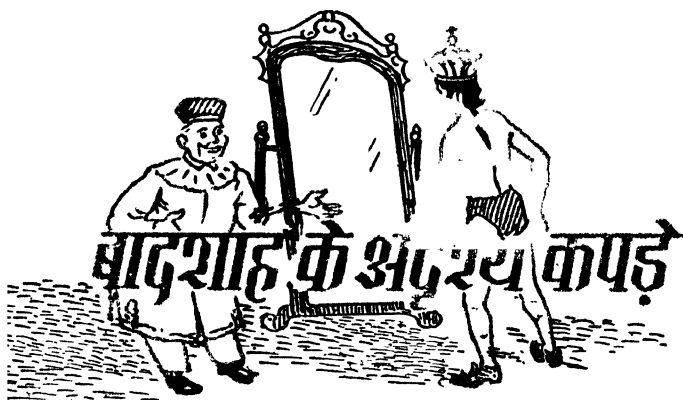
बहुत जमाने पहले एक बादशाह था। वह नये कपड़ों का इतना ज्यादा शौकीन था कि तमाम धन वस्त्रों पर ही खर्च कर देता था।

उसे अपनी सेना की चिन्ता न थी, न खेल की ओर उसका ध्यान जाता, और न शिकार की ओर। हाँ, इन चीजों में वह तभी रुचि लेता जब इनके कारण उसे अपने नये वस्त्र दिखलाने का अवसर मिलता। दिन में हर घंटे बाद उसका लिबास बदला जाता। और बादशाहों के बारे में जैसे कहा जाता है कि वह, अपनी सभा में बैठा था, इस बादशाह के बारे में कहा जाता था कि वह अपने वस्त्रों की कोठरी में बैठा था।

उसकी राजधानी में लोगों के दिन मजे से कट रहे थे। रोज बाहर से लोग उसे देखने आते। एक दिन शहर में दो धूर्त आदमी आए। उन्होंने अपने आप को जुलाहा

बताया । उन्होंने इस बात का दावा किया कि हम अत्यन्त सुन्दर और भव्य रूप-रंग के वस्त्र तैयार करते हैं; हमारे तैयार किये हुए वस्त्रों में यह गुण होता है कि अयोग्य और मूर्ख लोगों को वे दिखाई नहीं देते ।

बादशाह ने सोचा, 'ऐसे कपड़े तो सचमुच बड़े अद्भुत होंगे । अगर मैं उनका एक लिबास बनवा लूँ तो मुझे आसानी से पता लग जायेगा कि मेरे राज्य में कितने आदमी अपने पदों के अयोग्य हैं, साथ ही बुद्धिमान और मूर्ख लोगों को भी मैं अलग-अलग पहचान लूँगा । इसलिए तुरन्त ही मुझे ऐसा कपड़ा तैयार करा लेना चाहिए ।'

बादशाह ने उन जुलाहों के पास बहुत-सा धन भेज कर कहलवाया कि फौरन अपना काम शुरू कर दो ।

उन नकली जुलाहों ने फौरन अपने करघे खड़े करके, लोगों को दिखाना शुरू कर दिया कि हम बड़ी मेहनत से काम कर रहे हैं, हालाँकि वे कर कुछ भी नहीं रहे थे । उन्होंने सबसे कीमती रेशम और शुद्ध सोने का तार बादशाह से लिया, लेकिन उसे अपने झोलों में रख कर, रोज रात को देर तक खाली करघों पर कपड़ा बुनने का बहाना करते रहे ।

कुछ दिनों के बाद बादशाह ने सोचा, देखा तो जाय कि वे जुलाहे कैसा कपड़ा बुन रहे हैं । लेकिन वह जरा असमंजस

में पड़ा, क्योंकि उसे याद हो आया कि अयोग्य या मूर्ख व्यक्ति को वह बुना हुआ कपड़ा दिखाई न देगा।

उसने सोचा, पहले मैं स्वयं न जाऊँ, किसी और को भेज कर पता लगवाऊँ कि वे जुलाहे कैसा काम कर रहे हैं। शहर के हर आदमी को पता लग गया था कि कैसी अद्भुत शक्ति का कपड़ा तैयार कराया जा रहा है। हर आदमी अपने पड़ोसियों की बुद्धिमानी अथवा मूर्खता जानने को उत्सुक था।

गहरे सोच-विचार के बाद बादशाह ने तय किया कि अपने ईमानदार बूढ़े मंत्री को जुलाहों के पास भेजूँ। वह
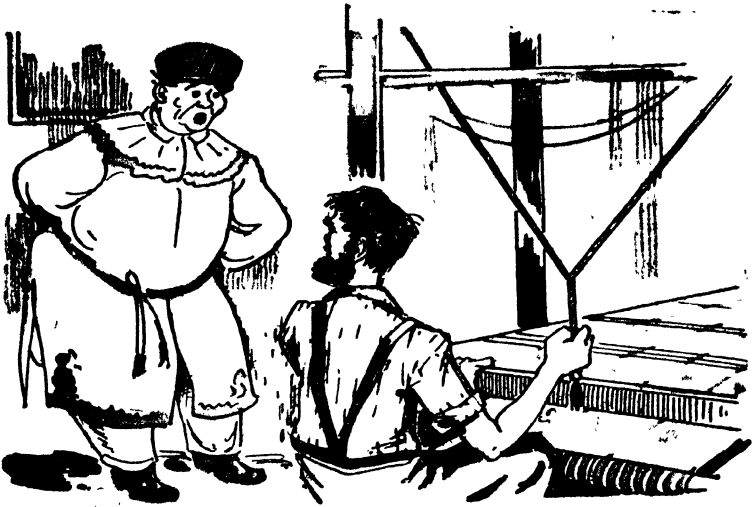
बड़ा ही बुद्धिमान है, साथ ही अपने पद के लिए वह सबसे अधिक योग्य भी है, इसलिए वह इस बात की परख अच्छी तरह कर पायेगा कि कपड़ा कैसा बन रहा है ।

बादशाह ने अपने बूढ़े मंत्री को उस स्थान पर भेजा जहाँ धूर्त जुलाहे खाली करघों पर काम करने में लगे थे । थे । वहाँ पहुँच कर बूढ़े मंत्री ने आश्चर्य से देखा और सोचा, 'करघों पर तो एक भी धागा नहीं है, इसका क्या मतलब ?' लेकिन अपने मन की बात को कह डालने की मूर्खता उसने नहीं की ।

दोनों धूर्तों ने बूढ़े मंत्री से विनयपूर्वक प्रार्थना की कि करघों के पास तक आइए । बेचारा बूढ़ा मंत्री घूर-घूर कर देखता रहा, लेकिन करघों पर धागे का नाम-निशान तक दिखाई न दिया, होता तो दिखाई देता । उसने सोचा, 'क्या मैं मूर्ख हूँ ? 'ऐसा तो मैंने कभी न सोचा था, अब भलाई इसी में है कि किसी और को इस बात का सन्देह न होने दूँ । यह तो तय है कि मैं अपने पद के लिए पूरी तरह योग्य हूँ । लोगों को ऐसा मौका क्यों दूँ कि वे मुझे अयोग्य समझें । इसलिए मुझे यह बात नहीं कहनी चाहिए कि मुझे कपड़ा दिखाई नहीं दे रहा है ।'

उनमें से एक धूर्त बोला, 'मंत्री महोदय, आप बताते क्यों नहीं कि कपड़ा आपको पसन्द है या नापसन्द ?'

मंत्री ने कहा, 'अरे भाई, इस कपड़े का तो रंग और रूप दोनों अद्‌भुत है, मैं जाकर फौरन ही बादशाह को इसकी सुन्दरता के बारे में बताऊँगा ।'

धूर्तों ने कहा, 'हम आप का बड़ा एहसान मानेंगे ।' इसके बाद उन्होंने उस काल्पनिक वस्त्र के रंग-रूप के बारे में मंत्री को विस्तार से बताया । मंत्री ने उनकी बातें ध्यान-पूर्वक सुनी ताकि बादशाह को जा कर वैसा ही बता सके । उन धूर्तों ने मंत्री से प्रार्थना की कि रेशम और सोने का तार और भिजवा दीजिए ताकि शुरू किया हुआ कपड़ा पूरा किया जा सके । जो भी रेशम और सुनहरा तार भेजा गया, वह तो उन्होंने अपने थैलों के हवाले किया; बस खाली करघों पर पूरी ताकत लगा कर काम करते रहे ।

इसके बाद बादशाह ने एक दूसरे दरबारी को जुलाहों का काम देखने के लिए भेजा । बूढ़े मंत्री के साथ जैसा हुआ था, वैसा ही इसके साथ भी हुआ । उसने सब तरफ से करघों पर नजर डाली, लेकिन उन पर उसे कोई भी चीज दिखाई नहीं दी ।

धूर्तों ने इससे पूछा, 'आपको भी कपड़े का रूप-रंग उतना ही अच्छा लग रहा है न, जितना कि बूढ़े मंत्री जी को लगा था ?'

इस आदमी ने सोचा, 'मैं मूर्ख नहीं हूँ, इतना मुझे विश्वास है। तो फिर यही हो सकता है कि मैं अपने इस शानदार पद के योग्य नहीं हूँ। बड़ी अजीब बात है! जो हो, मैं किसी को भी इस बात का भेद न मिलने दूँगा।' इसलिए इसने भी अनदेखे कपड़े की, उसके रूप-रंग की खूब तारीफ की। बादशाह के पास जा कर उसने भी वैसा ही कह दिया।

अब बादशाह के मन में आया कि मै भी चल कर कपड़े को बुना जाता देखूँ। इसलिए वह कुछ चुने हुए अफसरों को साथ ले कर वहाँ पहुँचा। उन अफसरों में वे दोनों भी थे जो कपड़े की तारीफ कर चुके थे। धूर्तों ने जब देखा कि बादशाह स्वयं आ रहा है तो वे और भी मेहनत से काम करने लगे, हालाँकि करघे पर एक भी धागे का पता न था।

जो लोग पहले कपड़े की तारीफ कर चुके थे, उन दोनों ने समझा, दूसरे लोगों को तो सचमुच का कपड़ा दिखाई दे ही रहा होगा। इसलिए बादशाह का ध्यान करघे की ओर खींच कर वे बोले, 'देखिए हुजूर, कितने सुन्दर और शानदार रूप-रंग का कपड़ा तैयार हो रहा है।'

बादशाह ने मन ही मन कहा, 'यह सब क्या है? मुझे तो कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। मैं मूर्ख हूँ, या बादशाह होने के अयोग्य? इससे ज्यादा भयानक बात मेरे लिए और क्या होगी?' फिर वह जोर से कह उठा, 'हाँ हाँ, कपड़ा
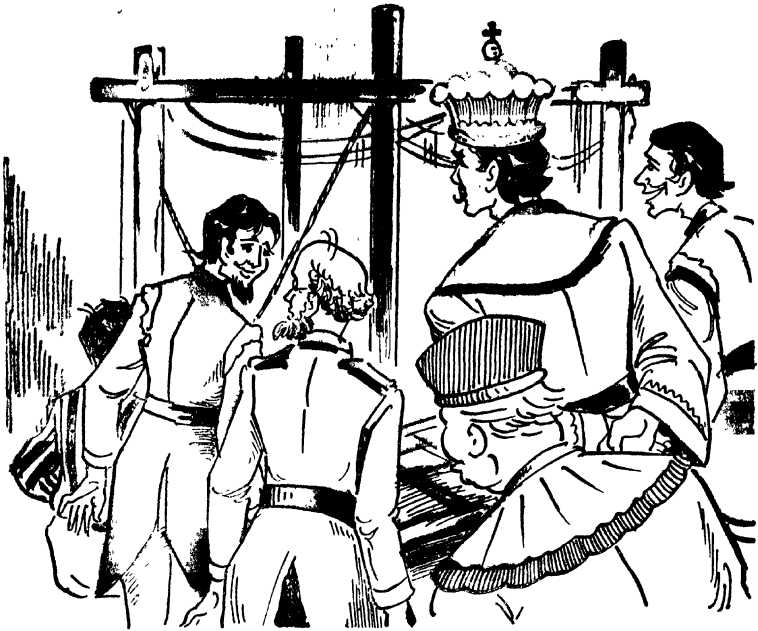
वास्तव में सुन्दर है और मेरी मनपसन्द का है।' खाली करघों की ओर देख कर वह मुस्कुराया। दो अफसर जब कपड़े की इतनी तारीफ कर चुके थे, बादशाह कैसे कह देता कि वह मुझे दिखाई नहीं दे रहा है!

साथ के तमाम लोगों ने भी घूर-घूर कर देखा, लकिन करघों पर किसी को भी कुछ दिखाई नहीं दिया। तो भी वे सब कह उठे, 'वाह! कितना बढ़िया है।' और उन्होंन

बादशाह से अनुरोध किया कि आनेवाले उत्सव के लिए, इस कपड़े से वह अपनी नई पोशाक बनवायें। 'बहुत ठीक, बहुत ठीक' चारों तरफ यही आवाज फैल गई; सभी लोग बड़े खुश दिखाई दिए। बादशाह भी बहुत खुश हुआ, और उसने उन धूर्तों को ऊँचे सम्मान का एक-एक तमगा दिया, और उन्हें 'जुलाहा पण्डित' की उपाधियाँ दीं।

उत्सव से पहले वे धूर्त लोग एक साथ सोलह रोशनियों के प्रकाश में जाग कर रात भर काम करते रहे, ताकि सब लोग जान जाएँ कि राजा के लिए नये कपड़े तैयार करने में वे किस तरह जुटे हुए हैं।' वे करघे पर से कपड़ा लेने, कैंचियों से हवा में कच्-कच् करने और बिना धागे की सुइयों से सिलने का अभिनय करते रहे।

अन्त को वे बोले, 'देखो, अब बादशाह की पोशाक तैयार हो गई।'

बादशाह अपने तमाम बड़े-बड़े अफसरों के साथ जुलाहों के पास पहुँचा। उन धूर्तों ने ऐसा बहाना किया, मानो कोई चीज ऊपर उठा रहे हों और बोले, 'यह है बादशाह सलामत का पैजामा, यह है कुरता, और यह रहा चोंगा। पूरी पोशाक का वजन चिड़िया के एक पंख से ज्यादा नहीं है, इसे पहनने पर लगता है मानो कुछ पहना ही नहीं है, यही इस कपड़े का गुण है।'

सब लोग कह उठे, 'हाँ, ठीक है' हालाँकि उनमें से कोई भी कपड़े की झलक तक न देख पाया ।

धूर्तों ने बादशाह से कहा, 'आप कृपया, अपने कपड़े उतार दें तो हम आपको आइने के सामने नया लिवास पहना दें ।'

वे धूर्त जब बादशाह को नये कपड़े पहनाने का अभिनय कर चुके तो बादशाह ने आइने में अपने आप को सब तरफ से देखा ।

वे धूर्त कह उठे, 'बादशाह सलामत इस नये लिवास में कैसे भले लग रहे हैं । यह लिवास भी उन पर खूब चुस्त बैठा है । क्या बढ़िया रूप और रंग है इसका । बस, बादशाह के ही योग्य है यह !'

उत्सव की तैयारी करने वाले नौकर ने बताया कि जिस चँदोवे के नीचे बादशाह चलेंगे, वह तैयार है ।

बादशाह ने कहा, 'मैं तैयार हूँ । मेरे कपड़े अच्छे लग रहे हैं न ?' फिर उसने आइने में अपने आप को चारों ओर से देखा मानो शानदार कपड़ों को देख रहा हो ।

जिन नौकरों का काम बादशाह के वस्त्रों के छोर पकड़ कर पीछे-पीछे चलना होता है, वे इस तरह जमीन पर झुके मानों वास्तव में कपड़े के छोर पकड़ने को झुके हों, और उसी प्रकार पीछे-पीछे चलने लगे । वे ही क्यों स्वयं को मूर्ख अथवा अयोग्य सिद्ध होने देते ?

शहर की सड़कों पर जुलूस के बीचोबीच चँदोवे के नीचे बादशाह चला। सब ओर खड़े हुए और खिड़कियों में से देखनेवाले सभी लोग कहते जाते थे–'हमारे बादशाह के कपड़े कैसे शानदार और अद्भुत हैं, उनके छोर भी कितने सुन्दर हैं!' उन लोगों में से कोई भी यह नहीं जताना चाहता था कि ऐसे बढ़िया कपड़े उसे दिखाई नहीं दे रहे हैं। जो भी जताता वह या तो स्वयं को मूर्ख सिद्ध करता, अथवा अयोग्य।

इससे पहले राजा की किसी भी पोशाक का लोगों पर इतना असर नहीं हुआ था, जितना कि इन कपड़ों का जिन्हें कोई देख ही नहीं पा रहा था।

एकाएक, एक छोटा बच्चा बोल उठा, 'अरे! 'बादशाह तो एक भी कपड़ा नहीं पहने हैं।'

बच्चे के पिता ने कहा, 'लो सुनो, यह अबोध बालक क्या कह रहा है !' लोग एक-दूसरे से काना-फूँसी में बच्चे की बात को दुहराने लगे ।

अन्त में सब लोग एक साथ बोल पड़े, 'बादशाह तो एक भी कपड़ा नहीं पहने हैं ।'

अब बादशाह बड़े असमंजस में पड़ा । वह जानता तो था ही कि लोगों की बात सही है । साथ ही, वह यह भी जानता था कि अब जुलूस को भंग करने में बुराई है । छोर पकड़ कर चलनेवाले नौकर और भी मुस्तैदी से इस बात का नाटक करने लगे कि वे सचमुच का छोर पकड़े हैं, हालाँकि वहाँ छोर-वोर कुछ न था ।

बहुत जमाना गुजरा, चीन देश में एक बादशाह था। उसका महल दुनिया का सबसे सुन्दर महल था। वह महल पूरा का पूरा बहुत उम्दा और कीमती चीनी मिट्टी का बना था। लेकिन वह नाजुक भी इतना था कि उसे छूते डर लगता था, कहीं टूट न जाय। महल का बगीचा सबसे सुन्दर फूलों से भरा रहता था। सबसे बड़ी बात यह थी कि महल

और बगीचे में सब तरफ चांदी के घुंघरू बँधे थे। लोग उधर से गुजरते तो वे घुंघरू बज उठते थे, इस तरह किसी भी गुजरने-वाले को पता लगे बिना नहीं रहता था।

बगीचे में हर चीज बड़ी अच्छी तरह सजाई

गई थी, और वह था भी इतना लम्बा चौड़ा कि वहाँ के मालियों तक को उसके ओर छोर का पता न था। उसके पार एक सुन्दर जंगल था, जिसमें ऊँचे-ऊँचे पेड़ थे। जंगल के बाद समुद्र शुरू हो जाता था। जंगल समुद्र के किनारे तक फैला हुआ था। समुद्र बहुत बाहर था और घने नीले रंग का दिखाई देता था। बड़े-बड़े समुद्र भी उसमें किनारे तक आ सकते थे। समुद्र के किनारे के पेड़ों की शाखों पर एक बुलबुल रहती थी। उसका गाना इतना मीठा होता था कि मछुए अपना काम छोड़ कर उसे सुनने में लीन हो जाते थे।

बादशाह की राजधानी में दुनिया के हर हिस्से से यात्री आते रहते थे। वे सभी उस नगर की, वहाँ के महल और बगीचे की बड़ी प्रशंसा करते थे। बुलबुल का गाना सुन कर तो हर कोई यही कह उठता था कि इससे बढ़ कर और कुछ नहीं है।

अपने-अपने घर लौट कर वे यात्री उस बुलबल के गाने की प्रशंसा इस प्रकार करते कि हमने अब तक जो भी कुछ देखा और सुना है, वह उन सब से बढ़ कर है। समुद्र के किनारे के जंगल में रहनेवाली उस बुलबुल पर कवि लोग सुन्दर-सुन्दर कविताएँ लिखते। उनकी उन कविताओं की पुस्तकें दुनियाभर में पहुँचतीं। एक बार ऐसी कविताओं

की एक पुस्तक बादशाह के पास भी पहुँची । अपने बगीचे में सुनहरी कुरसी पर बैठ कर वह उन कविताओं को बारबार पढ़ता और खुशी से झूमता रहा । नगर, महल और बगीचे के सुन्दर वर्णनों से वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ । लेकिन पुस्तक में लिखा था—'बुलबुल से बढ़ कर और कुछ नहीं है ।'

बादशाह कह उठा, 'यह कौन सी बुलबुल है ? मैं तो उसके बारे में कुछ भी नहीं जानता । मेरे राज्य में कहाँ है ऐसी चिड़िया ? और फिर मेरे ही बगीचे में ! मैंने तो कभी नहीं सुना उसका गाना । सच है, पुस्तकों से बहुत जानकारी बढ़ती है ।'

बादशाह ने अपने प्रधान मंत्री को बुलवाया । और कोई आदमी तो बादशाह से बात करने का भी साहस नहीं कर सकता था ।

बादशाह उससे बोला, 'सुना है कि यहाँ एक अद्भुत पक्षी रहता है । उसे बुलबुल कहते हैं । यह भी कहा गया है कि उसका गाना मेरे राज्य भर की और तमाम चीजों से बढ़िया है । मुझे आज तक उसके बारे में किसी ने क्यों नहीं बताया ?'

प्रधान मंत्री ने उत्तर दिया, 'महाराज, मैंने भी आज तक उसके बारे में कभी नहीं सुना, शायद वह कभी दरबार में लाई ही नहीं गई ।'

बादशाह ने कहा, 'आज ही शाम को वह गाने के लिए मेरे सामने हाजिर की जाए ! दुनिया भर को मेरी ऐसी चीजों का पता है, जिनके बारे में मैं स्वयं कुछ भी नहीं जानता ।'

प्रधान मंत्री बोला, 'जो आज्ञा । उसके बारे में आज तक मुझे किसी ने कुछ नहीं बताया है । मैं उसकी तलाश करता हूँ ।'

लेकिन प्रधान मंत्री को बुलबुल का पता लगता भी कैसे ! महल के कोने-कोने में जा कर उसने लोगों से पूछा, लेकिन किसी ने भी नहीं बताया कि हमने उस बुलबुल के

बारे में सुना है। इसलिए बादशाह के पास जा कर वह बोला, 'हो सकता है महाराज, कि यह पुस्तक लिखनेवाले की कोरी कल्पना ही हो। पुस्तक में लिखी सभी बातें विश्वास करने योग्य नहीं होतीं, बहुत-सी बातें केवल काल्पनिक भी होती हैं।'

बादशाह बोला, 'लेकिन जिस पुस्तक में मैंने बुलबुल के बारे में पढ़ा है, वह जापान के शाहंशाह ने मेरे पास भेजी है। उसमें कोई गलत बात नहीं हो सकती। उस बुलबुल का गाना सुनने की इच्छा को मैं रोक नहीं पा रहा हूँ। शाम तक वह मेरे पास आ जानी चाहिए। शाम को भोजन करने के समय तक अगर वह नहीं लाई गई तो मैं सभी दरबारियों को कोड़ों से पिटवाऊँगा।

प्रधान मंत्री ने फिर दौड़-भाग शुरू कर दी। उसके साथ बहुत से दरबारी भी इधर उधर दौड़ने लगे क्योंकि कोड़ों की मार किसे पसन्द होती? इधर-उधर लोगों से उस बुलबुल के बारे में पूछ-ताछ की गई, जिसके बारे में सारी दुनिया में चर्चा थी, लेकिन दरबार के लोगों को जिसका कुछ भी पता न था। अन्त में रसोईघर में काम करनेवाली एक लड़की मिली। उसने बताया, 'बुलबुल! हाँ हाँ, मैं उसे अच्छी तरह जानती हूँ, कितना मीठा गाती है वह! मेरी माँ समुद्र के किनारे रहती है। हर रोज शाम को मैं

यहाँ की जूठन में से थोड़ा-सा उसे देने जाती हूँ। लौटते समय मैं कुछ देर को जंगल में रुक कर आराम करती हूँ। तभी मुझे बुलबुल का गाना सुनाई देता है। उसे सुन कर मेरी आँखों से खुशी के आँसू निकल पड़ते हैं। ऐसा लगता है मानो मेरी माँ मुझे प्यार कर रही हो।'

प्रधान मंत्री ने उसस कहा, 'अरी लड़की, अगर तुम हमें उस बुलबुल के पास ले चलोगी तो, मैं तुम्हें रसोईघर के मुखिया का पद दिलवा दूँगा। महाराज की आज्ञा है कि शाम तक बुलबुल दरबार में आ जाए।

वे लोग उस जँगल में पहुँच गए जहाँ बुलबुल को गाते सुना जाता था। दरबार के आधे लोग भी उनके साथ थे। लेकिन रास्ते में एक गाय रँभा उठी। उसे सुन कर नौकर कह उठे, 'देखो, बुलबुल की आवाज आ रही है। छोटी-सी चिड़िया सचमुच बहुत जोर से बोलती है। लेकिन इसे तो हमने पहले भी सुना है।'

रसोईघर की लड़की ने बताया, 'अरे, यह तो गाय रँभा रही है। बुलबुल अभी बहुत दूर है।'

इसके बाद तालाब में मेंढक टर्रा उठे। मन्दिर का पुजारी बोला, 'लो सुनो, बुलबुल गा रही है, कितना अच्छा गाना है, बिल्कुल मन्दिर के घंटों जैसा।'

रसोईघर की लड़की ने कहा, 'अरे, यह तो मेंढकों की आवाज है। बुलबुल का गाना अभी कुछ देर बाद सुनाई देगा।',

इसके बाद बुलबुल का गाना सचमुच शुरू हो गया।

रसोईघर की लड़की ने कहा, 'हाँ, सुनो, अब गा रही है वह।' फिर उसने एक डाल पर बैठी छोटी-सी भूरी चिड़िया की ओर इशारा करके कहा, 'वहाँ बैठी है वह।' इसके बाद वह बुलबुल से बोली, 'प्यारी बुलबुल रानी, हमारे महाराज की इच्छा तुम्हारा गाना सुनने की है।'

बुलबुल ने कहा, 'बड़ी खुशी से ।' और वह गाने लगी । सुन कर सब लोग मुग्ध हो उठे । प्रधान मंत्री ने उसकी बड़ी प्रशंसा की ।

बुलबुल ने पूछा, 'क्या महाराज के लिए मैं एक बार फिर गाऊँ ? ' उसने समझा कि बादशाह उन्हीं लोगों के बीच है ।

प्रधान मंत्री ने कहा, 'ओ सुन्दर बुलबुल, मैं तुम्हें आज शाम को दरबार के उत्सव में आने का निमंत्रण देता हूँ । हमारे बादशाह तुम्हारा अद्भुत गाना सुन कर बहुत प्रसन्न होंगे ।'

बुलबुल ने कहा, 'मेरे गाने का पूरा आनन्द तो इन हरे भरे पेड़ों के बीच ही मिल सकता है ।' तो भी वह बादशाह की इच्छा पूरी करने के लिए उन लोगों के साथ चल दी ।

सारे महल को खूब सजाया-सँवारा गया । हजारों दीपों के प्रकाश से वहाँ की सफेद दीवारें और छतें जगमगा उठीं । रास्तों में फूलों की बन्दनवारें और घंटियाँ लगाई गईं । घंटियों की आवाजों में आदमियों की आवाजें खो गईं ।

बादशाह के बैठने के बड़े कमरे के बीचोबीच, बुलबुल के बैठने के लिए एक सोने का मंच तैयार किया गया । सारा दरबार वहाँ आ जुटा । रसोईघर की लड़की को अब रसोईघर के मुखिया का पद मिल गया था, इसलिए वह

भी वहीं थी। सभी दरबारी बढ़िया वस्त्र पहने थे, और सभी की दृष्टि बुलबुल पर अटकी थी। बादशाह ने बुलबुल को गाना शुरू करने का इशारा किया। बुलबुल ने ऐसा अद्भुत गाया कि राजा की आँखों से खुशी के आँसू बह कर गालों पर ढुरक आए। इसके बाद बुलबुल ने और भी मीठा गा कर, सुनने वालों के हृदय द्रवित कर दिए। बादशाह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने बुलबुल को अपन सोने का हार पहना दिया। लेकिन बुलबुल ने यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि इनाम तो मुझे पहले ही मिल चुका ; वह बोली, 'मैंने बादशाह की आँखों में आँसू देखे, यही मेरे लिए सबसे बड़ा इनाम है। शाही आँसुओं का बड़ा महत्व होता है।' इसके बाद उसने अपना प्यारा मीठा गाना फिर शुरू कर दिया।

दरबार की कुछ स्त्रियाँ कह उठीं, 'ऐसी मोहित करने वाली आवाज हमने पहले नहीं सुनी थी।' और वे अपने-अपने मुंह में पानी डाल कर गले को उसी तरह चलाने की कोशिश करने लगीं जैसे कि बुलबुल चला रही थी, ताकि वे भी बुलबुल जैसी हो जाएँ।

बुलबुल को बड़ी सफलता मिली। अब उसे दरबार में ही एक पिंजरे में रखा गया। दो बार दिन में, और एक बार रात में उसे उड़ने की छूट दी गई। उसकी सेवा में

बारह नौकर रखे गए। बुलबुल की टाँग में एक रेशमी डोरी बाँध दी गई। जब वह उड़ती तो नौकर उस डोरी को कस कर पकड़े रहते। इस तरह की उड़ान में बुलबुल को कोई मजा न आता।

सारे शहर में बुलबुल की ही चर्चा होने लगी। जब भी दो आदमी मिलते तो एक सिर्फ 'बुल' कहता और दूसरा उसे पूरा कर देता। ग्यारह बच्चों के नाम भी बुलबुल रखे गए, हालाँकि उनमें से किसी का स्वर भी वैसा सुन्दर न था। एक दिन बादशाह को एक पार्सल मिला, जिस पर लिखा था 'बुलबुल'।

बादशाह ने सोचा, 'हमारी प्रसिद्ध चिड़िया के बारे में यह कोई नई किताब होगी। लेकिन किताब की जगह वहाँ डिब्बे में बन्द एक मशीन जैसी थी। वह एक कृत्रिम बुलबुल थी। बड़ी होशियारी से उसे सच्ची बुलबुल का-सा रूप दिया गया था। उसके ऊपर हीरे, मोती और नीलम जड़े थे। जब उसमें चाभी भर दी जाती तो वह असली बुलबुल की तरह कोई राग गा उठती, उस बीच सोने और चाँदी से बनी उसकी पूँछ ऊपर-नीचे हिलती रहती। उसकी गर्दन में एक पट्टा बँधा था जिस पर लिखा था, 'जापान के शाहंशाह की बुलबुल के मुकाबले चीन के शाहंशाह की बुलबुल बहुत मंद है।'
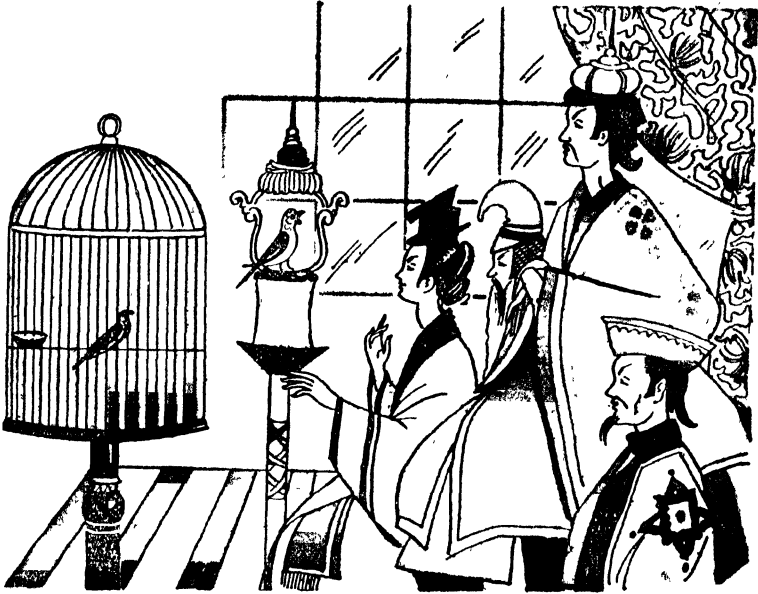
सब लोग कह उठे, 'यह तो बहुत अद्भुत है। जो आदमी पार्सल लेकर आया था उसे, 'शाही बुलबुल लाने वाला' की उपाधि दी गई।

लोगों ने कहा, 'अब दोनों बुलबुलें साथ-साथ गाया करेंगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। असली बुलबुल अपने ढंग से गाती थी और मशीनी बुलबुल में से पुरजों द्वारा स्वर निकलता था।

मशीनी बुलबुल के कारीगर ने कहा, 'यह इस का दोष नहीं है, यह तो गाने के नियमों का ठीक-ठीक पालन करके ही गाती है।'

अब मशीनी बुलबुल अकेली ही गाती। यह असली बुलबुल की तरह ही सफल हुई। फिर यह देखने में भी ज्यादा सुन्दर थी, इसके पंखों में हीरे जवाहरात जगमगा रहे थे।

यह मशीनी चिड़िया तेंतीस तरह के अलग-अलग रागों में गाती थी, तो भी थकती नहीं थी। हर कोई उसे फिर फिर सुनना चाहता था। इस पर भी बादशाह की इच्छा अपनी बुलबुल का गाना सुनने की हो आई। लेकिन असली बुलबुल का अब कहीं पता न था। खुली खिड़की में से वह उन्हीं हरे-भरे पेड़ों की ओर उड़ गई थी। कोई उसे उड़ते देख भी न पाया था।

तमाम लोग असली बुलबुल को बुरा-भला और गद्दार कहने लगे। उन्होंने यह कह कर सन्तोष किया कि हमारे पास उससे भी अच्छी बुलबुल है। मशीनी बुलबुल के कारीगर ने अपनी चिड़िया की तारीफ के पुल बाँध दिए। उसने कहा—'असली बुलबुल और इसका कोई मुकाबला नहीं, यह तो उससे लाख गुना अच्छी है, सिर्फ इसलिए नहीं कि इसमें हीरे जवाहरात जड़े हैं, बल्कि यह गाती भी उससे कहीं अच्छा है।'

उसने आगे कहा, 'आप लोग जानते हैं कि आगे क्या होने वाला है, इस बारे में कुछ भी निश्चित नहीं रहता। लकिन इस कृत्रिम चिड़िया के बारे में हर बात निश्चित है। इसके पुरजों को अलग-अलग करके दिखाया जा सकता है कि वे कैसे काम करते हैं।'

हर कोई कह उठा, 'यही मेरा भी विचार है।' कारीगर को वह सब दिखाने की आज्ञा मिली। सब लोग देख कर इतने खुश हुए मानो चाय पी रहे हों, क्योंकि चीन के लोग चाय से ही खुश होते हैं। लेकिन बूढ़ा मछुआ जिसने असली बुलबुल का गाना भी सुना था, इस मशीनी बुलबुल का गाना सुन कर कह उठा, 'यह अच्छा तो है, फिर भी मुझे लगता है कि इसमें किसी बात की कमी है।'

अब असली बुलबुल को देश निकाला दे दिया गया और कृत्रिम चिड़िया को बादशाह के पलंग के पास एक रेशमी गद्दे पर सम्मानपूर्वक बैठा दिया गया। बहुत-सा सोना और हीरे जो उसे भेंट किए गए थे, वे उसके चारों ओर रख दिये गए, और उसे 'शाही दरबार की गायिका' की उपाधि दी गई।

कारीगर ने इस मशीनी चिड़िया के बारे में पच्चीस पुस्तकें लिखीं। उन पुस्तकों में चीनी भाषा के सबसे बड़े और कठिन शब्दों का प्रयोग किया गया। हर किसी ने कहा कि हमने इन पुस्तकों को पढ़ कर समझ लिया है, वरन् वे बेवकूफ ठहराए जाते।

साल भर तक यही चलता रहा। बादशाह, दरबारियों और प्रजा के सभी लोगों की जबान पर इस कृत्रिम बुलबुल के गाने रहने लगे, वे लोग इसके साथ-साथ गाते। यहाँ

तक कि गलियों में छोटे बच्चे भी वे गाने गाते फिरते। खुद बादशाह भी मगन हो कर गाता।

एक दिन शाम को यह मशीनी चिड़िया गा रही थी, और बादशाह लेटा हुआ सुन रहा था कि एकाएक जोर की आवाज के साथ चिड़िया फट पड़ी और उसके पुरजे इधर-उधर बिखर गए, गाना खत्म हो गया।

बादशाह घबरा कर उठ बैठा। उसने अपने प्रधान वैद्य को बुलवाया, लेकिन वैद्य कुछ न कर सका। इसके बाद एक घड़ीसाज बुलवाया गया और बहुत कुछ माथापच्ची करने के बाद चिड़िया को थोड़ी बहुत दुरुस्त हालत में लाया गया। घड़ीसाज ने कहा कि इसके पुरजे घिसपिट गए हैं, और उन्हें ऐसा नहीं बनाया जा सकता कि वे ठीक-ठीक गा सकें, इसलिए इसको अधिक नहीं गवाना चाहिए।

अब मशीनी चिड़िया से साल भर में मुश्किल से एक बार गाना सुना जाता था, इसलिए सब लोगों को बड़ा दुःख हुआ। कारीगर ने लम्बे-लम्बे शब्दों से भरा एक व्याख्यान दिया कि चिड़िया का अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है।

पाँच साल बीतने पर सारे राज्य में कुहराम मच गया। लोग बादशाह को दिल से प्यार करते थे, अब वही बादशाह बीमार पड़ा था, और उसके बचने की आशा न थी। नये बादशाह का चुनाव भी कर लिया गया।

बादशाह अपने शाही बिस्तर पर पड़ा था, उसका चेहरा पीला पड़ गया था। दरबारियों ने समझा कि यह मर गया है, इसलिए वे सब नए बादशाह को प्रणाम करने चल दिए।

लेकिन बादशाह मरा न था। वह अपने सुनहरी झालर के मखमली पर्दों वाले शाही कमरे में पड़ा था। खुली खिड़की से आ कर चाँदनी बादशाह और मशीनी चिड़िया पर पड़ रही थी।

बादशाह को साँस लेने में भी कठिनाई हो रही थी। उसे लग रहा था मानो उसकी छाती पर भारी बोझ रखा हो। उसने आँखें खोल कर देखा तो साक्षात् मौत खड़ी थी। मौत ने बादशाह का मुकुट पहन लिया था, उसके एक हाथ में सुनहरा खड्ग था और दूसरे में शाही पताका। मखमली पर्दों के बीच में से अजीब-अजीब सूरतें झाँक रही थीं, उनमें से कुछ डरावनी थीं और कुछ प्रसन्न। वे बादशाह के पाप और पुण्य थे जो अब सामने आ खड़े हुए थे। उसकी छाती पर मौत का दबाव था।

वे सब बादशाह से पूछने लगे, 'यह बात भूल गए क्या? वह बात तुम्हें याद है न?' बादशाह के माथे पर पसीना झलक आया।

बादशाह कह उठा, 'ऐसा अनुभव तो मुझे पहले कभी नहीं हुआ था। संगीत छेड़ो, ढोल बजाओ, ताकि मैं इनकी

बातें न सुन सकूँ। लेकिन वहाँ उसकी आज्ञा सुनने वाला कोई न था। उन सूरतों की आवाजें बन्द न हुईं। मौत उन बातों पर बराबर सर हिलाती रही।

बादशाह कह उठा, 'संगीत, संगीत! ओ मीठा गाने-वाली चिड़िया, गाओ न! मैंने तुम्हें सोना और बहुत से जवाहरात दिए हैं, अपना सोने का हार भी तुम्हारे गले में पहना दिया है। गाओ, मेरे लिये गाओ!' लेकिन चिड़िया मौन रही। उसमें चाभी भरनेवाला तो वहाँ कोई था ही नहीं, और बिना चाभी के वह गाती कैसे! मौत अपनी शून्य दृष्टि से बादशाह की ओर टकटकी लगाए देख रही थी,

और बिल्कुल खामोश थी। लेकिन एकाएक खिड़की में से अत्यन्त मधुर गाने का स्वर आने लगा। वह असली बुलबुल का स्वर था। बुलबुल ने बादशाह की बीमारी के बारे में सुन लिया था, इसलिए वहाँ पहुँच कर वह बाहर एक शाखा पर बैठ कर नई आशा का राग गाने लगी थी। उसके गाने के प्रभाव से वे डरावनी सूरतें उदास पड़ गईं, और बादशाह के क्षीण शरीर में रक्त का प्रवाह बढ़ चला। मौत भी बुल-बुल का गाना सुन कर कह उठी, 'गाओ, प्यारी बुलबुल! और गाओ।'

बुलबुल ने मौत से कहा, 'तुम मुझे बादशाह का मुकुट, खड्ग और पताका दे दो।'

मौत ने उसे वे चीजें दे दीं। बुलबुल ने फिर गाना शुरू कर दिया। अन्त में मौत धुंधली परछाईं की तरह वहाँ से उड़ गई।

बादशाह बुलबुल से बोल उठा, 'ओ स्वर्गीय संगीत की चिड़िया, मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ। मैंने तुम्हें अपने राज्य से देश निकाला दे दिया था, तो भी तुम उन भूत प्रेतों की सूरतों को मेरे पास से भगाने के लिए आकर गाने लगीं। तुमने तो स्वयं मौत को भी मोहित कर दिया, वह भी मेरी छाती पर से उठ भागी। मैं तुम्हारा बदला किस तरह चुकाऊँगा?

बुलबुल ने जवाब दिया, 'बदला तो आपने चुका दिया। मैंने आपकी आँखों में वैसे ही आँसू देखे जैसे कि पहली बार आपके सामने गाने पर देखे थे। मैं उन्हें भूल नहीं सकती। एक गायक के लिए आपके आँसुओं की याद से ज्यादा कीमती जवाहरात भी नहीं हो सकते। अब आप सो जाइए। जब जागेंगे तो स्वस्थ और ताजे होंगे। अब मैं आपको सुलाने के लिए एक बार फिर गाती हूँ।'

बुलबुल फिर गाने लगी। बादशाह को गहरी नींद आ गई। बड़ी मीठी और स्वास्थ्यकर नींद थी वह!

जब बादशाह स्वस्थ होकर जागा तो खिड़की में से सूरज की किरणें आ रही थीं। कोई भी नौकर वहाँ नहीं था, उन सब ने तो बादशाह को मरा हुआ समझ लिया था। बुलबुल अब भी गा रही थी।

बादशाह ने बुलबुल से कहा, 'अब तुम हमेशा मेरे साथ रहोगी। जब तुम्हारी इच्छा हो तभी गाना। इस मशीनी चिड़िया के मैं अभी टुकड़े-टुकड़े किये डालता हूँ।'

बुलबुल ने कहा, 'ऐसा मत कीजिए। इसके वश में जो कुछ था, वह इसने किया। इसकी देखभाल करते रहिए। मैं आपके महल में नहीं रह सकती, जब मन करेगा चली आया करूँगी। शाम को आकर मैं आपकी खिड़की के पास की डाल पर बैठ कर सुख-दुःख के गाने गाया करूँगी। आपके

मुकुट से ज्यादा प्यारा मुझे आपका दिल है। आप मुझसे एक वायदा करें।'

बादशाह ने कहा, 'जो चाहो' बादशाह राजसी वेशभूषा में उठ खड़ा हुआ। बुलबुल ने कहा, 'आपकी प्रजा के सुख-दुःख को मैं आपके सामने आकर गाया करूँगी। लेकिन किसी को भी इस बात का पता नहीं लगना चाहिए कि आपका परिचय उस छोटी-सी चिड़िया से है, जो आपको ये सब बातें आकर बताती है।'

इसके बाद बुलबुल उड़ गई। नौकर लोग बादशाह का शव उठाने आए। देखते क्या हैं कि बादशाह जीवित है और स्वस्थ है। बादशाह ने जब उनसे बातें की तो वे सब दंग रह गए।

सारस
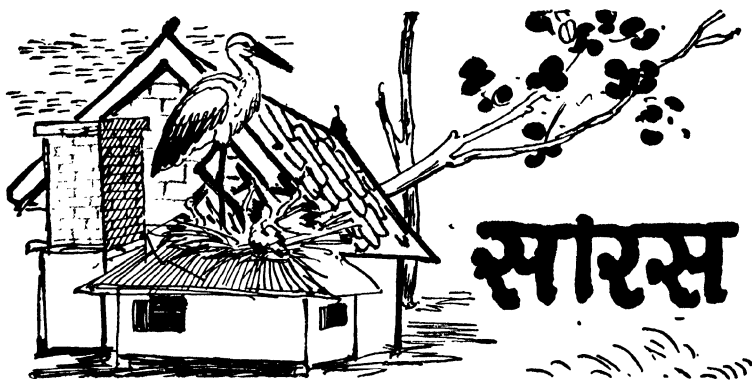
एक छोटे-से गाँव की कोने की झोपड़ी पर एक सारस घोंसला बना कर रहता था। उसी में मादा सारस अपने चार बच्चों के साथ रहती थी। बच्चों की नुकीली चोंचें अभी लाल नहीं हुई थीं, काली ही थीं। वे कभी-कभी घोंसले में से उन चोंचों को बाहर निकालते थे।

नर सारस बड़ी मुस्तैदी से उन पर पहरा देता था। वह सोचता था 'एक सन्तरी के पहरे में रहने से मेरी पत्नी की शान बढ़ती है।'

नीचे सड़क पर लड़कों का एक दल आ कर खेला करता था। जब भी उनमें से किसी को वे सारस दिखाई दे जाते, सब लड़के उन्हें चिढ़ाने के लिए कुछ गा उठते।

एक बार सारस के बच्चे अपनी माँ से बोले, 'सुनो, ये लड़के क्या कह रहे हैं। ये कहते हैं कि हम सब मार डाले जाएँगे।'

मादा सारस ने कहा, 'इनकी बात पर ध्यान ही मत दो, अपने आप ये चुप हो जाएँगे।'

लेकिन लड़के गा-गा कर सारसों को चिढ़ाते रहे। उनमें से एक लड़का, जिसका नाम प्रीतम था, वही चुप रहा। उसने कहा कि पक्षियों को चिढ़ाना पाप है, मैं इसमें तुम्हारा साथ न दूँगा।
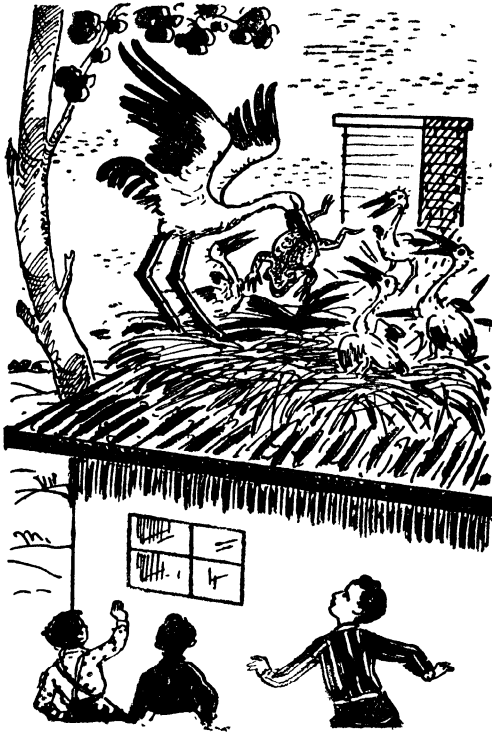
मादा सारस ने अपने बच्चों को यह कह कर फिर ढारस बँधाया, कि उन लोगों की ओर ध्यान मत दो, देखो तो तुम्हारे पिता जी कितनी मुस्तैदी से एक टाँग पर खड़े पहरा दे रहे हैं।

सारस के बच्चे घोंसले में खूब भीतर की ओर दुबक कर बोले, 'हमें तो डर लग रहा है।'

इसके बाद हर दिन का यही क्रम हो गया। लड़कों का गा-गा कर चिढ़ाना बन्द नहीं हुआ, सारस के बच्चों का डरना और मादा सारस का उन्हें समझाना भी चलता रहा।

मादा सारस अपने बच्चों से बोली,' इन लड़कों की बात का विश्वास मत करो। जल्दी ही मैं तुम्हें उड़ना सिखा दूँगी। तब हम लोग उड़ कर घास के मैदान में जाया करेंगे और मेंढकों को देखा करेंगे। मेंढक 'टर्र-टर्र' करके गाया करेंगे। और हमें प्रणाम किया करेंगे। फिर हम उन्हें खा जाया करेंगे।'

सारस के बच्चों ने पूछा, 'फिर क्या होगा?'

मादा सारस ने जवाब दिया, 'फिर देश भर के सारस एक जगह इकट्ठे होंगे और शरद ऋतु में उड़ने का अभ्यास करेंगे। तब तक तुम सब को बहुत अच्छी तरह उड़ना आ जाना चाहिए, क्योंकि उड़ने की परीक्षा में जो भी असफल रहेगा, वह सरदार सारस की लम्बी चोंच से मार डाला जायगा।'

सारस के बच्चे बोल उठे, 'तब तो लड़के जो गा रहे हैं, वह सच है । हम मार डाले जाएँगे ।'

मादा सारस ने कहा, 'अरे नहीं, मेरी बात सुनो, उन लड़कों की बात पर ध्यान मत दो । जब मैं तुम्हें उड़ना सिखाऊँ तो बड़े ध्यान से सीखना । जब सरदार हमारा उड़ना देख लेगा तो हम समुद्र के पार के गर्म देशों को उड़ जाएँगे । हम मिस्र देश को जाएँगे वहाँ पत्थर की तीन बड़ी-बड़ी इमारतें हैं, जो आकाश को छूती हैं । वे 'पिरा-मिड' हैं और इतने पुराने हैं कि कोई सारस कल्पना भी नहीं कर सकता । उस देश में एक चौड़ी नदी है । जब हम
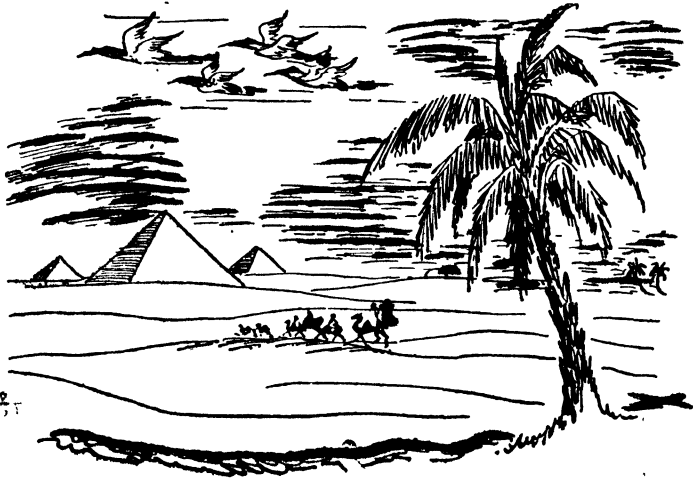
वहाँ पहुँचेंगे तो उसका पानी किनारों से इधर-उधर फैल कर कीचड़ कर देगा। हम उस कीचड़ पर घूम-घूम कर मेंढकों को पकड़ कर खाएँगे।'

सारस के बच्चे कह उठे, 'यह तो बड़ा अच्छा होगा।'

मादा सारस ने कहा, 'हाँ, वहाँ बड़ा अच्छा है। हम दिन भर गरम-गरम कीचड़ में घूमेंगे। यहाँ तो इतनी सर्दी है कि हरी पत्तियाँ तक नहीं मिलतीं, और यहाँ बादल जम कर बर्फ बन जाते हैं, फिर हम पर गिर पड़ते हैं।'

सारस के बच्चों ने पूछा, 'क्या इन शैतान लड़कों पर भी बर्फ गिरती है?'

मादा सारस बोली, 'नहीं, उस समय ये लोग बन्द कमरों में जा बैठते हैं और आग तापते रहते हैं, फिर ये निकल कर तब आते हैं जब हम सुन्दर गर्म देशों को उड़ जाते हैं।

नर सारस हर रोज मेंढक पकड़ लाता। उन्हें खा कर बच्चे घोंसले में ही बढ़ने लगे। अब वे सीधे खड़े हो कर बाहर की दुनिया को देखने लगे। उनका पिता तरह-तरह के खेल-तमाशे दिखा कर उनका मन बहलाता। वह अपने सिर को घुमा कर पूँछ पर रख लेता और चोंच मार-मार कर ताली बजाता, बच्चे हँस पड़ते। इसके बाद वह उन्हें तरह-तरह की कहानियाँ सुनाता।

एक दिन मादा सारस बोली, 'अब समय आ गया है कि तुम उड़ना सीख लो, इसलिए मेरे साथ चलो ।' बच्चों को घोंसले की छत के किनारे पर जाना पड़ा । वे अपने, पंखों पर शरीर तौल रहे थे और भय से काँप रहे थे ।

उनकी माँ बोली, 'मेरी ओर देखो, अपने सिरों को इस तरह साधो, पैरों को इस तरह रखो जैसे मेरे पैर रखे हैं, और पंखों को काम में लाओ । एक दो, एक दो । दुनिया में आगे बढ़ने का यही ढंग है ।'

इसके बाद वह कुछ दूर उड़ी, बच्चों ने भी वैसा करने की कोशिश की । लेकिन वे जरा-सा उछल कर और ढह कर रह गए ।

एक बच्चा घोंसले की तरफ बढ़ता हुआ बोला 'मुझे उड़ने की परवाह नहीं, यही तो होगा कि मैं गर्म देश को न जा सकूँगा ।' बोली, 'क्या कहा ? यहीं रह कर बर्फमें जम जाना चाहते हो, लड़के आ कर तुम्हें खा जाएँगे । अच्छी बात है, बुलाती हूँ उन्हें ।'

बच्चा फिर घोंसले के ऊपर की ओर फुदक कर आता हुआ बोला, 'नहीं, नहीं ।'

तीसरे दिन वे थोड़ा-थोड़ा उड़ने लगे । उसी वक्त लड़के आ कर शोर मचाने लगे ।

बच्चों ने माँ से पूछा, 'कहो तो हम नीचे की ओर उड़ कर इन लड़कों पर चोंचें मारें ।'

माँ ने जवाब दिया, 'नहीं, छोड़ो भी इन्हें । तुम्हारे लिए मेरी बात पर ध्यान देना ज्यादा जरूरी है, उनकी बात पर नहीं । अब चलो – एक दो, तीन ! हम दाहिनी ओर उड़ेंगे । एक दो तीन, अब हम बाईं ओर उड़ेंगे । हाँ, बहुत ठीक ! कल हम उस दलदल की ओर उड़ कर जाएँगे । वहाँ सारसों के बहुत से परिवार मिलेंगे । तुम्हें दिखाना होगा कि तुम कितने अच्छे हो ।'

बच्चों ने पूछा, 'लेकिन नीचे जा कर क्या हम उन शैतान लड़कों पर चोंचें नहीं मार सकते ?'

माँ बोली, 'नहीं, उन्हें चिल्लाने दो । जल्दी ही तुम बादलों के पार पिरामिडों के देश में पहुँच जाओगे, और वे लोग यहीं सर्दी में पड़े काँपते रहेंगे ।'

बच्चे आपस में कानाफूसी करने लगे, 'इन शैतान लड़कों को तो सजा देनी ही चाहिए ।'

जिस लड़के ने शोर मचाना और सारसों को छेड़ना शुरू किया था, उसकी उम्र छः साल से ज्यादा न थी ।

लेकिन सारस के बच्चों ने सोचा कि वह बड़ा आदमी है, उसे सजा मिलनी ही चाहिए। इन बच्चों का क्रोध इतना बढ़ गया कि अन्त में इनकी माँ को वायदा करना पड़ा कि लड़कों को सजा देने के लिए वह इन्हें जाने देगी, लेकिन दूर देश को उड़ने के दिन से पहले नहीं।

माँ बोली, 'पहले तो यह देखना है कि तुम उड़ने की परीक्षा में कैसे सफल होते हो। अगर तुम ठीक से न उड़े, और सरदार ने तुम्हें, अपनी चोंच से मार डाला, तब तो लड़कों की बात ही सच निकलेगी।'

बच्चों ने वायदा किया, 'हम लोग जरूर सफल होंगे।' वे पूरी सावधानी से हर रोज अभ्यास करने लगे। अब वे इतना अच्छा उड़ने लगे कि देख कर आनन्द होता था।

शरद् ऋतु आने पर तमाम सारस उड़ने की परीक्षा के लिए इकट्ठे होने लगे। लम्बी यात्रा आरम्भ करने से पहले उन्हें दिखाना था कि वे जंगलों और पहाड़ों के ऊपर कैसी खूबी से उड़ सकते हैं। इन बच्चों का काम इतना अच्छा रहा कि सरदार ने इनकी खूब तारीफ की। उसने कहा कि अब ये जहाँ भी मेढकों और सांपों को पाएँ, खा सकते हैं। बच्चों ने किया भी ऐसा ही।

फिर ये बच्चे कह उठे, 'अब शैतान लड़कों से बदला लिया जाय।'

माँ बोली, 'ठीक है, जरूर बदला लो। मैंने उनके लिए सबसे अच्छी सजा सोची है। परियों के देश के उस जलाशय को मैं जानती हूँ जिसमें मनुष्यों के बच्चे रहते हैं। हमीं उन बच्चों को ला कर उनके माँ-बापों को देते हैं। वे बच्चे इतने अच्छे होते हैं कि सभी माँ-बापों की इच्छा उनमें से एक बच्चा पाने की रहती है, और सभी लड़के चाहते हैं कि उनमें से एक बच्चा हमारा भाई या बहिन बने। इसलिए हम उस जलाशय पर जा कर उन लड़कों के लिए एक-एक बच्चा लाएँगे जिन्होंने हमें चिढ़ाया नहीं था और भद्दे गाने नहीं गाए थे।

सारस के बच्चे जोर से चीख उठे, 'लेकिन वह जो भद्दा सा शैतान लड़का है, जो हमें खूब चिढ़ाता है, उसके लिए हम क्या करेंगे ?'

माँ बोली, 'उस जलाशय में एक मरा हुआ बच्चा भी है, उस शैतान लड़के के घर हम उसी को ले जाएँगे, इससे उस शैतान लड़के को बड़ा पछतावा होगा। और हाँ, तुम्हें वह लड़का भी याद है न जिसने कहा था कि इन पक्षियों की हँसी उड़ाना पाप है ? उसके लिए हम दो बच्चे लाएँगे—एक बहिन और एक भाई। उस भले लड़के का नाम प्रीतम है, इसलिए तुम्हारा सब का नाम भी प्रीतम रहेगा।

ऐसा ही हुआ। उस बस्ती के सभी सारस आज तक प्रीतम कहलाते हैं।

सड़क की पुरानी लालटेन

क्या तुमने कभी सड़क की पुरानी लालटेन की कहानी सुनी है ? शायद वह तुम्हें रोचक न जान पड़ी हो । लेकिन जो कहानी हम कह रहे हैं, वह तुमने न सुनी होगी ।

सड़क की एक पुरानी लालटेन ने बहुत वर्षों तक सेवा की थी । अब उसे नौकरी से आराम और पेन्शन मिलनेवाली थी । आखिरी रात को खंभे पर बैठी वह रोशनी फैला तो रही थी, लेकिन उसे ऐसा लग रहा था जैसे किसी थिएटर में नाचनेवाले किसी व्यक्ति को आखिरी बार नाचते समय लगता है, क्योंकि वह जानता है कि कल के बाद हमेशा के लिए वह अकेला हो जायगा, कोई उसकी खैर-खबर भी न लेगा ।

लालटेन को डर के साथ अगले दिन का इन्तजार था । वह जानती कि उसके जीवन में अब तक जो न हुआ वह कल होगा । वह म्युनिसिपैलिटी में ले जाई जायगी और वहाँ इस बात का निर्णय होगा कि अब वह नौकरी के योग्य रह

गई है या नहीं। वहाँ इस बात का भी विचार होगा कि इसे शहर के किसी बाहरी हिस्से में लोगों को रोशनी देने के लिए भेज दिया जाय, देहात में भेजा जाए, या लोहे के कार-खाने में जहाँ इसे गला कर कोई नई चीज बनाई जा सके।

इन विचारों से बेचारी लालटेन बहुत परेशान थी।

वह डर रही थी कि अगर मुझसे कोई नई चीज बना डाली गई तब तो मैं यह भूल ही जाऊँगी कि मैं कभी सड़क की लालटेन रही थी। जो हो, इतना तो तय था कि रात के पहरेदार और उसकी पत्नी से यह जरूर अलग कर दी जायगी। उस पहरेदार से इसका इतना पुराना परिचय था कि यह स्वयं को उसके परिवार की ही मानने लगी थी। रात के चौकीदार को चौकीदारी भी तभी मिली थी, जब इस लालटेन को रोशनी करने का काम मिला था। उन दिनों चौकीदार एक फुर्तीला जवान था। अब उसे न जाने कितने साल बीत गए थे।

उन दिनों चौकीदार की पत्नी को भी गर्व था। जब वह रात के समय उधर से गुजरती तभी लालटेन पर नजर डालती, दिन में तो आँख उठा कर भी न देखती। जब चौकीदार, उसकी पत्नी और लालटेन तीनों ही बूढ़े हो गए तो पत्नी की भी वह अकड़ न रही, अब वह अक्सर लालटेन को साफ करके उसमें तेल भी भर देती थी। चौकीदार

ग्रौर उसकी पत्नी थे भी ईमानदार। उन्होंने कभी भी लालटेन को एक बूंद तेल तक का धोखा नहीं दिया था।

सड़क पर लालटेन की यह ग्राखिरी रात थी। कल उसे म्युनिसिपैलिटी में चला जाना था। इन विचारों से वह उदास थी। इसीलिए उसकी रोशनी भी मद्धिम थी। इसके ग्रलावा उसके मन में ग्रौर भी विचार ग्रा रहे थे। ग्रसंख्य वस्तुग्रों को उसने प्रकाशित किया था। दुनिया में बहुत कुछ उसने देखा था। जो लोग उसके भविष्य का निर्णय करनेवाले थे, उन्होंने भी उतना कुछ न देखा होगा। इन सब बातों को वह जोर से नहीं कह रही थी, क्योंकि वह विनीत स्वभाव की लालटेन थी। इस कारण वह किसी को दोष देना नहीं चाहती थी।

उसे बहुत सी बातें याद ग्रा रही थीं। कुछ बातों की याद से उसकी लौ एकाएक भड़कने लगती थी, मानो वह सोच रही हो, 'हाँ, कुछ लोग तो ऐसे हैं जो मुझे याद रखेंगे, जैसे वह खूबसूरत नौजवान ग्रादमी। ग्राह! बहुत वर्षों पहले वह एक पत्र ले कर ग्राया था। पत्र एक गुलाबी रंग के कागज पर लिखा था। वह कागज कितना सुन्दर था, उसके किनारे सुनहरे थे। उस पत्र को एक स्त्री ने लिखा था। नौजवान ने पत्र को दो बार पढ़ कर चूम लिया था, ग्रौर फिर ऊपर को निगाह करके मेरी ग्रोर देखा था।

उसकी आँखें साफ कह रही थीं—'मैं दुनिया में सबसे सौभाग्यशाली हूँ।' उस पत्र में क्या लिखा था, इसे बस वह जानता था और मैं जानती थी, तीसरा कोई नहीं। वह उस युवती का पत्र था जो उस नौजवान की पत्नी बननेवाली थी।

'मुझे एक दूसरे व्यक्ति की आँखें भी याद आ रही हैं। एक चीज से दूसरी पर विचार किस अजीब तरह दौड़ जाते हैं। सड़क पर से एक शानदार अरथी जा रही थी। उस पर एक अत्यन्त सुन्दरी स्त्री का शव था, जो फूलों के हारों से ढका था। उस अरथी के साथ इतनी तेज रोशनियाँ थीं कि उनके आगे मेरी रोशनी धुँधली पड़ गई थी। अरथी के पीछे लम्बी भीड़ थी। उन सब के गुजर जाने पर, और रोशनियों के अदृश्य हो जाने पर, जब मैंने चारों ओर देखा तो कोई मेरे खम्भे से टिक कर खड़ा रो रहा था। उसने जिन दुःखभरी आँखों से मेरी ओर देखा, उन्हें मैं कभी नहीं भूल सकती।'

इस तरह के और भी अनेक विचार उस बूढ़ी लालटेन के दिमाग में आते रहे। जनता की सेवा करने की उसकी वह आखिरी रात थी। चौकीदार को तो मालूम होगा कि उसकी जगह कौन-सी दूसरी लालटेन आयेगी। अपने काम से छूट्टी पा कर वह उसे इतनी बात तो बता ही सकता है। लेकिन लालटेन को अपने बारे में कुछ भी नहीं मालूम था।

अब तो वह चौकीदार को भी पहले की तरह कुछ बताने में असमर्थ थी। पहले तो बता देती थी कि बारिश कैसी हो रही है, या पाला कैसा गिर रहा है, या चाँद की रोशनी सड़क के फर्श पर कहाँ तक फैलेगी, या फिर हवा का क्या रुख है।

नाली के पटरे पर तीन व्यक्ति खड़े थे। उनमें से हर कोई लालटेन की जगह लेने को उत्सुक था। लालटेन के पास वे इस विचार से आये थे कि शायद अपनी जगह वह स्वयं ही किसी को नियुक्त कर के जाए। उनमें से एक तो चमकदार मछली का सिर था, जो कि, अँधेरे में भी चमकता है। उसका खयाल था कि लालटेन के खम्भे पर अगर मुझे बैठा दिया गया तो, तेल की बहुत बचत हो जाएगी। उनमें से दूसरा था सड़ी हुई लकड़ी का टुकड़ा, वह भी अँधेरे में चमकता है। वह अपने आप को एक ऐसे पेड़ में से पैदा हुआ मानता था, जिससे कि कभी जंगल की शान थी।
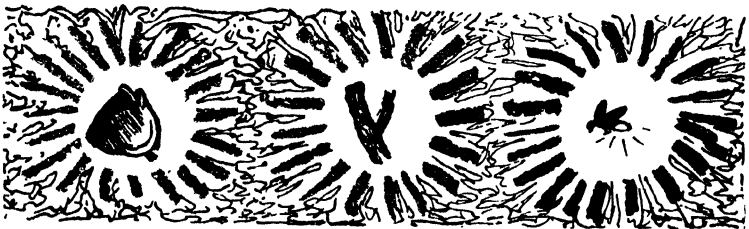
लालटेन की जगह चाहनेवालों में से तीसरा था, जुगनू। लालटेन हैरान थी कि वह यहाँ कैसे आ पहुँचा, लेकिन वह वहाँ था और मजे में चमक भी रहा था। जो हो, लकड़ी का टुकड़ा और मछली का सिर, इन दोनों का ही कहना था कि जुगनू तो बस रह-रह कर ही चमकता है, इसलिए इससे बिल्कुल काम नहीं चल सकता।

बूढ़ी लालटेन ने उनसे कहा कि तुममें से कोई भी मेरी जगह लेने के काबिल नहीं है, लेकिन उसकी बात का विश्वास उनमें से किसी ने नहीं किया। जब उन्होंने सुना कि अपनी जगह पर आनेवाले को चुनने का काम लालटेन को नहीं दिया जाएगा, तो वे कह उठे कि हमें इस बात से बहुत ही प्रसन्नता है, क्योंकि लालटेन तो अब बहुत बूढ़ी और कमजोर हो गई है, किसी को ठीक से चुन सकने की योग्यता ही उसमें कहाँ है।

उसी समय सड़क के नुक्कड़ पर से तेजी से बढ़ती हुई हवा आई। बूढ़ी लालटेन के सिर पर पहुँच कर उसने कहा, 'यह मैं क्या सुन रही हूँ कि तुम सचमुच कल हमें छोड़ कर चली जाओगी! क्या यह आखिरी रात है जब मैं तुमसे यहाँ मिल रही हूँ? अच्छा, अगर ऐसा ही है, तो मैं विदाई का एक उपहार तुम्हें देती हूँ। मैं तुम्हारी खोपड़ी में घुसे जाती हूँ। इससे होगा यह कि जो कुछ भी तुमने देखा या

सुना है, उसे तुम साफ-साफ याद रख सकोगी। और साथ ही, जब कोई बात तुमसे जोर से कही जाएगी, या तुम्हें पढ़ कर सुनाई जायगी, तो उसके बारे में तुम्हारी धारणा इतनी साफ हो जायगी, जैसे कि तुम उसे तस्वीर में ही देख रही हो।'

सड़क की बूढ़ी लालटेन ने उत्तर दिय, 'हाँ, यह तो सचमुच एक बहुमूल्य उपहार है। आपका बहुत-बहुत धन्य-वाद। लेकिन कहीं ऐसा न हो कि इससे मेरा खात्मा ही हो जाय।' हवा ने कहा, 'हम आशा करें कि ऐसा नहीं होगा। लो, अब वह उपहार मैं तुम्हें देती हूँ। इस तरह के अगर बहुत से उपहार तुम्हें मिल जाएँ तो, इस बुढ़ापे में भी तुम आराम से रह सकती हो।'

लालटेन ने आह भर कर कहा, 'अरे मैं कहीं खत्म न हो जाऊँ। या ऐसी हालत में भी क्या तुम मुझे इस योग्य कर सकती हो कि मेरी स्मरणशक्ति बनी रहे?'

हवा ने कहा, 'बुढ़िया लालटेन, बहुत ज्यादा सवाल मत करो और हवा फिर चलने लगी। उसी समय बादलों के परदे से निकल कर चाँद बाहर आया। हवा ने चाँद से पूछा, 'तुम क्या दोगे इस लालटेन को?'

चाँद ने उत्तर दिया, 'मैं कुछ भी नहीं दे सकता। अब मैं क्षीण होता जा रहा हूँ। लालटेनों ने कभी मेरे लिए

उजाला नहीं किया है, और मैं हमेशा लालटेनों के लिए उजाला करता रहा हूँ।' चाँद फिर बादलों में छिप गया। उसने कुछ देने की चिन्ता से दूर रहने का पक्का इरादा कर लिया था।

तभी मकान की छत पर से एक बूँद लालटेन की ढँपनी पर आ गिरी। बूँद ने कहा कि मैं भूरे बादलों में से आई हूँ, और उपहार में भेजी गई हूँ। मेरे रूप में यह सबसे सुन्दर उपहार है। मैं तुम में समा जाऊँगी ताकि एक ही रात में, अगर तुम चाहो तो, तुम में जंग लग जाए और तुम टुकड़े-टुकड़े होकर धूल में मिल जाओ। लेकिन लालटेन को वह उपहार तुच्छ जान पड़ा। हवा को भी वह उपहार वैसा ही लगा। हवा सनसना कर कह उठी, 'किसी के पास इससे अच्छा उपहार नहीं है क्या ? नहीं है क्या ?' ठीक उसी क्षण एक चमकीला पुच्छल तारा टूट कर गिरा, उसके साथ आग की एक लम्बी लकीर सी खिंच कर रह गई।

मछली का सिर कह उठा, 'यह क्या था ? पुच्छल तारा ही था न ? मैं समझता हूँ कि वह सीधा लालटेन में के भीतर पहुँच गया है। तब तो भाई, जब ऐसे ऊँचे रुतबे के लोग लालटेन की जगह लेने आ पहुँचे हैं, तो हमारे लिए अब आशा छोड़ कर घर लौट जाने में ही भलाई है !' लकड़ी के टुकड़े और जुगनू ने भी ऐसा ही किया।

लालटेन एकाएक जोर से भड़क उठी, और बोली, 'यह तो बहुत बढ़िया उपहार रहा। सुन्दर सितारों से मुझे हमेशा हर्ष होता रहा है। वे जैसा तेज उजाला करते हैं, वैसा तो मैं कर ही नहीं सकती। यह जरूर है कि वैसा करने की आकांक्षा मुझे हमेशा रही है। अब उन सितारों ने मुझ बूढ़ी लालटेन की खबर ली है, और बहुमूल्य उपहार के रूप में एक को मेरे पास भेज दिया है। भविष्य में जो भी कुछ होगा, मैं उसे साफ-साफ याद रख सकूँगी, या देख सकूँगी। वे सितारे भी उसे देखते रहेंगे जिन्हें मैं प्यार करती हूँ। सचमुच, यह बहुमूल्य उपहार है। जिस खुशी में दूसरों का भाग न हो, वह आधी ही रह जाती है।'

हवा ने कहा, 'इस तरह के ख्याल से तुम्हारा सम्मान बढ़ता ही है। तो भी लगता है कि तुम्हें इस बात का बोध नहीं है कि अब अगर तुम्हारे भीतर मोमबत्ती जलाकर न रखी जाए तो कोई तुम्हारे द्वारा कुछ देख ही नहीं सकता। लेकिन सितारे इसे क्या जानें? वे तो समझते हैं कि धरती पर जो भी चीज उजाला करती है, वह मोमबत्ती ही हो सकती है। अच्छा, अब मैं जाती हूँ।' इतना कह कर हवा आराम करने चली गई।

अगले दिन क्या हुआ? अगले दिन की बात जाने दीजिये। हाँ, अगली रात को लालटेन एक आराम कुर्सी

पर लेटी हुई थी। जानते हो किस जगह ? बूढ़े चौकीदार के कमरे में। चौकीदार ने म्युनिसिपैलिटी के अधिकारियों से माँग कर उसे ले लिया था। उसने कहा था कि मैं बहुत जमाने से सच्चा खिदमतगार रहा हूँ, इसलिए इस लालटेन को मुझे बख्श देने की मेहरबानी की जाये। चौबीस साल पहले जिस दिन मैं चौकीदारी पर आया था, उसी दिन मैंने इस लालटेन को जलाकर लगाया था। अब तो मैं इसे अपने बच्चे की तरह मानता हूँ, मेरे कोई बच्चा है भी नहीं। इसलिए लालटेन चौकीदार को दे दी गई थी।

इस तरह लालटेन आरामकुर्सी पर पड़ी थी। पास में ही गर्म चूल्हा था। लालटेन अब इतनी बड़ी दिखाई दे रही थी कि पूरी आरामकुर्सी उससे भर सी गई थी। बूढ़ा चौकीदार और उसकी पत्नी बैठे भोजन कर रहे थे। बार-बार वे लोग स्नेहभरी दृष्टि से लालटेन की ओर देख लेते थे, मानो उसे भी खुशी से भोजन में शरीक कर लेना चाहते हों। उनका घर असल में एक तहखाना था। जमीन की सतह से वह दो गज नीचा था। उसमें पहुँचने का रास्ता पथरीला था। लेकिन भीतर से वह गर्म और आरामदेह था, खूब साफ सुथरा भी था।

उनके घर का दरवाजा मजबूत और कसा हुआ था। खिड़कियों पर परदे पड़े थे। खिड़कियों के पटरों पर दो अजीब से फूलदान भी रखे थे। उनका पड़ोसी मल्लाह उन फूलदानों को दूर देश से खरीद कर लाया था। वास्तव में वे, जानवरों की शक्ल के दो मिट्टी के बर्तन थे, ऊपर से खुले और भीतर से खोखले। उनके भीतर मिट्टी भर दी गई थी। एक में बहुत ही सुन्दर प्याज उगे हुए थे—वह उनका सब्जियों का बगीचा था। दूसरे में बड़े बड़े सुन्दर फूल उगे हुए थे—वह उनका फूलों का बगीचा था। घर की एक दीवार पर एक बड़ा सा रंगीन चित्र लटक रहा था।

वहाँ एक दीवार घड़ी भी थी, जो टिक्-टिक् करती जा रही थी। वह हमेशा बहुत तेज चलती थी। बूढ़े चौकीदार

ग्रौर चौकीदारनी का कहना था कि सुस्त चलने से तो यह ग्रच्छा ही है। वे लोग भोजन कर चुके। लालटेन वहीं चूल्हे के पास ग्रारामकुर्सी पर पड़ी रही। उसे लग रहा था मानो दुनिया ही उलट-पलट गई हो।

लेकिन जब बूढ़ा चौकीदार उसकी ग्रोर देख कर बीती बातों का जिक्र करने लगा तो लालटेन को लगा कि ग्रब कुछ ठीक हो गया है। बूढ़े चौकीदार ने कहा कि रातों को हम दोनों हमेशा साथ रहे हैं। कभी वर्षा होती थी तो कभी कुहरा, लेकिन हम साथ रहते थे। गर्मियों की छोटी रातों में भी हम साथ रहते थे, जाड़ों की उन लम्बी ग्रँधेरी रातों में भी जब कि चारों ग्रोर से बर्फ की इतनी तेज बौछार होती थी कि कभी कभी तो मेरा मन घर में ग्राकर दुबक जाने का होने लगता था। चौकीदार ने जो कुछ कहा, लालटेन को सब साफ-साफ दिखाई दिया। इसलिए उसे विश्वास हो गया है कि हवा ने धोखा नहीं दिया था।

ये बूढ़े पति-पत्नी इतने चुस्त ग्रौर व्यस्त रहते थे कि कि किसी भी समय ऊँघते या ग्रलसाते नहीं थे। हर रवि की शाम को कोई न कोई किताब निकाल कर पढ़ी जाती थी। ज्यादातर वह किताब यात्राग्रों की होती थी। बूढ़ा जोर-जोर से पढ़ता था—ग्रफ्रीका के बारे में, वहाँ के लम्बे-चौड़े जंगलों के बारे में, उन जंगलों में घूमने फिरने वाले जानवरों

के बारे में। बुढ़िया बड़ी उत्सुकता से सुनती थी, और रह रह कर गमलों का काम देने वाले जानवरों की शक्ल के उन मिट्टी के बरतनों को देख लेती थी। फिर वह कह उठती थी, 'हाँ, वे दृश्य मेरे सामने सजीव होते जा रहे हैं।'

उस समय लालटेन की दिली इच्छा होती कि एक मोम-बत्ती जलाकर उसके भीतर रख दी जाए, तब यह बूढ़ी भली औरत उन सब दृश्यों को ठीक ठीक सजीव होते देख लेगी। मैं स्वयं उन दृश्यों को देख रही हूँ—एक दूसरे में गुँथी हुई मोटी-मोटी शाखाओं वाले लम्बे-लम्बे पेड़, घोड़ों पर सवार काले-काले नंगे आदमी, जानवरों के झुण्ड के झुण्ड जिनके बड़े बड़े पंजों के नीचे नरकुल और झाड़ियाँ टूट टूट कर चरमरा रही हैं।

लालटेन ने आह भरकर कहा, 'जब मेरे भीतर मोमबत्ती ही जलाकर नहीं रखी जाती तो मेरे उन सारे उपहारों का क्या लाभ! यहाँ इनके पास रेलगाड़ी में दिये जाने वाले तेल और चर्बी के अलावा है ही क्या, इनमें से किसी से काम नहीं चलेगा।'

एक दिन मोमबत्तियों के बहुत से टुकड़े उस तहखाने में लाये गये। बड़े टुकड़े जलाकर रोशनी करने के काम में लाए गये, और छोटे टुकड़ों से चौकीदारनी ने सूत पर रगड़ने का काम लिया। लालटेन के लिए इससे ज्यादा चिढ़ाने

वाली बात और क्या होती ! इतनी ढेर की ढेर मोमबत्तियाँ हैं, और उनमें से एक को जलाकर लालटेन में रख देने का खयाल किसी को भी नहीं !

लालटेन सोचने लगी, 'उन बहुमूल्य उपहारों को लेकर मेरी यह दशा है ! मेरे सामने ही कितने सुन्दर-सुन्दर दृश्य घूम रहे हैं, लेकिन मेरे दोस्तो, उस खुशी को मैं तुम्हारे साथ नहीं बाँट पाती ! तुम क्या जानो कि मैं इन नंगी सफेद दीवारों पर चमकदार हरे भरे जंगल ला सकती हूँ, जो भी तुम देखना चाहो ऐसी हर एक चीज ला सकती हूँ।

लालटेन को खूब रगड़कर साफ किया जाता था। कोने में वह इस तरह रखी हुई थी कि हर किसी की निगाह उस पर पड़ती थी। दूसरे लोग तो उसे पुराना कबाड़ा कहते थे, लेकिन बूढ़े पति-पत्नी उनके कहने की बिल्कुल परवाह नहीं करते थे, वे उसे वैसा ही प्यार करते थे।

बूढ़े चौकीदार का जन्मदिन आया। चौकीदारनी लालटेन के पास जाकर बोली, 'मैं अपने पति के सम्मान में आज प्रकाश करूँगी।' इस पर लालटेन की लोहे की टोपी चटचटा उठी, लालटेन ने सोचा, 'अब मुझे मोमबत्ती जरूर मिलेगी !' लेकिन उस बेचारी को मोमबत्ती की बजाए तेल ही दिया गया। वह रातभर जलती रही। अब उसे यकीन हो

गया कि सितारों ने उसे जो सबसे बढ़िया उपहार दिया था, वह अब जीवनभर गुप्त ही रहेगा।

लालटेन एक स्वप्न देखने लगी। इतने बहुमूल्य उपहार पाने वाली लालटेन को स्वप्न देखना ही चाहिए। स्वप्न में उसने देखा कि ये बूढ़े पति-पत्नी मर गये हैं, और स्वयं उसे

एक कारखाने में पिघलाने के लिए ले जाया गया है। इस पर वह बहुत भयभीत हो उठी। म्युनिसिपैलिटी के दफ्तर

में जब वह ले जाई गई थी, तो भी इतनी भयभीत नहीं हुई थी। उसे मालूम था कि अगर मैं चाहूँ तो जंग खाकर धूल में मिल सकती हूँ, तो भी उसने ऐसा होना नहीं चाहा। अब हुआ यह कि उसे भट्ठी में डालकर गला दिया गया और फिर उससे एक बहुत ही सुन्दर शमादान बनाया गया, जिसमें मोम - बत्तियाँ ही लगाई जा सकती थीं। उस शमादान की शक्ल एक देवदूत की थी जो कि फूलों का गुच्छा पकड़े हुए था। फूलों के गुच्छे के बीच में मोमबत्ती लगाई गई। शमादान को हरे रंग की मेज पर रख दिया गया।

जिस कमरे में शमादान रखी गई वह कमरा भी सुन्दर था। इधर उधर किताबें बिखरी हुई थीं, और दीवारों पर सुन्दर तस्वीरें लगी थीं। असल में, वह एक कवि का कमरा था। कवि जो कुछ भी सोचता था लिखता था, वह सब चारों ओर घुमड़ता जान पड़ता था। कभी तो वह कमरा एक घना जंगल हो उठता था, कभी वह धूप में नहाया एक खुला मैदान, जिसमें इधर-उधर झोपड़ियाँ हों, और लम्बी-लम्बी-लम्बी टाँगों वाले सारस घूम रहे हों कभी वह कमरा समुद्र की लहरों पर उछलने वाला शानदार जहाज बन जाता।

जब लालटेन को होश हुआ तो उसने सोचा, 'मेरे उपहार कितने बहुमूल्य हैं ! अच्छा हो कि मैं गला दी जाऊँ। लेकिन नहीं, जब तक ये बूढ़े लोग जीवित हैं, तब तक ऐसा नहीं होना चाहिए। ये मुझे बिना किसी स्वार्थ के प्रेम करते हैं, मुझे ये अपना बच्चा मानते हैं। इतने वर्षों तक ये मुझे पोंछ कर साफ करते रहे हैं, और नया तेल देते रहे हैं। मुझे अपनी इस दशा से सन्तोष करना चाहिए।' उस समय से लालटेन को हार्दिक शान्ति मिल गई।

एक गरीब लड़की थी। वह सुन्दर तो बहुत थी, लेकिन कमजोर थी। वह गरीब इतनी थी कि गर्मियों में तो हमेशा उसे नंगे पैर ही रहना पड़ता था। जाड़ों में अलबत्ता उसे पैरों में पहनने को कुछ मिल जाता था। वे लकड़ी की बनी हुई बड़ी-बड़ी भारी चट्टियाँ होती थीं। इससे उस बेचारी लड़की के पैर दुखने लगते थे।

उसी गाँव में जूते बनाने वाली एक बुढ़िया रहती थी। लाल कपड़े के टुकड़ों से उसने एक जोड़ी जूते लड़की के लिए बना दिये। थे तो वे भद्दे, लेकिन लड़की के पैरों में ठीक बैठे। बुढ़िया ने वे जूते लड़की को दे दिये। लड़की का नाम था किरन।

किरन ने पहली बार उन जूतों को अपनी माँ के मरने के दिन पहना। हालाँकि उस अवसर के उपयुक्त वे जूते नहीं थे, लेकिन किरन बेचारी के पास दूसरे थे भी तो नहीं। इसलिए वह उन्हीं को पहन कर अपनी माँ के शव के साथ गई। टाँगें उसकी तब भी नंगी थीं।

उसी समय एक बड़ी-सी पुरानी गाड़ी उधर से गुजरी, जिसमें एक मोटी-सी बूढ़ी औरत बैठी थी। उस औरत ने लड़की की ओर देखा और दुःख प्रकट किया; फिर वह पादरी से बोली, 'इस लड़की को मुझे दे दीजिये, मैं इसका पालन-पोषण करूँगी। किरन ने सोचा कि शायद यह औरत मेरे लाल जूतों के कारण ऐसा कह रही है, लेकिन उस औरत ने उन जूतों को बहुत भद्दा बताया, और उन्हें जलवा दिया। इसके बाद किरन को बहुत बढ़िया कपड़े पहनाए गये, और उसे पढ़ना और सुई का काम करना सिखाया जाने लगा।

एक दिन यात्रा करती हुई महारानी उस ओर से गुजरीं। उनके साथ उनकी बेटी राजकुमारी भी थी। तमाम लोग उन्हें देखने के लिए जमा हो गये। किरन भी उन लोगों के बीच थी। ऊपर से नीचे तक सफेद कपड़े पहने हुए राजकुमारी महल की खिड़की पर खड़ी थी। उस समय उस पर चोगा और मुकुट, इनमें से कुछ भी नहीं था। लेकिन उसके पैरों में मुलायम चमड़े के सुन्दर लाल जूते थे। जूते बनाने वाली बुढ़िया ने किरन के लिए जो जूते बना कर दिये थे, उनसे राजकुमारी के ये जूते कहीं अधिक सुन्दर थे। किरन ने सोचा, इन जूतों से अधिक सुन्दर दुनिया भर में और कहीं नहीं हो सकते।

जब किरन बड़ी हुई तो उसे एक नई पोशाक दी गई, और उसके लिए नये जूतों के लिए एक बूढ़े रईस जूतेसाज को नाप दिया गया। जूतेसाज की दुकान में शीशे की बड़ी-बड़ी आलमारियों के भीतर बहुत से सुन्दर और चमकदार जूते रखे थे। किरन को वे बत ही सुहावने लगे। लेकिन बूढ़ी औरत की निगाह दुरुस्त नहीं थी, इसलिए उसे उन जूतों को देखने में कोई आनन्द नहीं आया। उन जूतों में लाल जूतों का भी एक जोड़ा था। वे बिल्कुल वैसे ही जूते थे जैसे कि राजकुमारी पहने हुई थी। जूतेसाज ने बताया

कि वे एक अमीर की लड़की के लिए बनाए गये थे, लेकिन उसके पैरों में ठीक नहीं बैठे ।

बूढ़ी औरत बोली, 'ये बढ़िया चमड़े के बने हैं, देखो न कैसे चमकदार हैं !'

'हाँ, चमक तो खूब रहे हैं' कह कर किरन ने उन्हें नाप कर देखा, वे उसके पैरों में ठीक बैठे, इसलिए उन्हें खरीद लिया गया । लेकिन बूढ़ी औरत जान ही न सकी कि ये जूते लाल हैं, अगर जानती होती तो किरन को कभी भी वे जूते न लेने देती । लेकिन किरन ने तो उन्हें ले ही लिया । अब हर किसी की नजर उसके पैरों की ओर जाने लगी । जब वह गिरजा-घर के पूर्वी भाग की ओर जा रही थी तो जान पड़ता था कि पुरानी मूर्तियों और चित्रों में के व्यक्ति भी आँखें गड़ा कर उसके जूतों को देख रहे हैं । जब पादरी ने किरन के सिर पर हाथ रखा, उस समय भी उसे अपने जूतों का ही खयाल बना रहा । संगीत और गाने के बीच भी किरन को अपने लाल जूतों का ही ध्यान रहा ।

शाम होते-होते किसी ने बूढ़ी औरत से कह ही दिया कि किरन के जूते लाल हैं, इस पर बूढ़ी बहुत नाराज हुई । उसने किरन से कहा कि ये जूते जरा भी उपयुक्त नहीं हैं, आगे जब कभी गिरजाघर को जाओ तो काले ही जूते पहनना, वे पुराने हैं तो क्या हुआ ।

अगले रविवार को किरन को फिर गिरजाघर जाना था। उसने एक बार काले जूतों की ओर देखा और फिर लाल जूतों की ओर। इसी तरह उसने कई बार दोनों जूतों की ओर देखा और अन्त में उसने लाल जूते ही पहन लिये।

बड़ा सुहाना खुला दिन था। किरन और बूढ़ी औरत खेतों की ओर से हो कर गईं। रास्ता धूलभरा था। गिरजाघर के दरवाजे पर एक बूढ़ा सिपाही अपनी बैसाखी पर झुका खड़ा था। उसके लम्बी दाढ़ी थी, जिसका रंग सफेद तो नहीं, भूरा-सा था। उसने जमीन तक झुक कर प्रणाम किया और बूढ़ी औरत से पूछा कि क्या मैं आप के जूतों की धूल साफ कर दूँ? इस पर किरन ने भी अपने पैर बढ़ा दिये। उन्हें देख कर सिपाही बोल उठा, 'वाह, कैसे सुन्दर नाचने के जूते हैं। नाचते समय ध्यान रखना कि ये तुम्हारे पैरों से निकल न जाएँ।' इतना कह कर उसने किरन के जूतों को अपने हाथों से थपथपा दिया। बूढ़ी औरत सिपाही को उसकी मजदूरी दे कर किरन के साथ गिरजाघर में चली गई।

गिरजाघर में हर किसी की नजर किरन के जूतों पर गई, तमाम मूर्तियों ने भी उन्हें देखा। प्रार्थना के समय जब किरन ने झुक कर प्रणाम किया, तब भी उसका ध्यान अपने लाल जूतों पर ही था, वे जूते—मानो उसकी दृष्टि में तैर

रहे थे। प्रार्थना के गीत का साथ देने की भी उसे सुधि न रही।

आखिरकार गिरजाघर से सब लोग चल दिये। बूढ़ी औरत भी अपनी गाड़ी में जा बैठी। किरन ने चढ़ने को पैर उठाये ही थे कि बूढ़ा सिपाही जो कि आज भी वहीं खड़ा

था, कह उठा, 'देखो, कैसे सुन्दर नाचने के जूते हैं ।' इस पर किरन से न रहा गया । उसे नाचने की चेष्टा करनी ही पड़ी । एक बार शुरू कर देने पर, उसके पैरों का नाच बन्द ही न हुआ, मानो उन पर जूतों का जादू काम कर रहा हो । नाचते-नाचते वह गिरजाघर का चक्कर काटने लगी और उसका नाच बन्द न हुआ । कोचवान को उसके पीछे दौड़ना पड़ा । उसने किरन को पकड़ कर गाड़ी में बैठा दिया । इस पर भी उसके पैरों का नाचना खत्म नहीं हुआ, इसीलिए बेचारी बूढ़ी औरत को चोट आ गई । अन्त में जूतों को उतार दिया गया, इस तरह उसके पैरों को चैन मिला ।

इसके बाद से उन जूतों को एक जगह दबा कर रख दिया गया । तो भी कभी-कभी जा कर उन्हें देखे बिना किरन को चैन न पड़ता था ।

बूढ़ी औरत बीमार पड़ गई । डाक्टर ने बताया कि अब यह बचेगी नहीं । उसे अच्छी तीमारदारी की जरूरत थी । इस काम के लिए किरन से बढ़ कर और कौन हो सकता था । लेकिन बाहर में एक बड़ा नृत्योत्सव होने वाला था, किरन को वहाँ से निमंत्रण आया था । एक बार उसने बूढ़ी औरत को देखा जो कि मर रही थी, फिर उसने लाल जूतों को देखा । जूतों को उसने पहन लिया — इसमें हानि ही क्या थी; लेकिन इसके बाद वह नृत्योत्सव में पहुँच गई

ग्रौर वहाँ नाचने लगी। हुग्रा यह कि जब वह दाएँ को नाचमा चाहे तो जूते बाएँ को नाचें, जब वह ऊपर की ग्रोर जाना चाहे, तो जूते नीचे को भागें। इस तरह उसके जूते उसे सीढ़ियों के नीचे ले गये, वहाँ से सड़क पार करके, वे उसे बाहर के फाटक के बाहर ले गये। बेचारी किरन को उनके साथ घने जंगल में जाना पड़ा। वहाँ पेड़ों के ऊपर कोई चीज चमकती दिखाई दी। किरन ने सोचा कि वह चाँद होगा। लेकिन वह तो भूरी दाढ़ी वाला सिपाही था। सिपाही ने सिर हिला कर कहा, 'देखो, कैसे सुन्दर न चने के जूते हैं।'

बहुत ही भयभीत हो कर किरन ने जूतों को उतार फेंकना चाहा, लेकिन वे उतरे ही नहीं। उसने ग्रपने मोजों को फाड़ डाला, लेकिन लगा कि जैसे जूते पैरों से मिल कर एक हो गए हों। खेतों ग्रौर चरागाहों में, वर्षा ग्रौर धूप में उस बेचारी को नाचते रहना पड़ा। वह रात दिन लगातार नाचती रही। रात को तो बड़ा डरावना लगने लगा। नाचते-नाचते वह गिरजाघर के खुले दरवाजे पर पहुँच गई। वहाँ एक देवदूत खड़ा दिखाई दिया। वह सफेद लम्बा लबादा पहने था, जो कि उसके कन्धे से जमीन तक फैला हुग्रा था। उसके चेहरे पर दृढ़ता थी, ग्रौर उसके हाथ में चमचमाती हुई एक चौड़ी तलवार थी।

देवदूत ने कहा, 'तुम्हें नाचना ही पड़ेगा । अपने लाल जूतों में तुम्हें नाचना पड़ेगा । जब तक तुम पीली पड़ कर ठंढी न हो जाओ, जब तक तुम्हारी खाल न सिकुड़ जाए और तुम हड्डियों का ढाँचा न रह जाओ, तुम्हें नाचना ही पड़ेगा । द्वार-द्वार जा कर तुम्हें नाचना पड़ेगा । जहाँ-जहाँ घमण्डी बच्चे रहते हैं, वहाँ-वहाँ जा कर तुम्हें खटखटाना पड़ेगा, ताकि वे सब तुम्हें देख कर डर जाएँ । तुम्हें नाचना पड़ेगा—'

किरन चिल्ला उठी, 'दया करके बचाओ मुझे !' लेकिन देवदूत का उत्तर वह न फिर सुन सकी । उसके जूते उसे गिरजाघर के फाटक से खेतों और रास्तों की ओर भगा ले गये, और उस बेचारी को बराबर नाचते रहना पड़ा ।

एक दिन सुबह के समय नाचती हुई वह एक ऐसे दरवाजे पर से गुजरी जिससे वह अच्छी तरह परिचित थी । घर के भीतर से आते प्रार्थना के बोल उसे सुनाई दिये, और फूलों से ढँका एक शव भी उसने बाहर निकलता देखा । किरन को अब पता चला कि वह बूढ़ी औरत मर गई है, कोई उसकी तीमारदारी करने वाला न था ।

किरन का नाचना अब भी जारी रहा, रात के अंधियाले में भी वह न थमा । जूते उसे झाड़-झँखाड़ों में ले गये, यहाँ तक कि उसके पैर फट गये और उनसे खून बहने लगा ।

झाड़ीदार मैदान को पार करके वह अकेले में बने एक मकान पर पहुँच गई। वह जानती थी कि इस मकान में जल्लाद रहता है। खिड़की पर उँगलियों से थपथपा कर उसने पुकारा, 'बाहर आइये, बाहर आइये, मैं भीतर आपके पास नहीं पहुँच सकती, क्योंकि मैं नाच रही हूँ।'

जल्लाद ने उत्तर दिया, 'क्यों नहीं, तुम जानो ही क्या कि मैं कौन हूँ! मैं दुष्टों के सिर उड़ा देता हूँ, मेरी कुल्हाड़ी खूब तेज है।'

किरन ने कहा, 'मेरा सिर मत काटो, क्योंकि तब तो मैं अपने पाप का प्रायश्चित भी न कर सकूँगी। हाँ, लाल जूतों वाले मेरे पैर जरूर काट डालो।

किरन ने अपना पाप स्वीकार कर लिया। जल्लाद ने जूतों सहित उसके पैरों को काट डाला। वे जूते उन छोटे-छोटे पैरों के साथ नाचते हुए सीधे घने जंगल में चले गये।

जल्लाद ने किरन के लिए लकड़ी के पैर बना दिये, और बैसाखियों का काम लेने के लिए पेड़ों की शाखें काट कर उसे दे दी। उसने किरन को वह गाना भी सिखा दिया जो कि प्रायश्चित करने वाले गाया करते हैं। कुल्हाड़ी पकड़ने वाले जल्लाद के उन हाथों को किरन ने चूम लिया, और झाड़ीदार मैदान की ओर चल दी।

अब उसने सोचा, 'उन जूतों से तो मैं बहुत कष्ट उठा चुकी। अब मुझे गिरजाघर जाना चाहिए ताकि लोग मुझे वहाँ देख सकें।' इसके बाद वह बड़ी तेजी से गिरजाघर के दरवाजे पर पहुँच गई। वहाँ पहुँच कर देखती क्या है कि लाल जूते उसके आगे नाच रहे हैं। भयभीत हो कर वह वहाँ से लौट पड़ी।

हफ्ते भर उसने बड़ा कष्ट उठाया, और वह खूब रोयी भी। जब रविवार आया तो उसने मन में कहा, 'अब तो मैंने बहुत दुख भोग लिया, अब मैं उतनी ही भली हूँ जितने गिरजाघर में सिर उठा कर बैठे हुए और सब लोग।' इसलिए वह हिम्मत के साथ वहाँ गई। वहाँ पहुँचते ही उसने देखा कि लाल जूते फिर उसके आगे नाचने लगे। और भी ज्यादा भयभीत हो कर वह लौट पड़ी। उसे अपने पाप पर और भी ज्यादा पछतावा हुआ।

इसके बाद किरन पादरी के घर पहुँची, और उसने प्रार्थना की कि मुझे कुछ काम दीजिये। उसने कहा कि मुझे मजदूरी नहीं चाहिए, मैं तो बस यह चाहती हूँ कि अच्छे लोगों के साथ रह सकूँ। पादरी की पत्नी को उसकी दशा पर बड़ा दुःख हुआ, उसने उसे नौकरी पर रख लिया। किरन बहुत कृतज्ञ हुई, और मेहनत से काम करने लगी। हर रोज शाम को वह शान्त भाव से बैठ कर पादरी को इंजील पढ़ते सुनती थी।

फिर रविवार आया । पादरी का पूरा परिवार गिरजाघर को जाने लगा । उन्होंने किरन से पूछा कि तुम नहीं चलोगी क्या ? किरन ने दर्दभरी आह के साथ आँखों में आँसू ला कर अपनी बैसाखियों की ओर देखा । सब लोगों के चले जाने पर वह अपने छोटे-से कमरे में गई । वह कमरा इतना बड़ा था कि उसमें बस एक चारपाई और एक कुर्सी ही आ सकती थी । हाथों में प्रार्थना की पुस्तक ले कर किरन वहीं बैठ गई । जब वह नम्रता से पुस्तक पढ़ रही थी तो, गिरजाघर के संगीत का स्वर हवा पर उस कमरे में में आ पहुँचा । आकाश की ओर मुँह उठा कर किरन पुकार उठी, 'ओ परमात्मा, मुझ पर दया करो !'

एकाएक उसके चारों ओर सूरज का तेज प्रकाश फैल गया । किरन के सामने अब, वही सफेद लबादे वाला देवदूत खड़ा था, जिसे उसने उस भयानक रात में गिरजाघर के दरवाजे पर देखा था । इस समय उसके हाथ में वह डरावनी तेज, तलवार नहीं थी । उसकी जगह पर अब वह हाथ में गुलाब के फूलों से लदी एक हरी डाली पकड़े हुए था । इस डाली से उसने छत को छू दिया । छत बहुत ऊपर को उठ गई । जिस जगह देवदूत ने छत को छुआ था, वहाँ एक सुनहला चमचमाता तारा प्रकट हो गया । इसके बाद देवदूत ने दीवारों को छुआ, इससे कमरा फैल कर बड़ा हो गया ।

किरन ने देखा कि गिरजाघर का तमाम दृश्य उसके सामने है। वैसे ही संगीतकार, वैसी ही मूर्तियाँ और वैसे ही चित्र हैं, और तमाम लोग उसी तरह बैठे हुए प्रार्थना कर रहे हैं। हुआ यह कि गिरजाघर स्वयं उस गरीब लड़की के छोटे से कमरे में चला आया, या यों कहा जाए कि कमरा ही गिरजाघर बन गया। किरन ने अपने आप को पादरी के परिवार के साथ बैठे पाया। प्रार्थना का गीत रुका तो सब ने सिर उठा कर देखा और कह उठे, 'यहाँ आ कर तुमने अच्छा ही किया किरन!'

किरन ने जवाब दिया, 'ईश्वर की दया से ही ऐसा हुआ।'

संगीत फिर बजने लगा, और उसके बीच बच्चों की मीठी आवाजें गूँजने लगीं। धूप की गरमाहट खिड़कियों में से किरन के पास आने लगी। प्रकाश, शान्ति और हर्ष से उसका हृदय इतना अधिक भर उठा कि वह टूक-टूक हो गया। उसकी आत्मा किरणों के रथ पर चढ़ कर स्वर्ग को पहुँच गई। वहाँ उसका स्वागत हुआ। एक भी शब्द उसकी भर्त्सना में, या लाल जूतों के बारे में वहाँ नहीं कहा गया।

एक बार मैं समुद्र की यात्रा कर रहा था। जहाज में अधेड़ उम्र का एक आदमी भी था। वह इतना हँसमुख था कि मानो दुनिया के सबसे अधिक प्रसन्न आदमियों में से हो। जान पड़ता था कि वह घूम-घूम कर तमाशा दिखानेवाला आदमी है। उसका तमाम सामान एक बक्से में बन्द था, वह पुतलियों का तमाशा दिखाता था और इस काम में वह था भी उस्ताद। उसने मुझे बताया कि यह प्रसन्नता उसने विज्ञान के एक प्राध्यापक से हासिल की है। उसने इस विषय में जो कहानी सुनाई वह इस प्रकार है—

एक बार मैं स्लैजिल्स नाम के शहर में ठहरा हुआ था। डाकघर के बड़े कमरे में मैंने अपना खेल दिखाने का इन्तजाम किया था। तमाशा देखनेवाले बहुत अच्छे लोग थे, प्रायः सबके सब बच्चे ही थे। कितना मजा ले रहे थे वे मेरे खेल में। एकाएक काले कपड़े पहने एक आदमी, जो कि विद्यार्थी जैसा जान पड़ता था, उस बड़े कमरे में आ कर बैठ गया। मुझे वह एक विचित्र-सा दर्शक जान पड़ा। मैंने उसके बारे

में पूछा कि यह कौन है। मुझे बताया गया कि यह कोपेन-हेगेन के एक विज्ञान-विद्यालय का प्राध्यापक है, इस प्रदेश में विज्ञान सम्बन्धी व्याख्यान देने आया है।

मेरा खेल ठीक आठ बजे खत्म हो गया। बच्चों को ज्यादा देर तक रोके रखना ठीक नहीं था। नौ बजे प्राध्यापक का भाषण शुरू हुआ, भाषण के मध्य में उसने कुछ साधारण से प्रयोग भी कर के दिखाये। अब मैं उसके श्रोताओं में था।

उसका भाषण मुझे बड़ा अद्‍भुत जान पड़ा। उसका अधिकांश तो मेरी समझ से परे था। तो भी मैं सोचने लगा कि मध्ययुग में ये प्रयोग होते तो जादू जान पड़ते।
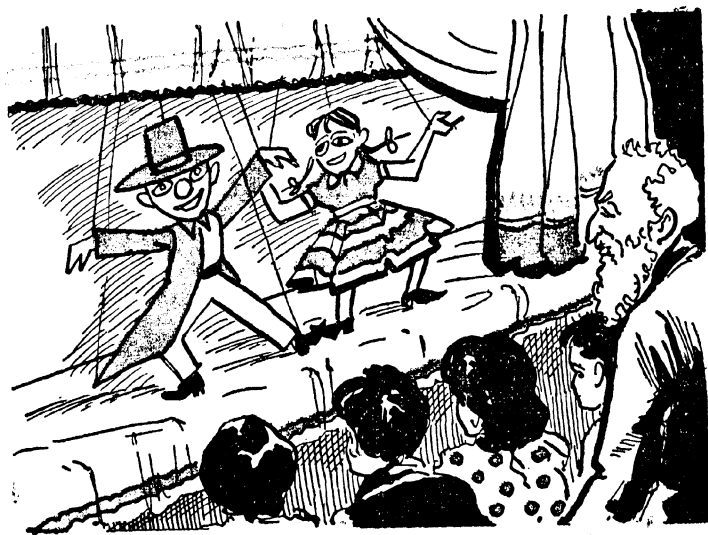
अगले दिन, रात को मैंने फिर उसी बड़े कमरे में अपना खेल दिखाया। प्राध्यापक तब भी मौजूद था। खेल के बीच में उस पर प्रभाव डालने के लिए जो कुछ भी मैं कर सकता था, मैंने किया। उस समय मेरा उद्देश्य उसे प्रसन्न करना ही था। मुझे सफलता मिली, यह इसी से जाहिर था कि जब खेल खत्म हो गया, और कठपुतलियों ने परदे के आगे सब को प्रणाम कर लिया तो, विज्ञान के प्राध्यापक ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और पीने के लिए आसव दिया। उसने मेरे खेल की तारीफ की और मैंने उसकी विज्ञान-सम्बन्धी वार्ता की प्रशंसा की। इस तरह हम दोनों समान-रूप से प्रसन्न हुए। तो भी मेरी प्रसन्नता अधिक थी, क्योंकि मैं अपने कठपुतलियों के खेल की प्रत्येक गति का स्वामी था; उसके प्रयोगों में से अनेक ऐसे थे, जिनकी ठीक-ठीक व्याख्या वह न कर सका। उदाहरण रूप में, जब लोहे का एक टुकड़ा बिजली के चक्करदार तार में जाता है, तो वह चुम्बक कैसे बन जाता है? मानो उस पर कोई शक्ति उतर आती हो। लेकिन वह शक्ति आती कहाँ से है? शायद, ऐसा ही मनुष्यों के साथ भी होता है। वे इस दुनिया के चक्कर में घूमते हैं, और उन पर कोई शक्ति उतर आती है। नेपोलियन और शेक्सपियर इसी तरह बनते हैं।

नौजवान प्राध्यापक ने कहा, 'सारी दुनिया स्वयं में एक अचम्भा है। बात यह है कि हम उसके इतने आदी हो जाते हैं कि हमें अचम्भा भी मामूली बात-सा लगता है।'

वह मुझे बहुत-सी बातें बताता रहा। अन्त में मैंने उससे कहा कि अगर मैं इतनी ज्यादा उम्र का न हो गया होता तो फिर से ज्ञान प्राप्त करना आरम्भ कर देता और जीवन के उज्ज्वल पक्ष को ही देखने का अभ्यास डालता; हालाँकि मैं सबसे अधिक प्रसन्न मनुष्यों में से हूँ, तो भी स्वीकार करता हूँ कि मेरी एक आकांक्षा है। मैं वास्तविक रंगमंच का निर्देशक होना चाहता हूँ, रंगी-बनी कठपुतलियों का नहीं; बल्कि जीवित स्त्रियों और पुरुषों के समूह का निर्देशक।

प्राध्यापक ने सोचते हुए कहा, 'अच्छा, तो आप चाहते हैं कि आप की कठपुतलियाँ जीवित हो उठें और सचमुच की अभिनेत्रियाँ बन जाएँ ?'

मैंने स्वीकार किया कि यही मेरी हार्दिक इच्छा है। अपने आसव के गिलासों को घुमा कर हम लोग पीने लगे।

जाने कैसे, कमरे में एक अजीब रोशनी भर उठी और उस नौजवान की आँखें भी चमक उठीं। उस दृश्य से मुझे पुरानी कहानियों की बात याद हो आई जिनके अनुसार हमेशा युवक रहनेवाले देवता, धरती पर आ कर मनुष्यों

से मिलते हैं। यह बात मैंने उससे कही तो वह मुस्कुरा दिया। मैं कसम खा कर उससे कह सकता था कि आप पुराने देवताओं में से ही कोई हैं। बहरहाल, उसने कहा कि मेरी इच्छा पूरी हो जायगी। अपना-अपना गिलास खत्म कर के हमने फिर एक बार गिलास घुमाये और पीने लगे। इसके बाद उसने मेरी तमाम कठपुतलियों को मेरे बक्से में भर दिया और बक्से को मेरी पीठ से बाँध दिया। वहाँ अकस्मात् एक चक्करदार तार का घेरा प्रकट हो गया, उसने मुझे उस घेरे में डाल दिया।

मुझे लगा कि मैं गिरता जा रहा हूँ—बराबर गिरता जा रहा हूँ। मैं वहाँ कमरे के फर्श पर पड़ा था। प्राध्यापक गायब हो चुका था।

बक्से में से मेरी तमाम कठपुतलियाँ निकल आईं। उन्होंने कहा कि हम सब बहुत बड़े कलाकार हैं और आप हमारे निर्देशक हैं। अगले खेल के लिए तमाम तैयारी हो गई। उन कलाकारों में से सभी, मुझ से और दर्शकों से बोलना चाहते थे।

नाचनेवाली महिला का कहना था कि अगर मैं एक ही पैर पर वहीं खड़ी रहूँगी तो यह इमारत ही ढह जायेगी, मेरी प्रतिभा महान् है। बेगम का पार्ट करनेवाली महिला की ज़िद थी कि चाहे स्टेज पर हो, या स्टेज के बाहर, मेरे

साथ हमेशा असली बेगम का-सा बर्ताव होना चाहिए। वह आदमी जिसे सिर्फ एक ही शब्द बोलना था, ऐसी हवा बाँध रहा था मानो वही प्रधान प्रेमी हो। नायक को तब तक कोई अभिनय करना स्वीकार नहीं था, जब तक उसे बराबर स्टेज पर रह कर प्रशंसा पाने का मौका न मिले। प्रधान अभिनेत्री सिर्फ लाल रोशनी में ही गाने को तैयार थी क्योंकि उसका कहना था कि मेरे चेहरे का रंग नीली रोशनी में अच्छा तहीं लगता। ऐसा लगा कि मेरे चारों ओर बर्रें भनभना उठी हैं। मेरा सिर चकरा गया, मेरी बात कोई सुनता ही न था। मुझे इस बात पर बड़ा अफसोस होने लगा कि ये सब बक्से में वापस क्यों नहीं लौट जातीं। मैंने उनसे यह बात कह भी दी। मैंने उन्हें बता दिया कि तुम सब केवल कठपुतलियाँ हो।

इस पर, उन सबों ने मेरे ऊपर बैठ कर मुझे मार डाला। मैंने अपने-आप को कमरे में बिस्तर पर पड़ा पाया। नहीं जान पाया कि मैं वहाँ कैसे पहुँच गया। मुझे यह भी न मालूम हुआ कि विज्ञान का प्राध्यापक कहाँ चला गया। चाँदनी से कमरा भर उठा। कठपुतलियों का बक्सा खुला पड़ा था और कठपुतलियाँ फर्श पर छितराई पड़ी थीं। अब वे सिर्फ लकड़ी की रंगी-बनी कठपुतलियाँ थीं। मैं बिस्तर से उछल पड़ा। कठपुतलियों ने आव देखा न ताव,

सब की सब बक्से में जाने को दौड़ पड़ीं । कुछ सिर के बल दौड़ीं और कुछ पैरों के बल । बक्से का ढक्कन बन्द कर के मैं उस के ऊपर बैठ गया ।

मैं कह उठा, 'अब तुम वहीं रहो । आगे कभी मैं यह इच्छा नहीं करूँगा कि तुम जीवित हो जाओ ।'

इस तरह, एक बार फिर मैं दुनिया के सब से प्रसन्न मनुष्यों में से हो गया । जीवित अभिनेताओं और अभिनेत्रियों का अभाव जो मुझे खटकता था, विज्ञान के प्राध्यापक ने उससे मुझे बचा लिया । मैं शाहंशाह की तरह प्रसन्न हो उठा । वहाँ बक्से पर बैठा-बैठा ही मैं सो गया ।

अगले दिन मैं दोपहर तक सोया रहा । जागने पर भी मैं बक्से पर बैठा था, मैं इस बात को जान कर खुश था कि मेरी आकांक्षा मूर्खतापूर्ण थी । मैंने प्राध्यापक के बारे में पता लगाया तो मालूम हुआ कि वह चला गया है ।

उसी समय से मैं सबसे प्रसन्न आदमियों में से हूँ । मैं स्टेज का निर्देशक तो हूँ, लेकिन मेरे अभिनेताओं में से कोई भी न असन्तुष्ट होता है और न हवा ही बांधता है । जो कुछ मैं चाहता हूँ, वे लोग वही करते हैं और इस तरह मुझे और जनता को प्रसन्न रखते हैं । जो भी खेल मुझे पसन्द होता है, मैं वही करता हूँ । मेरी पसन्द पर किसी को एतराज नहीं होता । मैं बहुत से पुराने खेल करता हूँ, वे अच्छे भी

होते हैं, और बच्चे उन्हें उसी तरह पसन्द करते हैं, जैसे कि तीस वर्ष पहले उनके माँ-बाप करते थे । मैं सन्तुष्ट हूँ, और आदमी को प्रसन्न रखने के लिए सन्तोष से बढ़ कर और क्या होगा ?

*

बदसूरत बतख

एक समय की बात है। गर्मियों के दिन थे। देहात की ओर के दृश्य बहुत सुन्दर थे। गेहूँ पक चुका था, ज्वार अभी कच्ची थी। चारा इकट्ठा कर के रख लिया गया था। अपनी लम्बी-लम्बी लाल टाँगों पर कवायद करता हुआ सारस मिश्री भाषा में कुछ कहता फिर रहा था।

खेतों और चरागाहों के चारों ओर घने जंगल थे और जंगलों के बीच में एक बड़ी-सी झील थी। हाँ, देहात की ओर सचमुच बड़ी सुन्दरता थी। एक पुरानी हवेली धूप की गर्माहट में नहाई खड़ी थी। उस हवेली के चारों ओर गहरी-गहरी नहरें थीं। दीवारों से ले कर पानी के किनारे तक चौड़ी-चौड़ी पत्तियों के पौधे उग आये थे। उनकी पत्तियाँ इतनी बड़ी-बड़ी थीं कि बच्चे उनकी आड़ में खड़े हो जाएँ तो दिखाई भी न दें।

जंगल के घने भाग के बीच यह स्थान बहुत ही निर्जीव था, इसलिए एक बतख ने वहाँ अपना घोंसला बना लिया था। वह अपने अण्डों पर बैठी हुई थी। लेकिन उस काम में उसे अधिक आनन्द नहीं आ रहा था। कारण यह था कि वह वहाँ बहुत समय से अकेली थी। दूसरी बतखों को उससे गपशप करने की अपेक्षा नहरों के पानी में तैरना अच्छा लग रहा था।

अन्त में अण्डे एक-एक करके चटखने लगे। उनमें से एक-एक कर के बच्चे सिर उठाने लगे। आखिरकार सभी सही-सलामत निकल आये। हरी पत्तियों के नीचे से वे झाँकने लगे। हरा रंग क्योंकि आँखों के लिए फायदेमन्द होता है, इसलिए माँ बतख ने उनके उस काम में कोई बाधा नहीं डाली।

बतख के बच्चे बोल उठे, 'कितनी बड़ी है दुनिया !' उनकी इस समय की दशा पहले की उस दशा से बिल्कुल भिन्न थी जब कि वे अण्डे की खोली में सिकुड़े-सिकुड़ाए बैठे थे। माँ ने कहा, 'क्या तुम समझते हो कि यही सारी दुनिया है ? अरे, दुनिया तो बगीचे के भी पार बहुत दूर तक है। मैं भी वहाँ कभी नहीं गई हूँ और तुम तो अभी यहीं हो।' उसने फिर कहा, 'अभी तुम सब कहाँ निकले हो। सबसे बड़ा अण्डा तो अभी रह ही गया है। न जाने यह कब तक
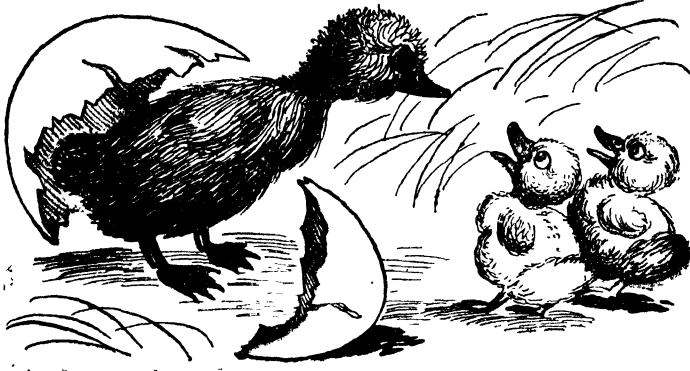
चलेगा । मैं तो इससे तंग आ गई हूँ ।' फिर वह बेचारी उस बड़े अण्डे पर बैठ गई ।

एक बूढ़ी बतख उससे मिलने चली आई थी, उसने पूछा, 'आज कैसी तबीयत है तुम्हारी ?' माँ बतख कह उठी, 'इस आखिरी अण्डे ने इतनी देर लगा दी है । अभी यह फूटा ही नहीं है । लेकिन औरों को देखो न, कैसी सुन्दर बतखें हैं । बिल्कुल अपने बाप पर गई हैं । और वह निगोड़ा मुझसे मिलने तक नहीं आया ।'

बूढ़ी बतख ने कहा, 'देखूँ तो जरा वह अण्डा जो अभी तक नहीं फूटा है । मेरे खयाल से तो यह तुर्की चिड़िया का अण्डा है । मैं भी एक बार इसी तरह फंस गई थी । उन बच्चों के साथ बड़ी परेशानी हुई । वे सब पानी से बहुत

डरते थे, उसमें जाते ही न थे। हाँ, तुर्की चिड़िया का अण्डा तो है ही यह। इसे छोड़ो, दूसरों को तैरना सिखाओ।'

माँ बतख ने कहा, 'मैं अभी कुछ समय इस पर और बैठूँगी। जैसे अब तक बैठी रही हूँ, वैसे ही बैठी रहूँगी, फिर फसल कटने का समय भी आ ही रहा है।'

'तुम्हारा काम है, तुम जानो!' कह कर बूढ़ी बतख पंख फड़फड़ा कर उड़ गई।

अन्त में बड़ा अण्डा चटखा। उसमें से निकलनेवाला बच्चा बहुत बड़ा तो था ही, साथ ही बदसूरत भी था। माँ बतख उस की ओर देखती ही रह गई। वह बोली, 'कैसा बड़ा हट्टा-कट्टा बच्चा है यह! और तो कोई भी ऐसा नहीं है। यह तुर्की चिड़िया का बच्चा तो नहीं लगता! जल्दी ही पता लग जायेगा। पानी में तो इसे जाना ही है, चाहे धक्का दे कर इसे भेजना पड़े।'

अगले दिन मौसम खुशगवार था। हरी-हरी पत्तियाँ धूप में चमक रही थीं। बतख का परिवार पानी पर पहुँच गया। छपाक के साथ माँ बतख पानी में कूद गई और बच्चों को बुलाने लगी। एक-एक कर के सभी बच्चे पानी में चले गये। पानी सिर पर आ गया, लेकिन वे फिर ऊपर उठ आये और खुशी से साथ-साथ तैरने लगे। उनकी

छोटी-छोटी टाँगें आरम्भ से हिल-डुल रही थीं, बदसूरत बड़ी बतख की भी ।

माँ बतख कह उठी, 'निश्चय ही यह तुर्की चिड़िया का बच्चा नहीं है । देखो, कैसी शान से अपनी टाँगें हिला रहा है और अपना सिर ऊँचा किये है ! यह मेरा ही बच्चा है, और पानी में तो अच्छा खासा खूबसूरत लग रहा है ।' फिर उसने बच्चों को पुकार कर कहा, 'आओ मेरे साथ चलो, हम लोग अब दुनिया में जाएँगे । मेरे पास-पास रहो, नहीं तो कोई तुम्हें कुचल देगा. . .और बिल्ली से होशियार रहना !'

वे सब बतखखाने में पहुँच गये । वहाँ बड़ा डरावना शोर मच रहा था । दो परिवार आपस में लड़ रहे थे । लड़ाई का कारण एक मछली थी, जिसे कि बिल्ली ले गई थी । माँ बतख ने कहा, 'बच्चो, यह हालत है दुनिया की !' और वह अपनी चोंच तेज करने लगी, क्योंकि उसे स्वयं मछली पसन्द थी । फिर उसने कहा, 'अब तुम सब पास-पास आ जाओ और वहाँ बैठी उस बूढ़ी बतख को सलाम करो । वह सब बतखों से श्रेष्ठ हैं, स्पेनी रक्त की है, इसीलिए इतनी शानदार दिखाई देती हैं । उसकी टाँगों पर लाल रोएँ हैं, वे अत्यन्त सुन्दर माने जाते हैं और उनकी श्रेष्ठता भी सबसे अधिक है । अपने पैरों को सिकोड़ो मत ।

अच्छे खानदान की बतख को अपने माँ-बाप की तरह ही टाँगें अलग-अलग रखनी चाहिएँ। देखो, इस तरह। हाँ, अब अपनी-अपनी गर्दन झुका कर सलाम करो।'

सब बच्चों ने वैसा ही किया। लेकिन उस अहाते की और बतखें उन्हें देख कर जोर से कह उठीं, 'देखो, देखो! एक झुण्ड और चला आ रहा है। पहले से ही यहाँ कुछ कम हैं क्या? और उसे तो देखो, कितना बदसूरत है! हम उसे अपने पास नहीं रहने देंगे।' एक बतख ने उड़ कर उस बदसूरत बतख के सिर पर चोंचें भी मारनी शुरू कर दीं।

माँ बतख ने कहा, 'उसे रहने दो, उसने किसी का कोई नुकसान नहीं किया है।'

'हाँ यह इतना बड़ा है और अजीब-सा दिखाई देता है। हम तो इसे जरूर चिढ़ायेंगे।'

जिस बूढ़ी बतख की टाँगों पर लाल रोएँ थे—उसने कहा, 'तुम्हारे और तो सभी बच्चे अच्छे हैं, सुन्दर भी हैं, लेकिन वह ही एक ऐसा क्यों है? लगता है कि उसका जन्म ठीक से नहीं हुआ। अब हो भी क्या सकता है, दोबारा तो उसे जन्म दिया नहीं जा सकता!'

माँ बतख ने कहा, 'यह तो असम्भव है, दादी! वह सुन्दर जरूर नहीं है, लेकिन है वह भी अच्छा बतख;

तैरता भी उसी तरह है जैसे कि और सब। मैं तो समझती हूँ कि समय पाकर वह भी ठीक हो जायेगा और छोटा दिखाई देने लगेगा। मुझे लगता है कि उसमें फर्क होने का कारण यही है कि वह अण्डे में बहुत अधिक समय तक रहा।' बोलते समय वह उस बच्चे की गरदन थपथपाती रही और उसके पंखों को संवारती रही। फिर उसने कहना शुरू किया, 'मैं तो समझती हूँ कि यह बहुत मजबूत निकलेगा। और फिर वह है भी नर! इसलिए ज्यादा फिक्र की बात नहीं है, वह अपना रास्ता खुद बना लेगा।'

बूढ़ी बतख ने कहा, 'ठीक है, दूसरे बच्चे सचमुच सुन्दर हैं। इसलिए आराम से यहाँ रहो। अगर तुम्हें मछली का सिर कहीं मिले, तो मुझे दे देना।'

इस तरह वे आराम से रहने लगे। बस एक वही बेचारा बदसूरत बतख, जो सबसे बाद में अण्डे से निकला था, मार खाता रहा और चिढ़ाया जाता रहा। हर कोई यही कहता कि यह तो बहुत ही बदसूरत है।

एक तुर्की चिड़िया भी अपने पैरों में काँटे लेकर दुनिया में पैदा हुई थी। वह अपने आप को बादशाह समझती थी। उसने अपने-आप को इस तरह फुला लिया मानो बादबानों के साथ कोई जहाज हो और उस बदसूरत बतख के पास पहुँची।

बतख बेचारा घबरा गया, उसे नहीं समझ पड़ा कि क्या करूँ, और जब कि सारा बतखखाना उसकी बदसूरती का मजाक बनाता था।

पहला दिन बीत गया, लेकिन हालत बिगड़ती ही गई। उसके बाद तो उस बेचारे बतख पर हर कोई हँसने लगा। यहाँ तक कि उसके भाई और बहनें भी उससे बहुत बुरा बर्ताव करने लगी, और बराबर कहने लगीं, 'अरे बदसूरत, अच्छा हो कि तुझे बिल्ली ले जाए।' और उसकी माँ भी कहती, 'अच्छा होता कि तू हमसे दूर रहता।'

नर बतख उसे मुँह बिराते और मादा बतख उस पर चोंच चलातीं। वह लड़की भी, जिस का काम बतखों को चुग्गा देने का था, उसे मारती। तंग आ कर वह बाढ़े पर चढ़ गया। झाड़ी में की छोटी चिड़ियाँ डर उठीं।

उसने सोचा, यह सब इसी लिए है न कि मैं बदसूरत हूँ। फिर वह आँखें बन्द किये उड़ता ही चला गया।

बहुत दूर तक उड़ने के बाद वह एक दलदली जगह पर पहुँचा। वहाँ कुछ जंगली बतख पहले से रहते थे। वह रात भर वहीं आराम से सोया, खूब थका तो था ही। सुबह को जंगली बतखों ने अपने नये साथी को देखा। उन्होंने पूछा, 'कौन हो तुम ?' छोटे बतख ने चारों ओर घूम कर उन सब को नम्रता से प्रणाम किया।

जंगली बतखों ने कहा—'हो तुम सचमुच बहुत ही बदसूरत; लेकिन अगर तुम हमारे खान्दान में शादी न करो, तो हमें तुम्हारी बदसूरती से कोई वास्ता न होगा।'

उस बेचारे छोटे बतख को तो कभी शादी का खयाल तक नहीं आता था। उसकी प्रार्थना तो बस इतनी थी कि उसे वहाँ नरकुलों के बीच रह कर तालाब का पानी पीने दिया जाये। वह वहाँ दो दिन तक रहा। तीसरे दिन वहाँ दो छोटे बतख और आ पहुँचे, वे हंस की जाति के थे और थोड़े ही समय पहले अण्डों से निकल कर आये थे, इसलिए ढीठ भी कम न थे।

वे बोलो, 'सुनो जी! तुम इतने बदसूरत हो कि हम तुम्हें खूब चाहते हैं। तुम हमारे साथ उड़ चलो और कुली चिड़िया का काम करो। थोड़ी ही दूर पर एक और दलदल है, उसमें कुछ बहुत ही सुन्दर हंसनियाँ रहती हैं। तुम बदसूरत हो, वहाँ तुम्हारे भाग्य जग जाएँगे।'

इतने में बन्दूक छूटने का धड़ाका हुआ और दो जंगली हंस नरकुलों के बीच पानी में जा गिरे, उनके खून से पानी रंग गया। दोबारा फिर बन्दूक छूटने की आवाज हुई, नरकुलों में से झुण्ड के झुण्ड हंस ऊपर की ओर उड़ चले। एक और हंस लहूलुहान हो कर पानी में जा गिरा।

शिकारियों का एक शानदार दल उधर आया हुआ था। सब तरफ झाड़ियों में शिकारी छिपे बैठे थे। बहुत से शिकारी उन पेड़ों पर भी छिपे बैठे थे, जिनकी शाखाएँ कछार पर फैली हुई थी। कुहरे जैसा नीली धुन्ध पेड़ों के बीच से उठी और पानी के ऊपर फैल कर गायब हो गयी। शिकारी कुत्ते दलदल के बीच छपछप कर रहे थे। चारों ओर नरकुलों और दलदली झाड़ियों में वे दौड़ रहे थे और उस बेचारे बदसूरत बतख को डरा रहे थे। एक कुत्ता उसके बहुत पास आ गया। उसके मुँह में जीभ लपलपा रही थी और उसकी आँखें भयानक रूप से चमक रही थीं। बदसूरत बतख ने डर के मारे अपनी गर्दन को मोड़ कर पंखों में छिपा लेना चाहा। कुत्ते ने उसे देख कर अपने जबड़े खोले और सफेद मजबूत दाँत दिखाये। लेकिन वह छपछप करता हुआ निकल गया, बतख पर उसने हमला नहीं किया।

बतख ने सोचा, 'मुझे कृतज्ञ तो होना ही चाहिए, लेकिन मैं शायद इतना ज्यादा बदसूरत हूँ कि कुत्ता भी मुझे नहीं खाना चाहता।'

अब वह चुपचाप पड़ रहा। नरकुलों में गोलियाँ अब भी छूट रही थीं। देर तक उसी तरह का शोर होता रहा। बेचारे बतख को हिलने-डुलने में भी डर लग रहा था। कई घंटे तक उसी तरह रहने के बाद उसने इधर-उधर देखने की

हिम्मत की। इसके बाद वह बहुत तेजी के साथ कछार से भाग गया।

खेतों और चरागाहों के ऊपर वह भागा चला जा रहा था। हवा इतनी तेज थी कि उसे आगे की ओर उड़ने में भी कठिनाई हो रही थी। शाम होने तक वह एक कुटिया पर पहुँच गया। कुटिया ऐसी थी मानो अब गिरी तब गिरी! हवा का वेग बहुत अधिक था। उसे सहन करने के लिए बेचारे बतख को अपना शरीर अपनी दुम पर तौलना पड़ रहा था। उसने देखा कि कुटिया के किवाड़ की चूल टूटी हुई है, जिससे वह एक ओर को टेढ़ा हो गया है। उसने सोचा इसकी दरार में से हो कर भीतर पहुँचा जा सकता है।

इस कुटिया में एक बुढ़िया अपनी बिल्ली और मुर्गी के साथ रहती थी। बिल्ली नर थी, बिलाव समझिये। तो वह बिलाव अपनी पीठ को मेहराब की तरह उभार कर घुरघुराता था और अगर उसे कोई गलत ढंग से थपथपाए तो आँखों से चिनगारियाँ भी छोड़ने लगता था। मुर्गी का नाम रखा गया था 'बौनी कोयल' क्योंकि उसकी टाँगें बहुत छोटी थीं। लेकिन वह अंडे बहुत सुन्दर देती थी और बूढ़ी औरत उसे इतना प्यार करती थी, मानो वह उसकी बच्ची ही हो।

अगले दिन सुबह को सबकी नजर इस नये आगन्तुक बतख पर गई। बिल्ली और मुर्गी अपनी-अपनी बोली बोलने लगीं। बुढ़िया कह उठी, 'क्या माजरा है?' उसे आँखों से ठीक दिखाई नहीं देता था, इसलिए उसने समझा कि यह मोटी-सी बतख अपना रास्ता भूल गई है। बुढ़िया ने सोचा, 'इससे तो बहुत अच्छे अंडे मिलेंगे।' इसलिए उसने बतख को पकड़ कर रख लिया। तीन हफ्ते तक देखने पर भी उसने कोई अंडा न दिया।

बिलाव अपने-आप को उस मकान का मालिक समझता था और मुर्गी अपने-आप को मालकिन। वे आपस में कहते—'बस हम हैं और यह दुनिया है।' उन का खयाल था कि दुनिया का आधा अच्छा हिस्सा हमीं से मिल कर बना है। बतख का कहना था कि ऐसी बात नहीं है। इस पर मुर्गी बोली—'तुम अंडे दे सकते हो क्या?' बतख ने कहा, 'नहीं।' मुर्गी बोली, 'तो बन्द करो अपनी बकवास।'

फिर बिलाव ने बतख से पूछा, 'क्या तुम अपनी पीठ को उभार कर घुरघुरा सकते हो?' बतख ने कहा, 'नहीं।' बिलाव कह उठा, 'जब बड़े आदमी बातचीत करते हों, तो तुम्हें उनके बीच अपनी राय नहीं देनी चाहिए।'

बेचारे बतख को अकेला ही रहना पड़ा। उसके मन में ग्लानि हो रही थी। बाहर की खुली धूप और साफ हवा

का विचार आन पर उसे तैरने की इच्छा हो आई। उसने मुर्गी से यह बात कही।

मुर्गी बोली, 'क्या बात है! अरे, तुम्हें ज्यादा कुछ थोड़े ही करना है, बस या तो अंडे देना सीख जाओ या घुरघुराना। फिर उन सब वाहियात बातों को भूल जाओगे।'

बतख ने कहा, 'लेकिन तैरने में बड़ा ही मजा रहता है। खास तौर से तब जब कि पानी में नीचे की ओर जाओ।'

मुर्गी ने कहा, 'अरे, यह भी कोई मजा है। पागल तो नहीं हो गये हो? मेरी बात खैर जाने दो। बिलाव और मालकिन से ही पूछो, क्या वह तैरना और पानी में नीचे की ओर जाना पसन्द करेगी?'

बतख ने कहा, 'तुम लोग मेरी बात क्या समझो!'

मुर्गी बोल उठी, 'अच्छा, तो हमलोग अब तुम्हारी बात भी नहीं समझ सकते! तुम तो जैसे——बिलाव से, हमारी मालकिन से और मुझसे——सभी से ज्यादा जानते हो। छोड़ो अपनी वाहियात बातों को। तुम्हारे साथ जो उपकार किया गया है, उसका अहसान मानो। रहने के लिए तुम्हें इतना अच्छा कमरा मिल गया है। और फिर तुम्हें ऐसे लोगों का साथ मिला है, जिनसे तुम बहुत कुछ सीख सकते हो। लेकिन तुम तो इतने मूर्ख हो कि तुम्हारे साथ बात भी करना मुसीबत है।

बतख ने कहा, 'मुझे तो लगता है कि मेरे लिए यहाँ से चले जाना ही अच्छा होगा।'

'अच्छा, तो जाओ!' मुर्गी कह उठी।

बतख वहाँ से चल दिया। वह पानी पर तैरने लगा, और उसमें डुबकियाँ लगाने लगा। लेकिन उसकी बदसूरती के कारण जल के और-और जीव उसे चिढ़ाने लगे।

एक दिन शाम को जब चमकदार रंगों के बीच सूरज डूब रहा था, जंगल की ओर से सुन्दर चिड़ियों का एक झुंड उड़ता हुआ आया। बतख ने इतनी सुन्दर चिड़ियाँ कभी नहीं देखी थी। उनके पंख सफेदी से झकझक कर रहे थे, और उनकी गर्दनें लम्बी और मुलायम थीं। वे हंस थे। ठंडे प्रदेशों की ओर से उड़ कर गर्म प्रदेशों की ओर जा रहे थे। अपने सफेद पंखों को फैलाए वे सुन्दर आवाज कर रहे थे। वे इतने ऊँचे पर उड़ रहे थे कि बतख को बड़ा अजीब-सा लगा।

पानी की भंवर की तरह वह चक्कर खाने लगा। फिर उसने हंसों को देखते रहने के लिए अपनी गर्दन फैला दी, और ऐसी जोर की चीख मारी कि वह खुद ही डर उठा। तो भी हंसों का ध्यान उसे बना रहा—कितने शानदार पक्षी हैं ये! जब हंस उसकी दृष्टि से ओझल हो गये तो उसने पानी में डुबकी मारी। फिर जब वह उठ

कर सतह पर आया तो उसे कुछ ऐसा अजीब-सा लगा कि वह अपनी सुधबुध खो बैठा। बतख को न तो यह मालूम था कि वे पक्षी क्या कहलाते हैं, और न उसे यही मालूम था कि वे कहाँ जा रहे हैं, तो भी वह उन्हें इतना ज्यादा प्यार करने लगा था कि उससे पहले किसी भी चीज को उसने इतना प्यार नहीं किया था। उसमें ईर्ष्या का भाव बिल्कुल नहीं था, क्योंकि, 'मैं इतना सुन्दर हो जाऊँ', ऐसा तो उसने कभी सोचा ही न था।

अब जाड़ा तेज हो आया, बहुत ही तेज। पानी को जमने से बचाने के लिए बेचारा बतख तैरता हुआ चक्कर काटने लगा। लेकिन लाख कोशिश करने पर भी, उसके तैरने की जगह तंग होती जा रही थी। बर्फ का जमाव पास आता गया और बतख टाँगें मार-मार कर उससे छुटकारा पाने की कोशिश करता रहा। अन्त में हार कर वह बर्फ के बीच चुपचाप पड़ रहा। अगले दिन सुबह को एक किसान उधर से गुजरा। अपने जूते से बर्फ को कुरेद कर वह बतख को उठा कर अपने घर ले गया।

बतख जल्दी ही होश में आ गया। घर के बच्चे उसके साथ खेलने लगे। लेकिन बेचारे बतख ने समझा कि ये मुझे तंग कर रहे हैं, इसलिए वह डर कर सीधा दूध की कढ़ाही में जा गिरा। कमरे भर में दूध फैल गया।

घर की मालकिन चीख कर उसके पीछे चिमटा ले दौड़ी। बच्चे भी उसे पकड़ने के लिए दौड़-भाग करने लगे। वे हँस रहे थे और चीख रहे थे। अच्छा तो यह हुआ कि दरवाजा खुला था। वह बाहर की ओर उड़ गया। जिन झाड़ियों पर अभी-अभी बर्फ गिरी थी, उनमें वह पड़ रहा। उसके होश उड़ रहे थे।

जाड़े भर उस बेचारे को जितनी मुसीबतें झेलनी पड़ीं, उन सब का वर्णन बड़ा ही दुःखद होगा। एक दिन जब वह नरकुलों के बीच दलदल में पड़ा था, तो सूरज फिर गर्म हो उठा और 'लवा' पक्षी खुशी से गा-गा कर वसन्त के आने की सूचना देने लगे।

बतख ने अपने पंख फैलाये। अब वे पहले से ज्यादा मजबूत हो गये थे। उनके बल पर अब वह बड़ी तेजी से उड़ने लगा। पलक मारते ही वह एक बड़े से बगीचे में जा पहुँचा। वहाँ अनार के पेड़ लहलहा रहे थे और बकाइन के फूल अपनी मीठी गंध चारों ओर फैला रहे थे। उनकी हरी-हरी शाखाएँ नहर के पानी पर झुकी हुई थीं। हर चीज में ताजगी और वसन्त की सुन्दरता थी।

पास की झाड़ियों में से तीन सुन्दर हंस निकल आये। अपने सफेद पंखों को हिला-हिला कर वे बड़ी शान से तैरने लगे। बतख उन्हें पहचान गया, और उसे वेदना होने लगी।

उसने सोचा, 'इन भले पक्षियों के पास मुझे जाना चाहिए। हद से हद यही होगा कि मुझ जैसा बदसूरत पक्षी उनके पास पहुँचे, इसके लिए वे मुझे मार डालें !

पानी पर तैर कर वह उन सुन्दर पक्षियों की ओर गया। इसे देख कर वे पक्षी भी इससे मिलने को बढ़ आये।

बेचारा बदसूरत बतख कह उठा, 'मार डालो मुझे।' और मौत का सामना करने के लिए उसने अपना सिर झुका दिया। लेकिन देखता क्या है कि नीचे पानी में उसकी जो छाया पड़ रही है, वह किसी बदसूरत चिड़िया की नहीं, एक सुन्दर हंस की है—वह खुद सुन्दर हंस है।

★

हंस के अण्डे से जन्म ले कर भी, अगर बतखखाने में तुम्हारा पालन हो, तो इसमें तुम्हारा क्या दोष ! इस पक्षी ने सोचा कि मैंने जो कष्ट उठाए हैं, उन्हीं का यह सुन्दर परिणाम मुझे मिला है । दूसरे हंस इसके पास आ कर अपनी चोंचों से इसे थपथपाने लगे । अब इसकी खुशी का क्या कहना ! बाग में कुछ बच्चे खेल रहे थे । इसे देख कर उनमें से सबसे छोटा बच्चा कह उठा, 'लो, एक और नया हंस आ गया ।' दूसरे बच्चों ने भी कहा, 'हाँ, एक नया हंस आ गया !' वे सब ताली बजा-बजा कर नाचने लगे । फिर वे अपने माँ-बाप के पास से रोटी और चाकलेट ले आये और उन्हें पानी पर फेंक-फेंक कर कहने लगे, 'देखो तो, यह नया हंस कितना सुन्दर है !' बूढ़े हंसों ने उसके आगे सिर झुकाये । बेचारे छोटे हंस को बड़ा अजीब-सा लगा, उसने अपना सिर पंखों में छिपा लिया । खुशी के मारे उसकी समझ में न आया कि क्या करे ! तो भी उसे अभिमान नहीं हुआ । शुद्ध हृदय के व्यक्ति को अभिमान कहाँ ? उसे अभी वह बात भूली नहीं थी कि किस तरह हर कोई उसे दुतकारता और तंग करता था, और अब हर कोई यही कह रहा था कि यह सब पक्षियों में ज्यादा सुन्दर है ।

बकाइन के फूलों के पेड़ पानी में उसके आगे अपनी डालें झुकाने लगे । सूरज भी अब खूब गरमाहट के साथ

चमकने लगा। अपने पंखों को फड़फड़ा कर उसने खुशी में अपनी कोमल गर्दन उठाई, और कह उठा, 'जब मैं अभागा बदसूरत बतख था, तो इस खुशी की कल्पना भी मुझे नहीं हुई थी।'